कल्प-वृक्ष (एडवांस कोर्स)

(सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए)

विषय सूची:-	
1.	चित्र का परिचय
2.	वृक्ष की जड़ों का हिस्सा ऊपर की ओर और शाखायें नीचे की ओर
3.	नौ धर्मों से कनेक्टेड नौ गोत्रों वाले ब्राह्मण
4.	परमपिता शिव इस सृष्टि पर आकर नए सृष्टि रूपी वृक्ष की कलम लगा रहे हैं
5.	वृक्ष की मुख्य जड़ लोप हुई क्यों दिखाई गई है
6.	1. आदि सनातन देवी-देवता धर्म
	2. क्षत्रिय धर्म
	3. इस्लाम धर्म
	4. बौद्ध धर्म
	5. क्रिश्चियन धर्म
	6. संन्यास धर्म
	7. मुस्लिम धर्म
	8. सिक्ख धर्म
	9. आर्यसमाज (अर्धनास्तिक)
	10. नास्तिक (अधर्म)
7.	वृक्ष के तीन हिस्से
8.	रावण-राज्य की शुरूआत
9.	सतयुगी सेकेंड नारायण द्वारा द्वापुर आदि से ही दृष्टि-वृत्ति का करप्शन
10.	राइट साइड की शाखाओं वाले धर्म भी भारत के विरोधी अर्थात् विधर्मी बन जाते हैं
11.	लेफ्ट और राइट साइड के धर्म भारतीय परम्पराओं के विपरीत क्यों हुए?
12.	ब्रह्मा माता बच्चों के अधीन होकर रही
13.	सिक्ख धर्म की विशेष आत्मा माता के रूप में फाउंडर

14.	कुखवंशावली और मुखवंशावली ब्राह्मण
15.	सतयुगी फर्स्ट नं. ना. की पूजा होती है, बाद वाले 7 ना. की नहीं
16.	धर्मस्थापना और राज्य स्थापना
17.	पक्की दे.दे.धर्म की बीजरूप आत्माएँ द्वापुर से भी कन्वर्ट नहीं होती
18.	ऊँच-ते-ऊँच स्वर्गीय आदि नारायण में ऊँच-ते-ऊँच शिव परमपिता की प्रवेशता
19.	नास्तिक धर्म की आधारमूर्त आत्मा नारायण- पद प्राप्त नहीं कर पाती
20.	सद्गति भी तीन प्रकार की
21.	अहिल्या पत्थर बुद्धि बन गई
22.	गणिकाएँ, वेश्याएँ, कुब्जाएँ
23.	यादव, कौरव, पाण्डव
24.	पाण्डव सम्प्रदाय
	युधिष्ठिर
	भीम
	अर्जुन
	नकुल
	सहदेव
25.	रावण कौन?
26.	रावण के सिर पर गधा क्यों दिखाया गया है?
27.	लेफ्टिस्ट धर्मों के बीज के बीज ही रावण सम्प्रदाय
28.	सेकेंड नं. ना. इस्लाम धर्म का आधार है
29.	रावण सम्प्रदाय के द्वारा ढेर-के-ढेर चित्र बनाए गए
30.	ब्रह्मा को ऊपर खड़ा हुआ दिखाया है
31.	दाईं ओर ऊपर, पीपल के पत्ते पर कृष्ण
32.	बाईं ओर ऊपर कमल फूल
33.	दो यादव रूपी बिल्ले आपस में लड़े मक्खन बीच में तीसरा भारत का बड़ा बंदर खा गया
34.	योगबल से विश्व की बादशाही विश्वनाथ शंकर को मिलती है

34.	सब आत्माएँ परमधाम वापिस जा रही हैं
35.	माला
36.	रूद्रमाला और विजयमाला
37.	108 श्रेष्ठ आत्माओं की माला
38.	एडवांस पार्टी में 3 प्रकार की आत्माएँ
39.	अष्टदेवों में दूसरे नं. का मणका कौन?
40.	फुटकर प्वॉइंट्स

चित्र का परिचय

साक्षात्कार के आधार पर बनाए गए 4 चित्रों में से यह 30x40 इंच का सृष्टिवृक्ष का चित्र है। यह भी पुराने-से-पुराने चित्रों में से एक है। त्रिमूर्ति, झाड़, गोला के फोल्डर्स ब्रह्मा बाबा ने पहले-2 सन् 1960-61 में तैयार कराये थे। 'सच्ची गीता सार' पुस्तक में झाड़ की पहली बार थोड़ी विस्तार में एडवांस समझानी में दी गई थी। ● "बाप (शिव) कल्प-2 आकर कल्पवृक्ष की नॉलेज देते हैं; क्योंकि खुद बीजरूप (आत्माओं का परमपिता) है। सत् है, चैतन्य है। इसलिए (सृष्टि) वृक्ष का सारा राज़ समझाते हैं।" (मु. 17.11.<u>68</u> पृ.2 मध्य) ●"ज्ञान में तो सिर्फ बीज (रूप बाप) को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड़ (बुद्धि में) आ जाता है।"(मु. 29.9.77 पृ.2 मध्यांत) गीता में भी इसके संदर्भ में कुछ श्लोक आए हैं-

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ 2/17

जिस मनुष्य सृष्टि के बीज-रूप आदम या आदिदेव शंकर के द्वारा यह सम्पूर्ण विश्व विस्तार को प्राप्त हुआ है, उसको तो अविनाशी जान। इस अव्यय पुरुष शंकर का विनाश करने के लिए कोई भी समर्थ नहीं है।

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः॥ 9/4

मेरे अति सूक्ष्म होने से, प्रगट न होने वाले निराकारी शिव ज्योतिर्बिंदु की विस्तारित बीजरूप साकार लिंगमूर्ति शंकर के द्वारा वृक्ष की भाँति यह सारा जगत् सूक्ष्म बीज शिव+शंकर से विस्तृत हुआ है। अतः सभी प्राणी मुझ अव्यक्त बीजरूप में स्थित हैं; किन्तु मैं उनमें स्थित नहीं हूँ। अर्थात् सर्वव्यापी नहीं हूँ। 'नाहं तेषु ते मयि' (गीता 7/12)

एडवांस नॉलेज के आधार पर इसमें जड़ों के साथ बीज भी ऊपर की ओर एड हुए माने गये हैं। ये हैं जड़ों को भी जन्म देने वाली बीजरूप आत्माएँ जो यज्ञ के आदि (सन् 1936-37) ॐ मण्डली में भी राम बाप (साकार

बीज) के साथ थीं जो अब ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के बाद फिर दुबारा ब्राह्मण जन्म लेकर लास्ट सो फास्ट जाकर वो ही श्रेष्ठ पुरुषार्थी आत्माएँ संगठन रूपी मालाओं के मणके बन जाती हैं।

वृक्ष की जड़ों का हिस्सा ऊपर की ओर और शाखाएँ नीचे की ओर

यहाँ हम देखते हैं उल्टे वृक्ष को सीधा करके दिखाया गया है। वास्तव में इसके बीजों से निकली जड़ें ऊपर की ओर, शाखाएँ नीचे की ओर हैं। नीचे की ओर दिखाई गई दायीं ओर बाई ओर की विधर्मी शाखाएँ पतनोन्मुखी हैं। गीता में भी आया है-

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ 15/1

मनुष्य सृष्टि के बीजरूप आदिदेव महादेव/आदम से उत्पन्न ब्राह्मण धर्म की ऊपर जाने वाली जड़ों वाले, अधोमुखी ब्रह्मा की पतनोन्मुखी अनेकानेक धर्मों की शाखाओं वाले तथा (कामनाकर्ता) वेदादि जिसके पत्ते हैं, ऐसे चिरकाल तक स्थित रहने वाले सृष्टि रूपी अश्वत्थ वृक्ष को ऋषियों ने अविनाशी बताया है। जो उसे जानता है, वह वेदों का ज्ञाता है।

● "बीज के साथ-2 वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त (और बीजरूप उद्धारमूर्त) श्रेष्ठ आत्माएँ हो।" (अ.वा. 12.1.82 पृ.233 अंत) ●"ब्राह्मण आत्माएँ आदि देव की आदि रचना हो। इसलिए कल्प वृक्ष में (साक्षात् ब्रह्मा-पुत्र) ब्राह्मण फाउंडेशन अर्थात् जड़ों में दिखाए गए हैं। अपना स्थान देखा है ना? तो वृक्ष में आप आदि रचना बीज (रूप पितरों) के समीप जड़ में दिखाए गए हो। इसलिए डायरैक्ट (बाप शिव & बाबा आदम की) रचना हो।" (अ.वा. 8.4.92 पृ.181 आदि)

मानवीय धर्मपिताएँ जिन सिद्धार्थ या जीसिस जैसों में प्रवेश करते हैं वे हो गये आधारमूर्त जड़ें और जड़ों को जन्म देने वाले हो गये बीजरूप रुद्राक्ष नाम की आत्माएँ। मूल बीज है बाप आदिदेव महादेव/आदम और आधारमूर्त हैं रचना। बीजरूप आत्माएँ रुद्रमाला के रुद्राक्ष रूप मणके हैं। झाड़ में कोई लेफ्ट साइड के धर्मों वाले विदेशी मणके, कोई राइट साइड के स्वदेशी धर्म के मणके और बीच तने में कोई देवी-देवता सनातन धर्म के पक्के बीज भी हैं। ऐसे नहीं कि बीज रूप रुद्रमाला में व आधारमूर्त माला में सारे ही विधर्मी हैं, नहीं, विदेशी भी हैं। तने में पक्के स्वदेशी भी हैं। यानी दुनिया के हर धर्म के बीज रूप रुद्रमाला में समाये हुये हैं। यह तीसरी बेहद की न्यूट्रल आत्माओं वाली दुनिया है। ये जो बीजरूप आत्माएँ हैं, ये बड़ी सशक्त और जटिल आत्माएँ हैं। स्वभाव-संस्कार की भी बड़ी जटिल हैं। नं.वार जड़ों पर दिखाई जाने वाली आधारमूर्त आत्माएँ भी नारायण वाली आत्माएँ हैं, जो नं.वार पीढ़ी-दर-पीढ़ी कम जन्म लेती हैं। बीज की रचना है जड़ें अर्थात् आधारमूर्त आत्माएँ और उनकी बीजरूप आत्माएँ ऊर्ध्वगामी बनने वाली हैं; क्योंकि बीज पहले अपने को खाक में मिलाता है, जो अव्यक्त बापदादा भी

बोलते हैं –“राख कौन बनते हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से, लाखों में से एक कौन निकलते हैं, वह भी देखेंगे।”(अ.वा. 23.9.73 पृ.161 आदि) राख बनना माने अपना पूरा देहाभिमान भस्म करना। जिनके लिए गीता में ये कहा गया है-

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ 7/3

हज़ारों पुरुषार्थी मनुष्यों में कोई एक आत्मज्ञान रूपी सिद्धि के लिए यत्न करता है और यत्न करने वाले अनेक सिद्धों में भी कोई (कपिल मुनि) ही मुझे यथार्थ रीति जान पाता है।✖ “नर सहस्त्र कोटिन में कोई” (रामायण) ✖ “यह पढ़ाई कोटों में कोऊ ही पढ़ेंगे।” (मु. 20.4.70 पृ.3 मध्य)

जड़ों से पहले-2 बीज होते हैं। यज्ञ के आदि ओममण्डली में भी ये बीजरूप आत्माएँ पहले-2 पार्ट बजाने वाली थीं। जो आदि में थीं वो ही अब अंत की एडवांस पार्टी के रूप में फिर से लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थी आत्माओं के रूप में प्रत्यक्ष होती हैं। बीज अपने को मिट्टी में मिलाता है जैसे कि गायन है कि ‘दाना खाक में मिलकर गुलेगुलज़ार होता है।’ बीज अपने को खाक में न मिलाये तो गुलशन अर्थात् बगीचा तैयार नहीं हो सकता। अव्वल नं. दाना माने कौन-सा दाना? सारी मनुष्य सृष्टि का पहला दाना या दूसरे, तीसरे आदि-2 दाने? पहला दाना। राम वाली आत्मा कलियुगांत के आखरी जन्म में जा करके सन् 1936 में अति विकारी दुनिया के संग में आते-2 अपने को कामाग्नि की खाक बना देती है और उसी से फिर ज्ञान-योगाग्नि की नई दुनिया पैदा होती है। सृष्टि रूप चेतन बड़ का बेहद का बीज है, जब बोया जाता है तो देहभान की मिट्टी में मिल जाता है और उससे कितना बड़ा वैराइटी धर्मों का वृक्ष खड़ा कर देता है।

9 धर्मों से कनेक्टेड 9 गोत्रों वाले ब्राह्मणों की मानसी सृष्टिः-

यहाँ कल्पवृक्ष के चार भाग हैं- सतयुग, त्रेता, द्वापर, और चौथा कलियुग / पाँचवाँ भाग जड़ों और बीजों के साथ पुरुषोत्तम संगमयुग दिखाया गया है, जहाँ हर धर्म से चुनी हुई आत्माओं का बीजारोपण होता है, हर धर्म का फाउंडेशन डाला जाता है, जो अभी डाला जा रहा है। हर प्रकार के धर्म का फाउंडेशन पड़ने के साथ-2 देवी-देवता धर्म का फाउंडेशन डालने वाला परमपिता+परमात्मा भी इसी संगमयुग में आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा पार्ट बजाता है। यहाँ जो मात-पिता के रूप में चित्र दिए गए हैं, वहाँ उन्हीं प्रजापिता और ब्रह्मा को समझना चाहिए। अलग-2 धर्मों में इनके पर्यायवाची नाम ‘आदम-हव्वा’, ‘एडम-ईव’, ‘आदिनाथ-आदिनाथिनी’, ‘आदिदेव-आदिदेवी’ के नाम से पुकारे गए हैं। सत्य सनातन धर्म के अलावा अन्य धर्मों का फाउंडेशन देहधारी धर्मपिताओं द्वारा डाला जाता है। आदि कालीन ब्राह्मण भी मनुष्य ही हैं, इसलिए भारतीय परम्परा में ब्राह्मणों के 9 गोत्र माने गए हैं। 9 धर्मों से कनेक्टेड 9 गोत्रों वाले ब्राह्मण ही यहाँ जड़ों पर बैठे दिखाए गए हैं, जिनके बीज भी 9 प्रकार के

हैं। ये हर धर्म के अलग-2 बीज हैं, बीज में ज्यादा शक्ति होती है। 9 रत्न तो अपने धर्मों की नं.वार मुखिया बीजरूप आत्माएँ हैं, 108 की माला में 12-12 के 9 ग्रुप्स की मुखिया हैं और एक दूसरे से कम वैल्यू वाले और 84 जन्म लेने वाली आत्माएँ हैं। इसलिए (ये) 9 बीज ही बेहद के 9 रत्न के रूप में गाए जाते हैं, जो जीते-जी मरकर राख बनते हैं अर्थात् अपने को खाक में मिलाते हैं। राख बनकर भी ईश्वरीय रूद्र ज्ञानयज्ञ की सेवा - कार्य को सम्पन्न रूप देते हैं। ये नम्बरवार आदि (पंचममुखी) ब्रह्मा की औलाद हैं, जिनसे सारी सृष्टि का विस्तार होता है। ये स्वयं भी परमपिता शिव बाप से नम्बरवार प्राप्ति करते हैं और अपने फॉलोअर्स को भी प्राप्ति कराने के निमित्त बनते हैं; लेकिन यहाँ जड़ों के अग्रभाग पर दस धर्मों की दस आधारमूर्त ब्राह्मण आत्माएँ और उनकी दस बीजरूप आत्माएँ दिखाई गई हैं। वास्तव में उनमें से एक नास्तिक धर्म की सबसे छोटी टेढ़ी जड़ और इसका बीज, धर्म के नाम पर टोटल अधर्म ही है। वास्तव में ब्राह्मण तो है ही नहीं; क्योंकि ब्रह्मा बाप से कैसी भी राजाई की प्राप्ति ही नहीं करता। सिर्फ हद या बेहद के बॉम्ब बनाकर डिस्ट्रक्शन ही करता है, ईश्वरीय कार्य में रचनात्मक सहयोग देता ही नहीं। इसलिए वो ब्राह्मण की लिस्ट में न होने से नम्बरवार भी हैं नहीं। 9 रत्न में भी नहीं गिना जा सकता।

परमपिता शिव इस सृष्टि पर आकर नए सृष्टि रूपी वृक्ष की कलम लगा रहे हैं

वृक्ष में यह ऊपर का हिस्सा जो वृक्ष का अन्तिम हिस्सा है, उसको काटकर वृक्ष में नीचे कलम के रूप में लगाया हुए दिखाया गया है। ●"पुराने झाड़ को रिजुबिनेट करना है। नया सैम्पलिग लगाना है। अभी हम (सब ब्राह्मण परमपिता की रहबरी में) देवी-देवता सनातन धर्म का कलम लगाय रहे हैं।" (मु. 5.2.68 पृ.3 आदि) "जब यह सैर कर लौटे तो नए वृक्ष की कलम को देखा। कलम में कौन थे? आप सभी अपने को कलम समझते हो? वृक्ष का (उद्धारमूर्त या) आधार(मूर्त) समझते हो? जब पुराने (कलियुगी झूठखंड के) वृक्ष को बीमारी लग गई, जड़-जड़ीभूत हो गया तो अब नया (सत्ययुगी) वृक्ष-आरोपण आप (उद्धारमूर्त और) आधार मूर्तियों द्वारा ही होगा। ब्राह्मण हैं ही नए वृक्ष की जड़ें अर्थात् फाउंडेशन।" (अ.वा. 19.10.75 पृ.201 अंत)

कलम का मतलब है कि पुराने कलियुगी सृष्टि रूपी वृक्ष में से हर धर्म की कुछ विशेष नं.वार स्वर्गीय आत्माएँ चुनी जाती हैं, जो ब्राह्मण धर्म में आरोपण कर दी जाती हैं अर्थात् परमपिता शिव उनको खींचता है और वो नं.वार 9 कुरियों वाले ब्राह्मण धर्म में आ जाती हैं। जो आत्माएँ नं.वार आने वाले दूसरे-2 धर्मों से कन्वर्ट होकर ब्राह्मण धर्म में आईं, तो निश्चित है कि वो एक जैसी तो हो नहीं सकतीं। इस कारण उन आत्माओं के यहाँ जड़ों के भाग में मुख्य 3 ग्रुप दिखाए गए हैं- लेफ्ट साइड की विदेशी जड़ें, राइट साइड की भारतीय जड़ें और बीच की प्राय: लोप हुई जड़ जिस पर सृष्टि रूपी वृक्ष के मुखिया/मात-पिता बैठे हुए दिखाए गए हैं।

पहला ग्रुप है देवी-देवता सनातन धर्म का पक्का जिनके मुखिया के रूप में सृष्टि वृक्ष के नीचे "जगतं पितरं बन्दे.." मात-पिता ब्रह्मा-सरस्वती के नाम रूप से बैठे हुए हैं। पिता के रूप में ब्रह्मा को टाइटिल धारी प्रजापिता-ब्रह्मा रूप में

बिठाया गया है और माता के रूप में टाइटिल धारी मम्मा सरस्वती को बैठाया गया है। इस प्रकार ये माता-पिता के रूप में बिठाए गए हैं। इसलिए यह नहीं समझना है कि यही मम्मा-बाबा हैं, यही समझना है कि ये सृष्टि के ओरिजिनल मात-पिता अर्थात् जगतपिता (शंकर) और (जगजननी उमा/पार्वती) जगतमाता (या एडम और ईव) बैठे हैं। जिनको मुसलमानों में 'आदम और हव्वा' कहा जाता है। जिनके द्वारा नई सृष्टि का फाउंडेशन लगाया गया है। निश्चित है कि पिता वाली आत्मा अव्वल नम्बर धर्म से होती है जिसमें अव्वल नं. धर्मपिता 'खुद+आ' स्वयं प्रवेश करता है, तब वह 'अल्लाह अव्वल दीन' कहा जाता है।

बाकी वृक्ष के दाईं ओर और बाईं ओर बाईप्लाट धर्मों के आधारमूर्त में बीजरूप ब्राह्मण बैठे हुए हैं और बीच में जो जड़ प्रायःलोप दिखाई गई है उस पर माता-पिता के रूप में सृष्टि वृक्ष के फाउण्डर पितर दिखाए गए हैं। वो कोई ब्रह्मा-सरस्वती (मम्मा-बाबा) नहीं हैं; क्योंकि सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी है। इसलिए ब्रह्मा-सरस्वती को प्रवृत्तिमार्गीय देवता धर्म का फाउंडेशन डालने वाला युगलमूर्त नहीं कहेंगे। वास्तव में ब्रह्मा और उनकी बेटी सरस्वती, ये कोई युगल रूप नहीं हुआ। ●"ब्रह्मा-सरस्वती भी वास्तव में मम्मा-बाबा नहीं हैं।" (मु. 31.3.72 पृ.1 मध्य) ●"मनुष्य समझते हैं एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह राँग है। (जगत्पिता शंकर) निराकार गॉड फादर है तो मदर भी ज़रूर (निराकार स्टेज वाली रुद्राणी जगदम्बा ही) होगी।" (मु. 18.5.73 पृ.2 मध्य) ● "यह मात-पिता, ब्रह्मा-सरस्वती दोनों कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। तो ज़रूर उन्हों के गुरू (निराकार ही) चाहिए।" (मु. 28.1.73 पृ.2 मध्यादि) ●"भल कहते हैं दादा को क्यों रखा है? अरे! प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ चाहिए ना। यह तो पतित है। झाड़ में देखते हो नीचे तपस्या में बैठे हैं...; परन्तु यह तो बदलते रहते हैं। यह (शिवबाबा) तो मुख्य है यह तो सदैव कायम है।" (मु. 9.11.66 पृ.2 अंत) ●"यह मनुष्य सृष्टि रूपी (साकार) झाड़ एक ही है। उनका एक ही (साकारी सो निराकारी) बीज है। इसको कल्पवृक्ष कहा जाता है। और कोई झाड़ को कल्पवृक्ष नहीं कहा जाता। इसके नीचे कपिलदेव और (कपिला/कमला गौ) कामधेनु अब बैठी हुई हैं। कपिलदेव को आदि देव ब्रह्मा भी कहते हैं। नाम तो बहुत रख दिए हैं। अब कामधेनु कोई गऊ तो नहीं है। मनुष्यों ने फिर गऊ रख दी है।" (मु. 19.3.73 पृ.1 आदि)

वृक्ष की जड़ लोप हुई क्यों दिखाई गई है

यज्ञ के आदि में जो फाउंडेशन डालने वाले थे वो तो देह त्यागने कारण अब यज्ञ में प्रायः लोप हो चुके हैं। उन्हीं को अब देवता धर्म के फाउण्डर के रूप में, प्रवृत्तिमार्गीय युगल जगत्पिता-जगदम्बा के रूप में प्रत्यक्ष होना है। अभी वो मूल फाउंडेशन ब्राह्मणों की दृष्टि में प्रायः लोप हो चुका है। पूरा लोप भी नहीं कह सकते, प्रायः करके लोप है। इसके लिए कलकत्ते में मूल जड़+तना विहीन बनियन ट्री का मिसाल दिया जाता है। यह सृष्टि रूपी वटवृक्ष का रूप है जिसकी लकड़ी रूपी हड्डियाँ पानी में पड़ी रहने पर भी सड़ती नहीं। जड़ के उस ऊपरी हिस्से में जहाँ नमी नहीं

मिल सकती वो ही भाग दुनियावी हवाओं से व्यभिचारी बनकर सड़ता है। इसलिए नीचे की जड़ का भाग प्रायः लोप कहा जाता है। पूरा लोप नहीं होता; क्योंकि गहराई में कुछ न कुछ ज्ञानजल की नमी मिलती रहती है। इसलिए प्रवृत्तिमार्गीय देवता धर्म का फाउंडेशन पूरा लोप नहीं हो पाता वरन् प्रायः लोप कहा जाता है। ● "दैवी धर्म का फाउंडेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउंडेशन था नहीं।... प्रायः गुम है।" (मु. 5.12.71 पृ.2 मध्य) जबकि दूसरे धर्मों की प्रतीक जड़ें अर्थात् आधारमूर्त सिद्धार्थ-जीसिस जैसे ब्राह्मण प्रत्यक्ष देखने में आते हैं। ●"बनियन ट्री का मिसाल एक्युरेट है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है।" (मु. 8.7.68 पृ.2 मध्यादि) ●"बड़ (वट) के झाड़ का मिसाल भी इनके ऊपर ही है। संन्यासी लोग भी मिसाल देते हैं; परन्तु उनकी बुद्धि में कुछ भी नहीं है। तुम तो जानते हो कैसे आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्रायः लोप हो जाता है। अभी वह फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। सभी धर्म हैं। बाकी एक (देवी-देवता) धर्म नहीं है। बड़ का झाड़ भी देखो कैसे खड़ा है। थुर है नहीं, फिर भी झाड़ सदैव हरा-भरा है। दूसरे झाड़ फाउण्डेशन बिगर सूख जाते हैं; क्योंकि थुर बिगर पानी कैसे मिले; परन्तु वह बड़ का झाड़ सारा ताजा खड़ा है। यह वण्डर है ना। वैसे ही इस झाड़ में भी देवी-देवता धर्म है नहीं।" (मु. 25.12.86 पृ.2 मध्य)

यहाँ वृक्ष में 10 प्रकार के नं.वार मनन-चिन्तनशील मनु रूप बीज, 10 आधारमूर्तों की जड़ें और 10 प्रमुख शाखाएँ दिखाई गई हैं। उनके 10 धर्मों के गुणधर्म का विवरण पहले यहाँ देना ज़रूरी है कि 10 प्रमुख धर्म कौन-2 से हैं और उनकी विशेषताएँ क्या-2 हैं और उन धर्मों में विशेष पार्ट बजाने वाली बीज और जड़ रूप आत्माएँ कौन-2 सी हैं, जिससे हर धर्म की आत्मा की सहज ही पहचान की जा सकती है।

'आदि सनातन देवी-देवता धर्म'-

पहले-2 है आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जिसका मूल गुणधर्म 'सहनशीलता' है। ●"कोई प्रशंसा करे और मुस्कराए-इसको सहनशीलता नहीं कहते; लेकिन दुश्मन बन, क्रोधित हो अपशब्दों की वर्षा करे, ऐसे समय पर भी सदा मुस्कुराते रहना, संकल्प मात्र भी मुरझाने का चिह्न चेहरे पर न हो। इसको कहा जाता है सहनशील। दुश्मन आत्मा को भी रहमदिल भावना से देखना, बोलना, सम्पर्क में आना। इसको कहते हैं सहनशीलता।" (अ.वा. 30.1.88 पृ.239 आदि) ● "जैसे यादगार शास्त्रों में महावीर, हनुमान के लिए दिखाते हैं कि इतना बड़ा पहाड़ भी हथेली पर एक गेंद के समान ले आया। ऐसे, कितनी भी बड़ी पहाड़ समान समस्या हो, तूफान हो, विघ्न हो; लेकिन पहाड़ अर्थात् बड़ी बात को छोटा-सा खिलौना बनाए खेल की रीति से सदा पार किया वा बड़ी भारी बात को सदा हल्का बनाए स्वयं भी हल्के (उड़न शील) रहे और दूसरों को भी हल्का बनाया। इसको कहते हैं सहनशीलता। छोटे से पत्थर को पहाड़ नहीं; लेकिन पहाड़ को गेंद बनाया। विस्तार को सार में लाना, यह है सहनशीलता।" (अ.वा. 30.1.88 पृ.239 मध्य) ● "अन्य धर्म की स्थापना और इस देवी-देवता धर्म की स्थापना में विशेष क्या

अंतर है? अन्य धर्म जो भी स्थापन हुए हैं वह वाणी बल द्वारा; लेकिन देवी-देवता धर्म स्थापन होता है- अपनी लाइफ बनाने से। यहाँ पहले प्रैक्टिकल लाइफ का भाषण चाहिए। मुख का भाषण पीछे।" (अ.वा. 22.1.76 पृ.2 अंत)

● "जो कोई भी बात को सहन कर लेता है तो सहन करना अर्थात् उसकी गहराई में जाना। जैसे सागर के तले में जाते हैं तो रत्न लेकर आते हैं। ऐसे ही जो सहनशील होते हैं वह गहराई में जाते हैं, जिस गहराई से बहुत शक्तियों की प्राप्ति होती है। सहनशील ही मनन शक्ति को प्राप्त कर सकता है। सहनशील जो होता है वह अंदर-ही-अंदर अपने मनन में तत्पर रहता है और जो मनन में तत्पर रहते हैं वही मग्न रहते हैं।" (अ.वा. 8.6.71 पृ.97 आदि) ● "सूर्यवंशी सदा बाप के साथ और सर्वसंबंध की अनुभूतियों में लवलीन रहेंगे। ...सूर्यवंशी (ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा की तरह) चढ़ती और उतरती कला में नहीं आते।... सूर्यवंशी सदा विश्व-कल्याण की ज़िम्मेदारी को निभाते हुए जितनी बड़ी ज़िम्मेदारी उतना ही डबल लाइट रूप होंगे।... सूर्यवंशी अपने वृत्ति और वायब्रेशन की किरणों द्वारा अनेक आत्माओं को स्वस्थ अर्थात् स्वस्मृति में स्थित करने का अनुभव करावेंगे।" (अ.वा. 6.1.79 पृ.181, 182 मध्य) ● "बाबा के प्यार में सहन करना, सहन नहीं है, यह त्याग का भाग्य लेना है। इस त्याग का प्रत्यक्ष फल मिलना है। भविष्य तो परछाई है ही।" (अ.सं. 18.3.01 पृ.106 मध्यांत) ● "आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगाएँगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है; लेकिन थोड़ा समय सहन करना पड़ता है।" (अ.वा. 25.10.02 पृ.13 अंत) सहनशीलता ही सर्वगुणों का राजा है। इस गुण को धारण करने वाली आत्माएँ हर ब्रह्माकुमारी आश्रम में एक/दो की संख्या में ज़रूर होनी चाहिए जिनमें ब्रह्मा जैसी अखूट सहनशक्ति का गुण अवश्य होगा। अन्य धर्मों की आत्माओं में ऐसी अखूट सहनशीलता देखने में नहीं आवेगी जैसी देवता धर्म की आत्माओं में देखने में आवेगी। जैसे कहते हैं- 'धरत परिये पर धर्म न छोड़िए'। यह उनका सहज और निरन्तर गुणधर्म होगा। जिसे धारण करने में उन्हें कोई खास पुरुषार्थ यानी मेहनत का अनुभव नहीं होगा। देवी-देवता सनातन धर्म के भी दो रूप हैं, जैसे हर धर्म की भी दो मुख्य डालियाँ हो गईं। इस्लाम धर्म के साथ मुस्लिम धर्म जुड़ा हुआ है, क्रिश्चियन धर्म के साथ रशिया का नास्तिक धर्म जुड़ा हुआ है। ऐसे ही देवी-देवता सनातन धर्म जो पक्का प्रवृत्तिमार्ग वाला है, तो उसमें देवताओं और क्षत्रियों की प्रवृत्ति है। क्षत्रिय धर्म की जो विशेष आत्माएँ पार्ट बजाने वाली हैं उनमें मुख्य है क्षात्रतेज सहित क्षत्रछाया वाली राम वाली आत्मा। वो हो गई 5-7 सौ करोड़ का प्रजापिता के रूप में पार्ट बजाने वाली। मुरली में बोला है -(यादगार मंदिरों भी) "राम बाप को कहा जाता है" ऐसे नहीं कहा कि बाप कृष्ण (बच्चा) को कहा जाता है।" (मु. 6.9.70 पृ.3 के मध्य) तो एडम के रूप में पार्ट बजाने वाली है बेहद का बाप-आदम-एडम राम की आत्मा। देवताएँ तो मृदुल स्वभाव वाले ही होते हैं। उनका जो मुखिया है कृष्ण बच्चा बुद्धि वाली आत्मा, वो हो गई मीठी मृदुल स्वभाव वाली माता के रूप में पार्ट बजाने वाली जगतमाता

अर्थात् जगदम्बा। ● "जैसे साकार बाप की विशेषता देखी। हर-एक के दिल से यह आवाज़ निकलता रहा- हमारा बाबा! चाहे पच्छड़माल हो, फिर भी "हमारा बाबा!" यह अनुभव हर आत्मा का रहा।" (अ.वा. 7.2.75 पृ.52 मध्य) यह जो देवी-देवता सनातन धर्म का मुख्य बीच वाला थुर भाग है, जिन पर मात-पिता बैठे हैं, ये आदि से लेकर कलियुग अन्त तक इसी तरह की आत्माएँ हैं जिनको फॉलो करने वाली पक्की रुद्राक्ष, बीजरूप आत्माएँ भी होती हैं, जो अपने धर्म में पक्की रहती हैं। अपने जीवन में कभी भी अपने सनातन धर्म को छोड़ने वाली नहीं बनतीं। इसलिए यह थुर भाग में नीचे से लेकर ऊपर तक पक्के ऊर्ध्वमुखी देवी-देवता सनातन धर्म की आत्माओं को दिखाया गया है। इसलिए बाबा बोलते हैं- ● "तुम हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के पक्के। तुम्हारी बुद्धि में ऊँच-ते-ऊँच भगवान है।" (मु. 26.2.<u>68</u> पृ.1 आदि) मतलब जीवन रहते कभी भी दूसरे धर्म में कन्वर्ट होने वाले नहीं हो। ● "ब्राह्मण रूप में वृक्ष की (मूल) जड़ में हो और देवता रूप में वृक्ष के तना हो। और सभी धर्म आप तना से निकलते हैं। तो आप डायरैक्ट (सुप्रीम सोल की) रचना का कितना महत्त्व है! डायरैक्ट (निराकारी सो साकारी) बीज के साथ संबंध है। उन्हों का इनडायरैक्ट संबंध है, आपका डायरैक्ट है।" (अ.वा. 8.4.92 पृ.181 मध्य) ● "अभी तुम बच्चे जानते हो बरोबर हम असल देवता धर्म के थे। वह धर्म बहुत (अर्थात् 3/4 हिस्सा) सुख देने वाला है।" (मु. 21.6.<u>65</u> पृ.1 अंत) इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट ,गुरूनानक का जो धर्म है, वो मानवीय धर्म है। मनुष्य द्वारा स्थापन किया हुआ धर्म है; लेकिन हमारा जो धर्म है, जो निराकार परमपिता+परमात्मा इस सृष्टि पर आकर स्थापन करते हैं, वो बहुत सुख देने वाला है। इसलिए अपने इस धर्म की स्थापना करने के लिए अगर मृकण्डु ऋषि की तरह प्राण भी देना पड़े तो खुशी-2 प्राण अर्पण कर देना चाहिए। भागने की बात नहीं है, नहीं तो बौद्धियों ने क्या किया? मुसलमानों ने जहाँ तलवार उठाई, उन्होंने मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया। बाप कहते हैं- 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह'। अपने धर्म में मर जाना अच्छा है। दूसरे के धर्म में कन्वर्ट होंगे तो बहुत दुख सहन करने पड़ेंगे। दूसरे धर्म में कन्वर्ट करने वाले दास-दासी बनाके रखेंगे। (कहा भी जाता है-) 'सबते सेवक धर्म कठोरा'। दास-दासी का धर्म सबसे कठोर होता है। बहुत दुख झेलने पड़ेंगे। (मुरली में कहा है-) ● "आदि सनातन देवी-देवता धर्म को ही हीरो-हीरोइन कहा जाता है। हीरे जैसे जन्म ...तुम्हारे लिए कहा जाता है।" (मु. 21.1.99 पृ 2 मध्य)

●"गीता है भी देवी-देवताओं का धर्मशास्त्र। तुम्हारा दूसरे कोई धर्म में जाने से क्या फायदा। (समृद्ध हुए धर्म वाली) हरेक अपनी कुरान, बाइबिल आदि ही पढ़ते हैं। अपने धर्म को जानते हैं। एक भारतवासी ही (कहाँ-2 कनवर्टिड हो फिरने वाले काफिर=) अधर्मी (बने हैं)। सभी धर्मों में चले जाते हैं। और सभी अपने-2 धर्म में (पक्के) हैं।"(मु. 3.5.70 पृ.1 अंत) ● "गीता तो है ही सभी (देशी-विदेशी) शास्त्रों का मात-पिता। ऐसे नहीं कि सिर्फ़ भारत के शास्त्रों का मात-पिता है। नहीं। जो भी बड़े-ते-बड़े शास्त्र सारी दुनिया में हैं सभी का मात-पिता

है।” (मु. 20.2.73 पृ.1 मध्यादि) ● “मेरी मत तो मशहूर है। श्रीमदभगवत् गीता।” (मु. 3.5.70 पृ.1 मध्य) ● “ऐसे कोई भी शास्त्र में लिखा हुआ नहीं है कि क्राइस्ट को याद करने से आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएगी। एक गीता में ही है कि मामेकम् याद करो। गॉड फादर का शास्त्र है ही गीता।” (मु. 20.11.91 पृ.3 अंत) ● “तुम भारतवासियों को तो गीता पढ़नी है। अपना धर्म शास्त्र छोड़ दूसरे का सुनना-पढ़ना यह तो व्यभिचार हुआ।” (मु. 19.9.87 पृ.2 अंत) ● “बाप कहते हैं- रावण ने तुमको बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि बना दिया है। खास भारतवासियों को। तुम देवी-देवता थे-‘यह भी भूल गये हो, तो तुच्छ बुद्धि हुए ना। अपने धर्म को भूल जाना, यह है तुच्छ बुद्धि का काम।”(मु. 23.5.70 पृ.1 आदि) ● “अभी पता पड़ा है हम जो देवी-देवता थे सो फिर कैसे वाममार्ग में आते हैं। वाममार्ग विकारी मार्ग को कहा जाता है।” (मु. 29.4.70 पृ.3 मध्यादि)

• “वास्तव में हिन्दू कोई धर्म है नहीं। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो पड़े हैं इसलिए अपने को देवी-देवता कहलाते नहीं।... हिन्दुओं को अपने धर्म का पता नहीं है। भारत का असुल में देवी-देवता धर्म है। वह चला आना चाहिए; परन्तु आदि सनातन देवी-देवता धर्म को भूल जाने कारण कह देते हमारा धर्म हिन्दू है। हिन्दू धर्म तो होता ही नहीं। कितने पत्थर बुद्धि हैं।” (मु. 21.6.70 पृ.2 अंत) ● “यह भी तुम समझते हो यह सुख और दुख का खेल है। तुम्हारे बुद्धि में है आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुख। बाप समझाते हैं पौना से भी जास्ती सुख भोगते हो। आधा कल्प के बाद भी तुम बहुत धनवान थे। कितने बड़े-2 मन्दिर आदि बनाते थे। दुख तो पीछे (कलियुग में) होता है। जब बिल्कुल तमोप्रधान भक्ति बन जाती है।” (मु. 13.5.<u>68</u> पृ.2 मध्य) ● “सभी धर्म वालों से देवता धर्म की आदमशुमारी जास्ती होगी; परंतु वह कन्वर्ट हो गए हैं।... इसलिए थोड़ी संख्या हो जाती है। यह भी ड्रामा। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।” (मु. 25.9.73 पृ.2 मध्य) ● “हिदुओं को मुसलमान लोग काफर कहते हैं; क्योंकि वो अपने धर्म को जानते ही नहीं हैं। कब किसी को मानेंगे, कब किसी को मानेंगे। बहुतों के पास जाते रहेंगे। क्रिश्चियन लोग कब किसी के पास जावेंगे नहीं।” (मु. 1.3.<u>67</u> पृ.2 मध्यादि) ● “मुख्य हैं ही 4 धर्म- डिटीज़्म, इस्लामिज़्म, बौद्धिज़्म, क्रिश्चियनिज़्म। बाकी फिर इनसे वृद्धि होती गई है। इन भारतवासियों को पता ही नहीं पड़ता हम किस धर्म के हैं। धर्म का मालूम नहीं है तो धर्म ही छोड़ देते।” (मु. 21.9.<u>68</u> पृ.3 अंत)

<u>क्षत्रिय धर्मः-</u>

इस सृष्टि रूपी वृक्ष का दूसरा विशेष धर्म है- ‘क्षत्रिय धर्म’, जिसका विशेष गुणधर्म है- ‘सामना करने की शक्ति और समाने की शक्ति’ जो भारतीय राजाओं का विशेष धर्म रहा है। गीता में भी आया है-

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।

दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥ 18/43

शूरवीरता, तेज, महाआपत्ति में भी आत्मगुणों को धारण करने की शक्ति दक्षता-कुशलता तथा भयंकर मायावी युद्ध में भी न भागना, दान और प्रभुत्व-स्वामित्व-ये त्रेतायुगी क्षत्रियों के अनादि निश्चित स्वभाव से उत्पन्न हुए गुण-कर्म हैं।

भारत में क्षत्रिय वर्ण की आत्माएँ ही प्रायः करके राजाएँ बनी हैं। जिनमें सामना करने की शक्ति विशेष रूप में देखी जाती रही है। ऐसी बात भी नहीं कि इनमें सहनशीलता होती ही नहीं है; परन्तु प्रायः करके जिसमें शक्ति होती है, बल होता है, वो सहन क्यों करेगा? सहन करने की शक्ति होते हुए भी ये आततायियों के प्रति सामना करने की स्वभाव वाली होती हैं, विकराल-से-विकराल परिस्थितियों में भी सामना ज़रूर करेंगी। जैसे अव्यक्त वाणी में बापदादा ने सागर के विशेष दो गुण बताये हैं कि सागर ज्ञान लहरों से तूफानों का सामना भी करता है और कैसी भी गुणधर्म वाली विरोधी आत्माओं को भी अपने में भारतीय पौराणिक परम्पराओं के अनुसार समाय लेना या आत्मसात कर लेना इन क्षत्रिय वर्ण की आत्माओं का विशेष गुणधर्म है। ●"सागर में विशेष दो शक्तियाँ सदैव देखने में आवेंगी।... (ज्ञान) लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं।" (अ.वा. 21.9.75 पृ.121 आदि) ● "सागर के बच्चे हैं, सागर की विशेषता है ही समाना। जिसमें समाने की शक्ति होगी वही शुभ भावना, कल्याण की कामना कर सकेंगे। इसलिए दाता बनना, समाने के शक्ति स्वरूप सागर बनना।" (अ.वा.31.3.86 पृ.298 आदि) ● "अगर कोई सामना करे तो तुम कायदे सिर लड़ो।" (मु.7.7.70 पृ.2 मध्यांत) विदेशी धर्मों के क्रूर, आततायी, अत्याचारी धर्मावलम्बियों ने भारत में आकर कितने भी अत्याचार किए, बार-2 आक्रमण किए, लूटमार की; परन्तु फिर भी भारतीय राजाओं ने उनका मुकाबला भी किया और उन्हें ज़रूरत पड़ने पर समय आने पर आत्मसात भी कर लिया। भारत मात-पिता का देश है; क्योंकि राम बाप को कहा जाता है और कृष्ण है देवता धर्म की मृदुल स्वभाव वाली मातृ स्नेही, मातृवात्सल्य के स्वभाव वाली आत्मा। राम और कृष्ण दोनों ही सृष्टि रूपी रंगमंच के हीरो-हीरोइन हैं, मात-पिता हैं, आदम-हव्वा या एडम-ईव हैं। पिता की कठोरता क्षत्रिय धर्म की बीज रामवाली आत्मा में समाई हुई है। उस बीजरूप पिता में सारे सृष्टि रूपी वृक्ष की साररूप शक्ति समाई हुई है, तो सर्व मनुष्य आत्माओं को समाने का विशेष गुणधर्म उसमें अवश्य होगा। ● "जैसे चन्द्रमा की कलाएँ बढ़ती और घटती रहती हैं, वैसे चन्द्रवंशी कब बहुत उमंग-उत्साह में सम्पूर्ण स्टेज का अनुभव करेंगे और कब स्वयं को सम्पूर्णता से बहुत दूर अनुभव करेंगे।... कब 100 के मणके के समान चमकेगा कब अपनी कमज़ोरियों की माला बाप के आगे बार-2 सुमिरण करेगा।" (अ.वा. 6.1.79 पृ.181 आदि, 182 मध्य) ● "क्षत्रियों का सदा तीर-कमान के बोझ उठाने का खेल। हर समय पुरुषार्थ की मेहनत का कमान है ही है। एक समस्या का समाधान करते ही हैं तो दूसरी समस्या खड़ी हो जाती। ब्राह्मण सदा समाधान स्वरूप हैं। क्षत्रिय बार-2 समस्या को समाधान करने में लगे हुए रहते।... क्षत्रिय क्या करत भये। इसकी कहानी है

ना- चूहा निकालते तो बिल्ली आ जाती। आज धन की समस्या, कल मन की, परसों तन की वा संबंध-सम्पर्क वालों की। मेहनत में ही लगे रहते हैं। सदा कोई-न-कोई कम्प्लेंट ज़रूर होगी। चाहे अपनी हो, चाहे दूसरों की हो।" (अ.वा.3.5.84 पृ.289 मध्य) ● "जो माया से हार खाते उनको क्षत्रिय कहा जाता है।" (मु. 21.10.68 पृ.2 मध्यादि) ● "एक भारत ही है जिसने किसका भी राज्य छीना न है।" (मु. 6.9.75 पृ.3 आदि) ● "भारत में कोई भी आवेगा तो भारतवासी उनको पनाह देंगे।" (मु. 22.6.<u>65</u> पृ.3 मध्यांत) ● "चन्द्रवंशी राम को बाण आदि दिए हैं। वास्तव में ज्ञान बाण की बात है। वह नापास हुआ इसलिए निशानी दे दी है।" (मु. 2.12.82 पृ.1 अंत) ● "अब रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। तुम जानते हो कि राम की आत्मा ज़रूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में नापास होती है; परन्तु कोई-न-कोई रूप में होगी तो ज़रूर ना। यहाँ ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम का, तो ज़रूर आयेंगे, उनको नॉलेज लेनी पड़ेगी।... वह तो ज़रूर पढ़ते होंगे। अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे।" (मु. 19.9.89 पृ.1 मध्यांत)

<u>इस्लाम धर्म:-</u>

अगला तीसरे नम्बर का धर्म है- 'इस्लाम धर्म'। यह है नम्बरवन वाममार्गीय धर्म। वाममार्ग माना उल्टा रास्ता बताने वाला। ● "वाममार्ग विकारी मार्ग को कहा जाता है।" (मु. 29.5.70 पृ.3 मध्यादि) इसका विशेष गुणधर्म है- 'महाकामी'। एक होता है कामी अर्थात् सिर्फ अपनी पत्नी या पति तक ही काम वासना में लिप्त रहते हैं, इसको कहते हैं कामी; परन्तु महाकामी उसे कहा जाता है जिसकी वासना पूर्ति एक से नहीं हो पाती। गीता में भी बताया है कि -

कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ 16/11

(वे) कामवासना का उपभोग करना ही परम पुरुषार्थ है और 'यही सब कुछ है', ऐसा निश्चय करने वाले हैं।

महाकामी का उदाहरण कुत्ते से दिया जाता है, कहते हैं ना कामी कुत्ता। ● "भल पतित बनना है वह तो कायदा है एक स्त्री से ही पतित बनें। दूसरा कोई से पतित बनना बेकायदे है।" (मु. 8.10.<u>68</u> पृ.1 मध्यांत) ● "पतित मनुष्यों को कहा जाता है कामी कुत्ता। कोई एक स्त्री होते दूसरी करता है तो कहा जाता है यह तो कामी कुत्ता है। रात-दिन विकार में ही फंसा हुआ है।" (मु. 15.10.68 पृ.1 आदि) ● "काम कटारी का काँटा लगाना यह तो जंगली जानवरों का काम है। एक दो को दुख देते हैं ना।" (मु. 13.4.69 पृ.1 मध्यादि) ● "हरेक धर्म वालों की सिकल आदि अलग है। कोई सीदी(काले), कोई गोरे।" (मु. 3.5.70 पृ.2 आदि) ● "इस्लामी देखो कितने काले हैं। इनकी भी फिर बहुत ब्रान्चेज निकलती रहती हैं। मुहम्मद तो बाद में आता है। पहले हैं इस्लामी।" (मु. 27.8.69 पृ.1 अंत)

व्यभिचारी होना इनके जीवन की विशेषता है, जिसके कारण द्वापर से दुनिया की आबादी बड़ी तीव्र गति से बढ़ने लगी। वास्तव में इस्लामियों, जिनका अपर नाम बाद में मुस्लिम पड़ा उनकी संख्या तो बहुत तेजी से बढ़ी। इनमें शुरू अर्थात् द्वापर में भाई-बहनों में भी शादी की परम्परा होती थी। इतने ये विकारी, व्यभिचारी थे! व्यभिचार इनके धर्म में नूँधा है। सिर्फ पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी अपने जीवन में अनेक शादियाँ करती हैं और डायवोर्स भी देती हैं। है तो यह सब ड्रामाप्लैन अनुसार ही; क्योंकि यदि वो ऐसा न करते तो उनकी जनसंख्या की वृद्धि भी न होती।

अरब देश गरम देश है। जहाँ गर्मी जास्ती होती है वहाँ इंद्रियों में भी गर्मी आती है। इंद्रियाँ अपने को कंट्रोल करने में सक्षम नहीं रहती हैं और वहाँ पानी भी कम होता है। पानी तो ठंडा करने वाली चीज़ है। तो पानी ना होने की वजह से वो और भी अपने को कंट्रोल नहीं कर पाते। ऐसे ही जैसे कि ज्ञानजल है, बाबा हमको ज्ञानजल में डुबोकर रखता है। ज्ञानजल में डूबे हुए होने के कारण हमारी इंद्रियों में ठंडक आती है , शांति महसूस होती है। जितना हम ईश्वरीय ज्ञान-योग में रहते हैं उतना हमारी बुद्धि सूक्ष्म बनती है और ज्ञान का मनन-चितन भी जास्ती चलता है। ज्ञान का जास्ती मनन-चितन-मंथन चलता है तो इंद्रियाँ शांत रहती हैं दुख और अशांति से मुक्ति मिलती है।

बाबा कहते हैं- क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे और कामी को पतित कहेंगे। ● "विकारी को पतित कहना, भ्रष्टाचारी कहना बात एक ही है। पतित, भ्रष्टाचारी माना विकार में जाने वाला। क्रोधी को पतित, भ्रष्टाचारी नहीं कहा जाता है।" (मु. 15.11.<u>66</u> पृ.1 आदि) क्रोधी की आँखों में क्रोध आता है, मुख में क्रोध आता है। लाल-2 हो जाता है। आँखे लाल-2 हो जाएँगी और कामी की श्रेष्ठ इंद्रियों में तेज नहीं आता, गर्मी नहीं आती, उसकी भ्रष्ट इंद्रियों में गर्मी आती है। श्रेष्ठ इंद्रियाँ कम पतन करने वाली हैं और भ्रष्ट इंद्रियाँ शक्ति को तेजी से क्षीण करती हैं। इसलिए इस्लामियों के मुकाबले, बौद्धी, संन्यासी आदि कम पतित बनते हैं। पतन ज्यादा किसका होता है? जो कामी हैं उनका जास्ती पतन होता है और क्रोधी का पतन कम होता है। पतन होने का/पतित होने का कारण क्या बताया? व्यभिचार। अनेक में इंद्रियाँ, अनेक में बुद्धि आसक्त होना, अटैचमेंट होना (इससे) आत्मा का पतन जास्ती होता है। व्यभिचार से आत्मा अशक्त बनती है और अव्यभिचार से आत्मा शक्तिशाली बनती है।

<u>बौद्ध धर्म-</u>

इसके बाद चौथा धर्म है- 'बौद्ध धर्म'। महात्मा बुद्ध का विशेष गुणधर्म रहा है- 'हद की अहिसा'। जिस समय बुद्ध भारत में आए उस समय भारत में हिसक यज्ञों की परम्परा ज़ोर-शोर से चल रही थी। जानवरों को ही नहीं, अपितु मनुष्य और बच्चों को भी काट-काटकर यज्ञ में पकाया जाता था। उनका माँस भूनकर प्रसाद समझकर खाया जाता था। इसे नरमेध यज्ञ कहा जाता था। ● "आगे मनुष्यों की बलि चढ़ती थी। वह भी गवर्मेंट ने बंद किया है।

मनुष्यों के माँस को महाप्रसाद समझ बाँटते थे, वह फिर खाते भी थे। अभी बकरे का महाप्रसाद समझते हैं।" (मु. 8.11.68 पृ.3 अंत) उस समय महात्मा बुद्ध ने आकर इन हिंसक यज्ञों का प्रतिकार किया। उनको फॉलो करने वाले बौद्ध धर्मावलम्बियों ने इस हिंसक परम्परा का त्याग कर दिया। बौद्ध धर्म में पहले प्रवृत्तिमार्ग का विशेष महत्त्व रहा। ब्रह्मचर्य को विशेष महत्त्व देने वाले थे, बहुत पवित्र रहते थे; परन्तु बाद में कुछ समय के पश्चात् बौद्धियों में जो बुद्ध-विहार बनाये जाने लगे, उनमें स्त्री पुरुषों को साथ-2 रहने की अनुमति दे दी गई और जब स्त्री पुरुष साथ-2 रहे तो उनमें व्यभिचार फैल गया। हमारी ब्राह्मणों की दुनिया में भी कोई-2 ऐसे बुद्धू ब्राह्मण हैं जो कहते हैं- 'हम तो आत्मा-2 भाई-2 हैं ना। (अगर आत्मा-2 भाई-2 हैं तो) तुमको देहभान क्यों आता है कि हम स्त्री हैं, हम पुरुष हैं। जब हैं ही आत्मा-2 भाई-2 तो (क्या) हम साथ-2 नहीं रह सकते? एक ही घर में नहीं रह सकते? आत्माओं को संग का रंग लगता है क्या?' अरे! आत्माओं को ही तो संग का रंग लगता है कि परमपिता शिव को लगता है? जब मालूम है कि आत्माओं को ही संग का रंग लगता है तो संग के रंग से बचाना चाहिए ना! साथ-2 रहने की तो बात ही नहीं। स्त्रियों का अलग प्रबंध होना चाहिए, पुरुषों का अलग प्रबंध होना चाहिए। हाँ, एक फैमिली है तो बात दूसरी है। तो बौद्ध धर्म में ये बुद्धूपना आ गया कि उन्होंने साथ-2 रहना शुरू कर दिया। जब बौद्ध-विहारों में इनके भोलेपन के कारण स्त्री और पुरुष इकट्ठे निवास करने लगे तो इनमें व्यभिचार तेजी से फैल गया और उसका जब भंडाफोड़ होने लगा तो पुरुष बौद्धियों को तीव्र वैराग आता गया और वे निवृत्तिमार्गीय संन्यासी बनने लगे। इसलिए बाबा ने मु. में कहा है ● "संन्यासी तो आते ही बाद में हैं। इस्लामी, बौद्धी के भी बाद में आते हैं। क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं।" (मु. 17.11.74 पृ.2 मध्य) वास्तव में शंकराचार्य से चले हुए संन्यासी तो बाद में आए; लेकिन उनसे भी पहले बौद्ध धर्म की आत्माएँ ही संन्यासी बनने लग पड़ी थीं। तो 'हद का घर-बार छोड़ने वाला संन्यास और हद की अहिंसा' बौद्धियों का विशेष गुणधर्म रहा।

बौद्धियों की अहिंसा कायरता वाली अहिंसा है, इसलिए इन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला ही नहीं किया। बड़े सहज भाव से इन्होंने अपने बीवी, बाल-बच्चों को आक्रान्ताओं के हवाले कर दिया और सदा के लिए अधीन हो गए। यही कारण है कि राजाई की दृष्टि से बौद्ध धर्म संसार में अधिक समय तक अस्तित्व में नहीं रह सका। आज लगभग सभी बौद्धी धर्म खण्डों में नास्तिकवाद अर्थात् रूस के कम्यूनिज्म का बोल-बाला हो गया है। बौद्धधर्म जो बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था, संसार में फैल रहा था, व्यभिचार के कारण उनका पराभव हो गया, पतन हो गया। विदेशियों के बीच में बौद्धधर्म जितना पुराना है उसके मुकाबले उनकी राजाई बहुत कम चली है। सिर्फ आरंभ के 400/500 साल तक उनकी राजाई कायम रही और बाद में राजाई नष्ट हो गई। ● "यहाँ तुम बाप के संग बैठे हो तो अच्छा समझते हो। बाहर जाने से संग में पता नहीं फिर क्या हाल होगा। संगदोष तो बहुत होता है ना।... बाहर में तो मनुष्य क्या-2 खाते रहते हैं। खास चीनी लोग का खान-पान बड़ा गंदा होता है।" (मु.

12.11.71 पृ.3 आदि) ● "तुम डबल अहिंसक हो। न मारते हो अर्थात् न किस पर गुस्सा करते हो। न काम-कटारी चलाते हो। नॉनवाइलेन्स तुम हो। नम्बरवन हिंसा है काम-कटारी चलाना। दुनिया में कोई नहीं जानते कि पहला नंबर दुश्मन कौन है।" (मु. 30.8.73 पृ.4 मध्य)

<u>क्रिश्चियन धर्मः-</u> (2000 वर्ष पूर्व से)

पाँचवाँ अगला धर्म है क्राइस्ट का 'क्रिश्चियन धर्म'। क्रिश्चियन धर्म का मुख्य गुणधर्म है- 'गुप्त क्रोध'। यह दूसरे नम्बर का वाममार्गी धर्म है। ऐसे नहीं कि इसके धर्मावलम्बियों में इस्लामियों जैसी काम वासना अर्थात् व्यभिचारी वृत्ति नहीं होती। इनमें भी डायवोर्स देने और एक ही जीवन में अनेकों सम्बन्ध जोड़ने की व्यभिचारी वृत्ति होती है; परन्तु इस्लामियों के मुकाबले यह ठंडे प्रदेशों में पनपने वाला धर्म है। इस्लामियों का धर्मखण्ड गर्म होने के कारण काम वासना की वृद्धि करने वाला है। जबकि इसाईयों का यूरोपीय धर्मखण्ड मौलिक रूप से ठंडा होने के कारण 'ठंडे क्रोध' को जन्म देने वाला है। ठंडे क्रोध का मतलब है कि तत्काल ही शंकर की तरह धूम-धड़ाका करने वाला स्वभाव इनमें नहीं होता। ये क्रिश्चियन उस समय शान्त रहेंगे जब इनको क्रोध आएगा। मालूम ही नहीं पड़ेगा कि क्रोध ने इनके अन्दर अड्डा जमा रखा है। बड़े शान्त और सभ्यता की प्रतिमूर्ति देखने में आवेंगे; परन्तु अन्दर-ही-अन्दर क्रोध की ज्वालामुखी घुमड़ने लगेगी। अवसर पाते ही क्रोध की ज्वालामुखी इतना भयंकर रूप धारण करती है कि ये अपने विरोधियों के प्रति ऐटमिक बॉम्ब्स जैसे भयंकर परिणाम लाने वाली सामग्री बनाने से भी नहीं चूकते। भले ही उसके विस्फोट से सारी दुनिया ही स्वाहा क्यों ना हो जाए और उसमें महाभारत प्रसिद्ध यादवों के बुद्धि रूपी पेट से निकले लोहे की मूसलों की भाँति अपने ही सारे कुल का सर्वनाश ही क्यों न हो जाए। ऐसे भयंकर परिणामों को अच्छी तरह समझने के बावजूद भी ये अपने क्रोध को रोक नहीं पाते। भरपूर वार करने के लिए सतत प्रयत्नशील बने ही रहते हैं।

ऐसे 'खतरनाक, खौफनाक ठंडे क्रोध को अन्दर-ही-अन्दर गुप्त रूप से बढ़ाने के लिए 'बाहरी सभ्यता का ढोंग करना, दिखावा करना अर्थात् पोपलीला करना' इन क्रिश्चियन्स का दूसरा विशेष गुणधर्म है। ये प्रदर्शन करने का गुणधर्म ही ऐसा है जो इनमें एडवर्टाइजमेन्ट की विशेष कला को जन्म देने वाला है। इनकी एडवर्टाइजमेन्ट की कला ने वो कमाल करके दिखाया कि प्राचीन भारतीय सभ्यता को असभ्य और पिछड़ा हुआ साबित कर दिया। इन्होंने हिस्ट्री में यह साबित कर दिया कि आर्य यूरोप की ओर से आए और भारत में पिछड़े हुए लोग रहते थे। ग्रीस और रोम की पुरानी यूरोपीय सभ्यता का संसार में इन्होंने नाम बाला किया। जबकि वास्तविकता बिल्कुल इसके विपरीत है। इस प्रकार क्रिश्चियन्स के विशेष गुण धर्म हुए-'ठंडा क्रोध, प्रदर्शन की पोपलीला और तीसरा है एडवर्टाइजमेन्ट की धोखाधड़ी' ये तीनों ही गुण भारत की प्राचीन परम्पराओं के बिल्कुल विपरीत हैं। ● "इस समय यह अमेरिका, रशिया आदि जो हैं, यह सभी माया का भभका है।... 100 वर्ष में यह सभी हुए हैं।... यह है

रुण्य के पानी मिसल राज्य। इसको माया का पॉम्प कहा जाता है।”... (मु. 21.3.72 पृ.2 अंत, 3 मध्यांत) ● “क्राइस्ट जब आया, उनके पीछे उनकी (फालोअर) आत्माएँ आती गईं। उन्हों के पास क्या था? कुछ भी नहीं। जंगल में नंगे रहते थे। पत्तों के कपड़े पहनते थे। उस समय विकार की चेष्टा नहीं रहती थी। ” (मु. 1.3.73 पृ.2 मध्यांत) ● “पहले-2 क्राइस्ट आदि यूरोप तरफ चले गए।” (मु. 26.7.71 पृ.1 अंत) ● “जिन्होंने मूसल निकाले हैं वह अभी अपने कुल का नाश करने एक/दो को धमकी दे रहे हैं। हैं सब क्रिश्चियन लोग। वही यूरोपवासी यादव ठहरे।” (मु. 16.2.74 पृ.1 मध्यांत)

● “सबसे खौफ़नाक मनुष्य कौन-सा होता है, जिनसे सब डर जाते हैं? दुनिया की बात तो दुनिया में रही; लेकिन इस दैवी परिवार के अंदर भी सबसे खौफनाक नुकसान कारक वो है जो अंदर एक और बाहर से दूसरा रूप रखता है। वो परनिन्दक से भी जास्ती खौफनाक है; क्योंकि वो कोई के नज़दीक नहीं आ सकता, स्नेही नहीं बन सकता। उनसे सब दूर रहने की कोशिश करेंगे।” (अ.वा. 28.9.<u>69</u> पृ.110 मध्यादि) अंदर एक और बाहर दूसरा ये अच्छी बात है या खराब बात है? जो अंदर एक और बाहर दूसरा है ऐसा इस ब्राह्मण परिवार के लिए बहुत खौफनाक और खतरनाक है। बाकी ये जरूरी नहीं है कि हर एक आत्मा अंदर से खौफनाक हो और बाहर से सुंदर हो; लेकिन अगर कोई है, तो बहुत खौफनाक और खतरनाक है। इसके लिए रामायण में भी कहा है- ‘विष रस भरा कनक घट जैसे’। ● “क्रिश्चियन की बुद्धि पत्थरबुद्धि नहीं है, जितनी यहाँ वालों की है। वे सुख भी कम तो दुख भी कम पाते हैं।... उन्हों की न पारस बुद्धि, न पत्थरबुद्धि होती है।... साइंस का प्रचार सारा इन क्रिश्चियन से ही निकला है।” (मु. 11.4.<u>68</u> पृ.2 मध्यांत) ● “क्रिश्चियन लोग खुद भी समझते हैं- हमको कोई प्रेर रहा है, हम अपने ही विनाश के लिए बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे-2 बॉम्ब्स बना रहे हैं, जो एक दुनिया तो (क्या) 10 दुनियाओं को भी एक बॉम्ब से खत्म करेंगे।” (मु. 23.3.<u>68</u> पृ.4 आदि) ● “क्रिश्चियन लोग के जन्म कितने होंगे, करके 40 जन्म होंगे।” (मु. 17.2.71 पृ.3 अंत) ● “क्राइस्ट को 2000 वर्ष हुए। अब हिसाब करो एवरेज कितने जन्म हुए? 30-32 जन्म होंगे। यह तो क्लीयर है।” (मु. 22.11.71 पृ.3 अंत)

<u>संन्यास धर्मः-</u> (1500 वर्ष पूर्व से)

अगला छठा धर्म है ‘संन्यास धर्म’। यह भी बौद्धियों की तरह स्वदेशी भारतीय धर्म है। बौद्धी मौलिक रूप से प्रवृत्तिमार्ग वाले रहे, जबकि संन्यास धर्म के प्रणेता आदि शंकराचार्य बचपन से ही निवृत्तिमार्ग को अपनाने वाले रहे। द्वापर के अंत से लेकर कलियुग अंत तक भारत में ही फलते-फूलते रहते हैं। सिर्फ अंत के 100 वर्षों में भारत में अपनी पोलपट्टी खुल जाने से विदेशों में फैल जाते हैं। वहाँ जाकर भारत का प्राचीन योग वा सहज योग के नाम पर हठयोग की शारीरिक परिक्रियाएँ आसन-प्राणायामादि दिखाने लग पड़ते हैं। इस धर्म का विशेष गुण धर्म है ‘कायरता वाली पवित्रता’। जैसे कोई 5-10 वर्ष जेल में रहे और जेल से बाहर आने के बाद अपने ब्रह्मचर्य

की डींग हाँकने लगे कि मैंने दस साल ब्रह्मचर्य पालन किया। ऐसी ही मजबूरी की दूरबाज-खुशबाज वाली पवित्रता धारण करने में ये बड़े माहिर हैं। प्रवृत्ति में पत्नी, बाल-बच्चों के साथ रहकर पवित्रता धारण करना इनके लिए असम्भव है। इसलिए नारी नरक का द्वार कहकर जंगलों की ओर भागते रहे। ये संन्यासी लोग जो पवित्र रहते हैं, वो कोई ज्ञान से, योग से, मेहनत से नहीं यह तो दवाई खाई और मुर्दे बन गए। ● "अभी इनसे तो कोई भारत को ताकत नहीं मिल सकती। ताकत मिले तब जबकि गृहस्थ-व्यवहार में रह करके पवित्र रह दिखाएँ। इसमें (अंदरूनी) हिम्मत चाहिए। वो तो हो गए कायर संन्यासी जो घर-बार छोड़कर जाते हैं और ही क्रियेशन को विधवा बनाकर जाते हैं, नर्क में डालकर चले जाते हैं।" (मु. 28.4.64 पृ.2 आदि) अपनी कमज़ोरी को न देख दूसरों की कमज़ोरियों की ओर इशारा करने लग पड़े।

फिर भी एक बात विशेष है कि भल कायरता वाली पवित्रता ही है; परन्तु पवित्रता के प्रति इनमें प्यार तो है। पवित्र रहकर इन्होंने गिरते हुए भारत को थमाया तो है। ● "संन्यासी न होते तो फिर यह भारत बहुत भ्रष्टाचारी बन जाता। संन्यासी थमाने के लिए आते हैं। तो संन्यासियों की भी तो महिमा है ना। तो जैसे महिमा है देवी-देवताओं की, तैसे महिमा है संन्यासियों की।" (मु. 8.9.64 पृ.5 आदि) व्यभिचारी विदेशियों के प्रभाव से प्रभावित भारतवासी राजाओं में जिस समय कृष्ण पूजा को लेकर और 16,000 कृष्ण की रानियों का हवाला देकर अनेकों रानियाँ रखने की व्यभिचारी परम्परा चल पड़ी थी और यथा राजा तथा प्रजा भी व्यभिचार में आसक्त होने से तेजी से नरकगामी बनते हुए खतरनाक रसातल की ओर जाने लगी थी, उस समय द्वापर के अन्त में इस संन्यास धर्म की शुरुआत में गिरते हुए भारतवासियों को पवित्रता का संदेश दिया। जिससे भारत के राजाएँ अपनी भोग विलासता को त्याग करके तपस्वी जीवन बिताने लग पड़े और भारत पतन के गर्त में जाने से बच गया।

संन्यास धर्म की विशेषता है कि आदि में पवित्रता की पॉवर से त्यागी, तपस्वी और शुद्ध भारतीय पार्ट बजाने वाले होते हैं, जबकि ये सतोप्रधान स्टेज में होते हैं; परन्तु अन्त में यही संन्यासी तमोप्रधान होने पर भोगी, विलासी और शुद्ध विदेशियता का पार्ट बजाने वाले साबित हो जाते हैं। अच्छे-2 साहूकार घरों के गृहस्थियों के पास भी जो भोग-विलास के साधन-सामग्रियाँ और उच्च कोटि के वैभव नहीं होते वो भी इनके पास बहुतायत से देखे जा सकते हैं। कोई-2 संन्यासियों के पास तो अपने पर्सनल हेलिकॉप्टर भी घूमने-फिरने के लिए होते हैं। तात्पर्य है कि ये संन्यासी न भारतीय त्यागी-तपस्वी कुल के पक्के रहते हैं और न ही विदेशी भोगी-विलासी कुल के पक्के रहते इसलिए भारतीय शास्त्रों में इन्हें पाण्डवों के बीच नकुल अर्थात 'न इस कुल के, न उस कुल के' यह संज्ञा दी गई। 5 पाण्डवों में से एक पाण्डव का नाम न+कुल बताया गया। नकुल का अर्थ होता है नेवला। नेवलाई स्वभाव अर्थात् विषय-विकार रूपी विष उगलने वाले विषैले सर्पों को खण्डन करने का स्वभाव इनमें प्रबल होता

है। विषय-विष उगलने वाले धर्म हैं ही ये वाममार्गीय धर्म- इस्लाम धर्म, क्रिश्चियन धर्म, मुस्लिम धर्म और रूस का नास्तिकवाद। बाबा ने भी बोला है कि- "अन्त में जब संन्यासी निकलेंगे तो तुम बच्चों की विजय हो जावेगी"; क्योंकि यही संन्यासी असली ज्ञान को जानने के बाद विदेशी और विधर्मियों का भंडाफोड़ कर डालेंगे। भल संन्यासियों का मुख्य गुणधर्म कायरता वाली पवित्रता ही है; परन्तु आदि और अन्त में इनकी यही अनेक जन्मों की पवित्रता की पूँजी भारत के उत्थान में काम आती है। यही कारण है कि इन्हें अपनी कायरता वाली पवित्रता का भी बड़ा अहंकार रहता है। रूस के नास्तिक धर्म के बाद दुनिया का दूसरे नम्बर का अहंकार भी इन्हीं संन्यास धर्म की आत्माओं में सबसे जास्ती देखने में आता है; लेकिन थोड़ा बहुत अन्तर है। ये कम-से-कम निराकार परमपिता को तो मानते हैं। चलो शिवोऽहम कह देते हैं; लेकिन परमपिता सदाशिव ज्योति के गुणों को तो मानते हैं; लेकिन इनमें जो अहंकार है वो इतना ऊपर चढ़ जाता है कि महात्मा बुद्ध की तरह अपने को ही भगवान समझकर बैठ जाते हैं। यही बात बहुत घातक है।

● "वास्तव में साधु-संन्यासियों को तो भक्ति करना भी निषेध है। वह हैं ही निवृतिमार्ग वाले। तुम समझा सकते हो भक्ति तो है ही प्रवृत्तिमार्ग वालों के लिए। वह निवृत्तिमार्ग वाले जंगल में क्या भक्ति करेंगे। आगे यह भी सतोप्रधान थे तो सब कुछ उन्हों को जंगल में पहुँचाते थे। अभी तो देखो कुटियाएँ खाली पड़ी हैं; क्योंकि तमोप्रधान बनने कारण कोई उन्हों को पहुँचाता ही नहीं है। भक्तों की श्रद्धा ही नहीं रही। तो अब तो धंधे में लग गये हैं। करोड़पति पदमपति हैं।" (मु. 20.1.79 पृ.2 अंत) इसी संदर्भ में गीता में कुछ श्लोक भी दिए-

सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढ़स्तदोच्यते ॥6/4

{कामविकार के संकल्प सहित} **सब संकल्पों का संपूर्ण त्यागी तब योग** {की सर्वोच्च अव्यक्त स्थिति} **में चढ़ा हुआ कहा जाता है।**

काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः ।

सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ 18/2

कुछ बुद्धिमान कामना वाले कर्मों के परित्याग को संन्यास समझते हैं, जबकि अन्य विद्वान लोग सभी सांसारिक कर्मों के फल-त्याग को त्याग बताते हैं।

• "भारत पतित होने लगता है तो संन्यासी आकर थमाते हैं। इसकी सेवा का उनको फल मिलता है जो गवर्मेन्ट के भी गुरु बनते हैं ।"(मु. 13.5.73 पृ.2 अंत) ● "संन्यासी तो समझते हैं अभी हम अपन को राँग मान लेवें तो सभी फॉलोवर्स हमको छोड़ देंगे। रिवोल्युशन हो जाए। इसलिए अभी संन्यासी लोग समझते तुम्हारी मत पर चल अपनी राजाई नहीं छोड़ेंगे। पिछाड़ी में कुछ समझेंगे। अभी नहीं।" (मु. 5.9.70 पृ.3 अंत) ● "हर आत्माओं के साथ सम्पर्क में आते हुए संस्कारों को मिलाना यह भी इतना सहज अनुभव हो, जैसे भाषण करना सहज है।...

मुश्किल समझने के कारण उस समय क्या करते हैं? जैसे कहावत है- "दूरबाज़ खुशबाज़" तो उसी समय अपने को उस बात से दूर कर देते और किनारा कर लेते हैं। इसको भी कौन-से मार्ग की निशानी कहेंगे? निवृत्तिमार्ग वालों की। उस समय के लिए निवृत्त हो जाते हैं।... जैसे कमल का पुष्प निवृत्तिमार्ग वाला नहीं है, पूरी ही प्रवृत्ति की निशानी है। इसी प्रकार प्रवृत्तिमार्ग वाले कभी दूर नहीं भागेंगे; लेकिन (पारिवारिक) संगठन में आते हुए और सम्पर्क में आते हुए मुश्किल को सहज बनाएँगे। यह है आप विशेष आत्माओं का परिचय।" (अ.वा. 9.4.73 पृ.20 मध्य) ● "बाप कहते हैं- तुम हमारी कितनी ग्लानि करते हो! सर्वव्यापी कह कितनी बाप की इनसल्ट, डिफेम करते हो। अभी केस कौन चलावे? बाप आकर केस चलाते हैं।" (मु. 16.1.69 पृ.3 मध्यादि) ● "ईश्वर को सर्वव्यापी कहना यह तो सभी से बड़ा पाप है। भगवान को गाली देते हैं। जज आदि की कोई इज़्जत लेते हैं तो उनको फट से दण्ड दे देते हैं। केस आदि भी नहीं चलाते हैं। भगवान को भी बेइज़्जत करते हैं तो दण्ड मिल जाता है। बड़ा पाप बन जाता है।" (मु. 26.11.68 पृ.3 मध्यांत) ● "जो कुछ भी सुनाते हैं झूठ। ईश्वर सर्वव्यापी कहाँ लिखा हुआ है? मनुष्य नाम लेते हैं गीता का। गीता में तो भगवानुवाच है कि मैं बहुत जन्मों के भी अंत में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। तो फिर सर्वव्यापी हूँ- यह कैसे कहेंगे।" (मु. 24.11.67 पृ.3 आदि) ● "यह तो जानते हो सबका पापों का घड़ा भरा हुआ है। उसमें संन्यासी उदासी सब आ गये। ऐसा कोई कह न सके कि संन्यासी आदि सभी से जास्ती पतित न हैं। संन्यासियों को खुद भी पता नहीं है। वह क्या जाने हम राँग रास्ते पर हैं। पूछो, यह कहाँ सुना है कि ईश्वर सर्वव्यापी है? तो फिर कह देते गीता में है भगवानुवाच।" (मु. 4.5.75 पृ.1 मध्य) ● "अभी तुम बच्चे जानते हो बाप क्या समझाते हैं और गीता में क्या लिख दिया है। सुनाते क्या हैं। कहते भगवानुवाच, मैं सर्वव्यापी हूँ। बाप कहते हैं- मैं अपन को ऐसे गाली कैसे दूँगा कि मैं सर्वव्यापी हूँ। कुत्ते-बिल्ले सभी में हूँ। मुझे तो ज्ञान सागर कहते हो। मैं अपन को फिर कैसे कहूँगा। कितनी झूठ है।" (मु. 13.5.70 पृ.3 आदि) ● "कहेंगे कि संन्यासियों में तो पवित्रता का गुण है; परन्तु वह तो कह देते कि ईश्वर सर्वव्यापी है। गीता (कलाबद्ध) कृष्ण ने गाई है। यह कहना कितनी अपवित्रता है। इससे सभी का बुद्धियोग (परम पवित्र) बेहद के बाप से टूट जाता है। सचखण्ड स्थापन करने वाला कृष्ण नहीं है। कृष्ण तो सच खण्ड में रहने वाला है। सचखण्ड स्थापन करने वाला एक बाप है। उल्टी बात बतलाने से मनुष्य मात्र निर्धन के बन पड़े हैं।" (मु. 22.12.82 पृ.2 मध्यादि) ● "साधु अक्षर बेमाना, उनसे बेहतर मेहतर जो खाते मेहनत का खाना।" (मु. 7.1.70 पृ.3 अंत) ● "इन संन्यासियों आदि को अपना नशा कितना रहता है। वह पहले-2 नज़र रखते हैं साहूकारों में। बाबा पहले-2 नज़र रखते हैं गरीबों पर। गरीब निवाज़ है ना।" (मु. 28.6.70 पृ.2 अंत) ● "हठयोगी निवृत्तिमार्ग वाले संन्यासी कब प्रवृत्तिमार्ग वालों को राजयोग सिखा नहीं सकते।" (मु. 20.1.74 पृ.4

मध्यादि) ● "शंकराचार्य आदि यह सब भक्त हैं ना। उन्हों को कहेंगे पवित्र भक्त। भक्ति कल्ट तो है ना। जो पवित्र रहते हैं, (उन्हों के) बड़े-2 अखाड़े बने हुए हैं। उनका मान कितना है।" (मु. 9.11.66 पृ.2 मध्य) ● "संन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं, दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं।" (मु. 20.2.83 पृ.3 अंत) ● "कलियुगी गुरू लोग (अपन को) कह देते श्री-श्री 108 जगत गुरू। इसके लिए फिर बाबा ने समझाया है जब अपन को परमात्मा समझ अपनी पूजा बैठ कराते हैं तो उनको हिरण्याकश्यप कहते हैं।" (मु. 18.8.73 पृ.2 आदि) ● "जिनको संन्यास धर्म में जाना है वह घर में ठहरेंगे नहीं। उनसे संन्यासी बनने का पुरुषार्थ ज़रूर होगा।" (मु. 7.1.87 पृ.2 अंत) ● "सबसे जास्ती कुंभकरण कौन? जिन कुंभकरणों का मेला लगता है, जो अज्ञान नींद में सोए हुए हैं।" (मु. 7.1.87 पृ.1 मध्यादि) ● "यह मुफ्त में खा-पी खलास कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आए फसल को खा चले जाते हैं। यह साधु-संत भी मकर हैं।... बाप समझाते हैं कि यह भक्तिमार्ग के अनेक (प्रकार के लाल-पीले-सफ़ेद कपड़े वाले) गुरु हैं।" (मु. 10.5.68 पृ.2 मध्य रात्रि.) ● "दुर्गति कौन करता है? जरूर यह 'गुरू लोग' ही कहेंगे।" (मु. 24.8.74 पृ.1 अंत) ● "सबसे जास्ती दुख देने वाला (रावण) कौन है?... बाप कहते हैं इन गुरुओं ने परम+आत्मा की महिमा गुम कर दी है।" (मु. 20.1.98 पृ.1 अंत) ● "संन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का (लॉ) नहीं। सभी कुछ छोड़ा फिर इतने पैसे क्यों रखते?" (मु. 5.1.72 पृ. 3 अंत) ● "इन संन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया ज़रूर है।... यह संन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता।" (मु.22.6.91 पृ.2 आदि)

<u>मुस्लिम धर्म</u>:- (1400 वर्ष पूर्व से)

अगला धर्म है- 'मुस्लिम धर्म'। यह धर्म मुहम्मद के द्वारा फैला, जब अरेबियन्स अर्थात् इस्लामियों की मूर्ति पूजा की अंधश्रद्धा बहुत अति को पहुँच चुकी थी। पहले तो वे स्लामी भी मूर्ति पूजक थे। तो इस अन्धश्रद्धा का मुहम्मद ने आकर खण्डन किया और जितने भी इस्लामी थे ज्यादा-से-ज्यादा मुहम्मद को फॉलो करने लग पड़े; क्योंकि इस्लाम धर्म भी मनुष्य के द्वारा स्थापित किया हुआ धर्म है, इसलिए मनुष्य के द्वारा स्थापित किया हुआ धर्म ज्यादा समय तक सात्विक स्टेज में नहीं रह सकता। अंधश्रद्धा, अंधविश्वास और काम वासना के आधार पर उस धर्म का तेजी से पतन हुआ। उस धर्म को नया रूप देने के लिए मुहम्मद ने आकर मुस्लिम धर्म स्थापन किया। ऐसे नहीं कि मुस्लिम धर्म में काम वासना नहीं रही। काम वासना तो दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़नी ही थी, न कि घटनी थी; क्योंकि खून तो वही है इस्लामियों वाला। हिस्ट्री में एक बात हुई कि यह जो अरेबियंस का अरब देश है वो रेगिस्तानी इलाका है, वहाँ कुछ भी पैदाइश नहीं होती थी और अभी भी नहीं होती है। अभी 100/250 वर्षों के अन्दर-2 तेल के भण्डार निकल पड़े तो इसके कारण ये बहुत धनवान हो गए, नहीं तो पहले वहाँ बहुत गरीबी थी; क्योंकि जब तेजी से जनसंख्या बढ़ी तो वहाँ का रेगिस्तानी इलाका इनको धन-सम्पत्ति नहीं दे सका और जब ये

गरीब होने लगे तो इनकी ऐशो-आराम, भोगी-विलासी और अय्याशी की ज़िन्दगी बिताने के जो संस्कार हैं उसमें बाधा आने लगी। तो इसकी पूर्ति के लिए इनकी नज़र खुशहाल भारत देश के ऊपर पड़ी और इन्होंने लाखों की तादाद में इकट्ठे होकर बड़ी-2 सेनाएँ बनाकर भारत के ऊपर हमला करना शुरू कर दिया। लुटेरों की तरह मुस्लिमों ने भारतवर्ष को लूटा, आतताइयों की तरह तंग किया, आगजनी (आग लगाई), लूट-मार की। इनके द्वारा भारत पर किए गए बर्बरता पूर्ण आक्रमण इतिहास में बहुत प्रसिद्ध हैं। तो दुनिया में हिस्ट्री के अन्दर यह 'लोलुप अर्थात् लोभी धर्म' साबित हो जाता है। कामी तो हैं ही; लेकिन साथ में लोलुप भी हैं। लोभ अर्थात् लोलुपता जितना इनके अन्दर समाई होती है उतना लोभ दुनिया के किसी भी धर्म के अन्दर समाया हुआ नहीं है और ना ही इस लोभ के आधार पर दुनिया का कोई धर्म इतना आक्रामक और अत्याचारी बना। इस संदर्भ में गीता में एक श्लोक आया है-

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥ 16/12

वे सांसारिक आशाओं के सैकड़ों फंदों में जकड़े हुए काम-क्रोध के वशीभूत होकर कामवासना को भोगने के लिए अन्यायपूर्वक धनसंग्रह करना चाहते हैं।

● "देखो, मुहम्मद गज़नवी ने मंदिर को लूटा था ना। अगर उनको यह मालूम होता कि हमारे बाप का मंदिर है तो लूटेंगे थोड़े ही।" (मु. 28.10.72 पृ.3 आदि)

प्रवृत्ति च निवृत्ति च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥ 16/7

आसुरी गुणों वाले मनुष्य करने योग्य कर्म और त्यागने योग्य कर्म को भी नहीं जानते। उनमें न शुद्धता, न सदाचार और सत्य भी नहीं होता।

● "भारत कितना सॉलवेन्ट था। हीरे-जवाहिरों के महल थे।... सोमनाथ का मन्दिर था ना। एक मन्दिर तो नहीं होगा। यहाँ भी शिव के मन्दिर, ल.ना. के मंदिर ढेर हैं ना। वहाँ भी राजाएँ मंदिर बनाते हैं, जो साहूकार होते हैं। सोमनाथ के मंदिर में इतने तो हीरे जवाहिर थे जो मुहम्मद गज़नवी ऊँट भरकर ले गए। इतने माल थे। ऊँट तो क्या कोई लाखों ऊँट ले आए तो भी भर न सके। सोने, हीरे-जवाहिरों के तो अनेक महल थे। मुहम्मद गजनवी तो अभी आया।" (मु. 21.6.75 पृ.2 आदि) ● "माथा कौन टेकते हैं? भेड़िया। मुसलमानों की ईद में देखो रंग-बिरंगे कपड़ों वाले माथा नीचे कर नमाज़ पढ़ते हैं। अगर कोई उस समय देखे तो ऐसा लगता है जैसे भेड़ियों का झुण्ड बैठा हो। अगर कोई उनका फोटो देखे तो कोई नहीं कहेगा कि यह मनुष्य हैं। भेड़ियों का झुण्ड दिखाई पड़ता है।" (मु. 8.10.65 पृ.6 मध्यादि) ● "स्वर्ग में हीरों जवाहरों के कितने महल थे। भक्तिमार्ग में भी कितना धन

था। जो सोमनाथ का मंदिर बनाया है। एक-2 (हीरा) पत्थर चार लाख कीमत वाले थे। वो सब कहाँ चले गये हैं। कितने लूटकर ले गये। मुसलमानों ने भी जाकर मस्जिदों में लगा दिये हैं। इतना अथाह धन था।" (मु. 26.2.67 पृ.2 मध्य) ● "लोभ वाला ज़रूर कुछ चोरी करता होगा। यह तो शिवबाबा का भण्डारा है। इससे तो पाई की भी चोरी नहीं करनी चाहिए। यह ब्रह्मा तो ट्रस्टी है। बेहद का बाप भगवान तुम्हारे पास आया है। भगवान के घर में कभी कोई चोरी करता होगा? स्वप्न में भी नहीं।"(मु. 9.7.68 पृ.2 मध्य) ● "लोभ रखना चाहिए- बेहद के बाप से वर्सा लेने का और कोई चीज़ का लोभ नहीं। नहीं तो सारा बुद्धियोग उसमें चला जाता है।" (मु. 27.10.82 पृ.3 आदि)

● "दुश्मन आते हैं क्यों? धन के पिछाड़ी। भारत में इतने सब अंग्रेज़, मुसलमान क्यों आये? पैसा देखा। पैसे बहुत थे। अब पैसे नहीं हैं। तो और कोई है नहीं। पैसे ले खाली कर गये।" (मु. 1.8.84 पृ.3 अंत)

● "मुसलमानों का मज़हबी पागलपना यह पुराना है।" (मु. 13.5.72 पृ.3 मध्यादि) माना मुसलमान, धर्म की बातों को लेकर पागलपन में आ जाते हैं।

● "मुसलमानों के बहुत हैं। (अफ्रीका) में कितने साहकूार हैं। सोने हीरों की खानियाँ हैं। जहाँ बहुत धन देखते हैं तो उस पर चढ़ाई कर धनवान बनते हैं। क्रिश्चियन लोग भी कितने धनवान बनते। भारत में भी धन है; परंतु गुप्त।" (मु.27.8.69 पृ.1 अंत)

सिक्ख धर्मः- (भारत के सहयोगी)

इसके बाद अगला धर्म है- 'सिक्ख धर्म'। मुसलमानों का अत्याचार द्वापर के अन्त (सातवीं/आठवीं) सदी से शुरू हुआ यानी कलियुग के आदि से ही मुसलमानों के आक्रमण शुरू हो चुके थे। पहला-2 आक्रमण मोहम्मद बिन कासिम के द्वारा कलियुग के आरम्भ में हुआ (अर्थात् आज से 1200-1300 वर्ष पूर्व)। उस समय से लेकर मध्य कलियुगांत तक आते-2 मुसलमानों का वर्चस्व दुनिया में इतना जास्ती हो गया कि करीब-2 सारे भारत में मुसलमानों का राज्य फैल गया सिर्फ भारत में ही नहीं दुनिया में फैलने लगा। इन लोगों के अत्याचार भी खास भारत में इतने बढ़ गए जो सीमा से बाहर थे। ज़बरदस्ती तलवार की नोंक से इन्होंने हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। तो उस अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए परमधाम से एक ऐसी आत्मा आई जिसने भारत के उन सोए हुए राजपूतों (क्षत्रियों) को जगाया और उनको ऐसा ज्ञान दिया कि वे हट्टे-कट्टे राजपूत, क्षत्रिय धर्म की आत्माएँ जिनमें अक्ल थोड़ी कम होती थी, वो अंग्रेजों और मुसलमानों से कितनी जी जान लगाय टक्कर ली। उन्होंने विदेशियों से, विदेशी आक्रमणकारियों से जितनी टक्कर ली है, जितने बलिदान सिक्खों ने दिए हैं, उतने बलिदान हिन्दुओं ने भी नहीं दिए हैं। सिक्ख धर्म ने हमेशा भारत का सहयोग किया। ये जितने भारत के, भारतीय परम्पराओं के और भारतीय सभ्यता के सहयोगी, नज़दीकी रहे उतना कोई दूसरा धर्म भारत का सहयोगी और

नज़दीकी नहीं बना। बौद्धी भी आदि में सहयोगी रहे, अहिंसा का पाठ पढ़ाया; लेकिन बाद में इनमें कायरता भरी अहिंसा के कारण कमज़ोरी आ गई। विदेशी आक्रान्ताओं ने बोद्धियों पर आक्रमण किए तो ये झुक गए, अपने बीवी, बाल-बच्चों को भी सौंप दिया। इस प्रकार ये बौद्धी सहज रूप से उनके अधीन हो गए, इसलिए भारत के सहयोगी नहीं बन सके। बाकी रहे संन्यासी, उन्होंने तो दुनिया को ही छोड़ दिया, गृहस्थ जीवन को ही छोड़ दिया, बिना गृहस्थी जीवन के भला राजाई कैसे चल सकती थी! तो उनका भी सहयोगी होना, ना होना बाद में बराबर हो गया। जब तक सतोप्रधान थे तब तक संन्यासी भारत के सहयोगी बने रहे; लेकिन जब तमोप्रधान बने तो इनका सिक्खों जैसा कोई सहयोग नहीं रहा। भारतीय राइट साइड का एक सिक्ख धर्म ही ऐसा है कि 500 वर्ष पहले जब से खास यह धर्म उदय हुआ तब से लेकर अंत तक ये भारत के सहयोगी बने रहे हैं।

राम-कृष्ण की परम्पराओं के ये पक्षपाती बने रहे। भले ही निराकार को मानने वाले रहे; लेकिन साथ में देवी-देवताओं की उपासना की भावना भी इनमें रही। राम-कृष्ण की भी इन्होंने महिमा की है, कभी ग्लानि नहीं की। यही एक ऐसा धर्म है जिसे बाबा ने मुरलियों में दूसरे नम्बर का प्रवृत्तिमार्ग का धर्म बताया है। सारी दुनियां में पहले नम्बर का प्रवृत्तिमार्ग का धर्म है सनातन देवी-देवता धर्म और दूसरे नम्बर का धर्म है सिक्ख धर्म। ● "पहले-2 है देवी-देवता धर्म, सेकेंड नम्बर में फिर है सिक्ख धर्म। इसलिए सिक्ख धर्म बहुत नया है; क्योंकि ब्रदर्स-सिस्टर्स हैं।" (मु. 10.8.73 पृ.2 मध्य) ● "प्रवृत्तिमार्ग दूसरे नम्बर में गुरू नानक का चला है। पंजाब में महाराजा-महारानी भी हुए हैं।" (मु. 9.8.73 पृ.1 अंत रात्रि) तो नई दुनिया स्वर्ग के फाउंडेशन में सब धर्मों के मुकाबले यही एक ऐसा धर्म साबित होता है जो प्राय: लोप हुए प्रवृत्तिमार्गी देवी-देवता सनातन धर्म का फाउंडेशन बताया जा सकता है; क्योंकि जो सृष्टि के आदिकालीन देवी-देवताएँ थे वो तो संग के रंग में आकर बिल्कुल ही भ्रष्टाचारी बन गए; क्योंकि सबसे पुराना धर्म है। उनको तो इतनी अक्ल ही नहीं रही, बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि बन जाते हैं; लेकिन सिक्ख धर्म कोई पुराना धर्म नहीं है। यह तो कलियुग के मध्यांत में आने वाला नया धर्म है, बाद में आता है। तो जो धर्म बाद में उदय होते हैं वो ना तो जास्ती सतोप्रधान बनते हैं और ना ही जास्ती तमोप्रधान बनते हैं। तो अन्त में भी इनमें कम-से-कम इतनी तो अक्ल रही कि कमा करके खाना है अर्थात् मेहनत करके खाना है। अपने धर्म को नहीं छोड़ना है और अपने देश की ही बढ़ोतरी में रहना है। इन्होंने हराम की कमाई खाना कभी भी पसन्द नहीं किया। ये आज भी बड़े मेहनतकश हैं। तो यह सिक्ख धर्म जो है वो देवी-देवता धर्म का फाउंडेशन बनाया जाता है। यही देवी-देवता धर्म का असल सहयोगी धर्म है।

हालाँकि सिक्ख धर्म की आज थोड़ी-सी आत्माएँ ऐसी भी हैं जो विदेशियों के प्रभाव से प्रभावित होकर आतंकवादी बन गई। वो तो हर धर्म लास्ट में पहुँचकर कुछ-न-कुछ तमोप्रधान बनता ही है। यह तो ड्रामा बना

हुआ है। आज भी सिक्खों का पंजाब ऐसा हिस्सा है, जो भारत के लिए सबसे जास्ती सहयोग देने के लिए तैयार रहता है और तैयार रहेगा।

● "गुरुनानक 500 वर्ष पहले आया। ऐसे तो नहीं सिक्ख लोग कोई 84 जन्म का पार्ट बजाते हैं। बाप कहते हैं- 84 जन्म सिर्फ तुम ऑलराउण्डर ब्राह्मणों के हैं।... सिक्ख लोगों के कितने जन्म होते होंगे ? एवरेज आयु 50 वर्ष लो तो 10-12 जन्म लेते होंगे। अर्थात् गुरुनानक के भी 10 जन्म होंगे। कृष्ण के लिए कहेंगे 84 जन्म, गुरुनानक के लिए कहेंगे 10 जन्म... यह बुद्धि का काम है ना।" (मु. 30.12.88 पृ.1 अंत) ● "गुरुनानक ने भी भगवान की महिमा गाई है कि वही आकर 'मूत-पलीती' कपड़ धोती' करते हैं। जिसकी ही महिमा है एकोअंकार... शिवलिग के बदले अकाल ताख्त निशान रख दिया है।" (मु. 12.3.76 पृ.3 आदि) ● "तुम सिक्ख लोगों को भी समझा सकते हो। ग्रंथ में तो पूरा वर्णन है। और कोई शास्त्र में इतना वर्णन नहीं है जितना ग्रंथ, जप साहेब, सुखमणी में है। अक्षर ही दो हैं। बाप कहते हैं- साहेब को याद करो तो तुमको 21 जन्मों लिए सुख मिलेगा। इसमें मूँझने की कोई बात नहीं। बाप सहज करके समझाते हैं। कितने हिन्दू ट्रान्सफर हो जाकर सिक्ख बने हैं।" (मु. 15.12.67 पृ.3 आदि)

आर्यसमाजः-

इसके बाद अगला धर्म है- 'आर्यसमाज'। इसका विशेष गुणधर्म है- 'प्रजा के प्रति मोह'। जनसंख्या की वृद्धि हो जाए, ज्यादा से ज्यादा लोग हमारे फॉलोवर्स बन जाएँ, हमारी नेतागिरी के अन्दर ज्यादा-से-ज्यादा लोग बने रहें। यानी ज्यादा-से-ज्यादा वोट बनाने की परम्परा इन्हीं आर्यसमाजियों में है। इसलिए मुरलियों में बाबा ने इनडायरैक्टली इन आर्यसमाजियों को कौरव कहा है। ● "काँग्रेस को कोई कौरव कहा तो ये कोई इनसल्ट नहीं है। वो अर्थ को समझते ही नहीं हैं और यहाँ तो राइट अक्षर दिया जाता है ना।... कौरव का अर्थ ही है काँग्रेस (काँव-2 की रेस)। ये पंचायती राज्य को ही तो काँग्रेस कहा जाता है ना। तो कुरू (अर्थात् कर्मेन्द्रियों से 'करो') जो थे वो पंचायती राज्य थे।" (मु.7.9.65 पृ.3 मध्य) कौरव भी भारतीय थे; लेकिन ये अर्धनास्तिक हैं। निराकार को तो मानते हैं, यज्ञ परम्पराओं की यज्ञ परिक्रियाएँ भी करते हैं; लेकिन साकार देवी-देवताओं को नहीं मानते हैं। ● "आर्य समाजी लोग देवताओं के चित्रों को नहीं मानते हैं। तुम्हारे पास चित्र देखते हैं तब ही बिगड़ते हैं।" (मु. 5.11.71 पृ.2 मध्य)

इनका कहना है कि इसी दुनिया में स्वर्ग है और इसी दुनिया में नर्क है। आर्यसमाजियों का विशेष गुणधर्म है प्रजा के प्रति मोह, कैसे? जब से इस धर्म के स्थापक महर्षि दयानन्द आए तब से उन्होंने एक ऐसा रास्ता भारत के अन्दर खोल दिया जिससे दुनिया के कोई भी धर्म की आत्माएँ हो, कोई भी जाति के व्यक्ति हो, नीच-से-नीच व्यक्ति हों, उनको उन्होंने हिन्दू बनाना शुरू कर दिया। यह नहीं देखा कि हम क्वालिटी बना रहे हैं या संख्या बढ़ा

रहे हैं। क्वालिटी भले ही गिर जाए; परन्तु तादाद बढ़ जानी चाहिए। बुद्धि में यह बात नहीं आई कि शेर जैसा एक बच्चा पैदा करना ज्यादा श्रेष्ठ है या गीदड़ों जैसे अनेक बच्चों को पैदा करना ज्यादा अच्छा है। द्वैतवादी द्वापुर से भारतवर्ष की देवी-देवता धर्म वाली जो कमज़ोर आत्माएँ टाइम-टू-टाइम दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होती रहीं; वे ही दूसरे धर्मों में कन्वर्ट हो हिन्दू बने हैं। दूसरे धर्मों की आत्माएँ कभी भी हिन्दू नहीं बनीं और ना ही हिन्दुओं ने उन्हें कभी अपने में मिक्स किया। तो देवी-देवता धर्म से पुनः पुनः दूसरे धर्मों में जो अवसर पाते ही कन्वर्ट होते रहे वही बाद में आकर आर्यसमाजी बने मतलब है कि देवी-देवता धर्म की जो अवसरवादी कच्ची आत्माएँ थीं, वो ही कन्वर्ट होकर कलियुगांत में आकर आर्यसमाजी बनती हैं। इस्लाम धर्म आया तो ये इस्लाम धर्म में चले गए। इस्लाम धर्म में जब इन्हें सुख नहीं मिला तो ये क्रिश्चियन धर्म में चले गए। उसमें भी सुख नहीं मिला तो मुस्लिम धर्म में कन्वर्ट हो गए। ऐसे एक धर्म से दूसरे धर्म में और दूसरे से तीसरे धर्म में जहाँ-2 सुख पाने का अवसर देखा वहाँ-2 नए-2 सात्विक धर्मों में घुसते चले गए; लेकिन गीता में जैसा बताया है- स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ (3/35) बाबा ने भी बताया है ● "अपने धर्म में रहना चाहिए। पर-धर्म दुख देने वाला है।" (मु. 16.2.73 पृ.3 आदि) गीता में ये भी आया है-

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।

अयोगी/भोगी व्यक्ति में सात्विकी बुद्धि नहीं होती और अयोगी व्यक्ति में भावना भी नहीं होती।

तो इनकी यह वृत्ति बनी रही कि हमारा अपना कोई एक निश्चित पक्का धर्म नहीं है। यहाँ तक कि धर्म-निरपेक्ष राज्य की ही स्थापना कर दी अथवा जो नया-2 धर्म आया उसी धर्म को गले लगा लिया। जैसे अवसर देखा वैसे कन्वर्ट होते गए; जैसे आज-कल के अवसरवादी नेताएँ हैं- जहाँ देखी तवा बारात, वहाँ बिताई सारी रात। वहीं दूसरी पार्टी में अपने को ट्रांसफर कर लिया। ऐसे हो महर्षि दयानन्द के द्वारा ऐसे धर्म की स्थापना की बात सुनी तो फट से ऐसी आत्माएँ ललचायमान हो गईं। इनके अन्दर भारत के अंतिम थर्ड क्लास सुख भोगने के पुराने संस्कार भरे हुए हैं। फिर सतयुग-त्रेता जो स्वर्गीय सुख, इनकी आत्मा ने पहले अनुभव किए, उतने सुख कहीं भी किसी भी धर्म में, किसी भी जन्म में अनुभव कर ही नहीं पाए। धर्म बदलने से कहीं सुख थोड़े ही हो सकता है। जहाँ पक्का धर्म होता है वहाँ शक्ति होती है और शक्ति से ही सुख भोगा जाता है। ● "कहा जाता है रिलीजन इज़ माइट। आत्मा के स्वधर्म में टिकना है। इससे ही ताकत मिलती है।" (मु. 19.2.68 पृ.1 अंत) जब आत्मा में शक्ति ही नहीं तो सुख क्या भोगेगा! अन्दरूनी शक्ति हो या बाहरी शक्ति, जहाँ धर्म के प्रति मान्यता नहीं वहाँ शक्ति भी नहीं रह सकती। तो हर धर्म में जो कन्वर्ट होती हुई आत्माएँ अपने को बिल्कुल कमज़ोर कर बैठती हैं तो कमज़ोर हुई आत्माएँ अंत में आर्यसमाजी बन गईं। जो धर्म की इतनी कमज़ोर आत्माएँ हैं कि राजसत्ता चलाने के काबिल ही नहीं। इनके राज्य में तो वो हिसाब होता है जो बाबा ने भी बोला है ● "यह कौरव गवर्मेन्ट प्रजा की

'अंधेर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा'- यह बात हो जाती है।" (मु. 26.9.63 पृ.6 अंत) इसलिए प्रजा के ऊपर प्रजा के शासन को बाबा ने बेकायदे बताया है। ● "प्रजा का प्रजा पर राज्य है बेकायदे।" (मु. 4.2.67 पृ.1 मध्य) ● "गवर्मेन्ट भी धर्म को नहीं मानती। अपने धर्म को भूल गये हैं। उनका नाम ही है, कौरव गवर्मेन्ट इरीलिजीयस, अनराइटियस। अनराइटियस है तो अनलॉफुल भी है। अनलॉफुल है तो इनसॉलवेन्ट है।" (मु. 16.7.73 पृ.2 आदि)

● "गाँधी का नाम ज़रूर लेना; क्योंकि गाँधी को तो अवतार मानते हैं ना। बहुत अवतार मानते हैं। भला अवतार क्यों मानते हैं? अवतार तो सबको मानते हैं। जो-2 धर्म की स्थापना करते हैं, उनको यह लोग अवतार मानते हैं। क्राइस्ट को किसका अवतार मानेंगे? क्रिश्चियन धर्म का। बौद्ध(बुद्ध) को किसका अवतार मानेंगे?... बुद्ध (बौद्ध धर्म) स्थापन करने। यह भी अवतार मानते हैं। पर क्या अवतार मानते हैं? क्या किया? इन्होंने आ करके कौरव राज्य स्थापन किया यानी प्रजा का प्रजा पर राज्य स्थापन किया। होना चाहिए न। नहीं तो कौरव-पांडव आए कहाँ से?" (मु. 26.9.63 पृ.1 अंत) इनकी भारत में जो नीति है वह आज भी कौरव, काँग्रेसी गवर्मेंट की नीति है कि धर्म-निरपेक्ष राज्य अर्थात् हमें ऐसा राज्य चाहिए जिसमें हमें किसी धर्म की अपेक्षा नहीं। धर्म क्या चीज़ होती है- इससे राज्य का कोई कनेक्शन नहीं। तुम धर्म की बात अपनी अलग करो। तुम्हारा राज्य सत्ता से क्या मतलब? धर्म को जब राजनीति से अलग कर दिया जाता है तो न धर्म में ताकत रहती, न राजनीति में ताकत रहती है। अंग्रेजों से हिंदुओं ने अर्थात् हिंदुस्तान ने छुटकारा पा लिया। गाँधी जी ने क्या किया? अंग्रेजों से मुक्ति दिलाई; लेकिन इन कौरव काँग्रेसियों के पंजे में हमको अच्छी तरह फंसा दिया। ● "काँग्रेसियों ने फिरंगियों को निकाला तो राजाओं से राजाई (भी) छीन ली। राजा नाम ही गुम कर दिया है।" (मु. 11.1.73 पृ.2 मध्यादि) नाम रख दिया कौरव। कौरव-(कुत्सितं रवं यस्य) कौ+रव अर्थात् कौओं की तरह कुत्सित झूठी भाषणबाज़ी रूपी शोरगुल करने वाले (काँग्रेसी), जिन्होंने धर्मयुक्त आचार-विचार, आहार-व्यवहार का 5 स्टार होटलों में सर्वथा त्याग कर दिया है, जिन्होंने अवतरित परमात्मा को जानने पर भी, मानने से इन्कार कर दिया है। कौ माना कौवा, रव माना शोरगुल। कौवों की तरह शोरगुल बहुत करते हैं- हम इतनी सुख-समृद्धि लाएँगे, टेलीविज़न में, रेडियो में, पब्लिक में भाषणबाज़ी करना हम इतने नलकूप लगाएँगे, इतने गाँवों में हमने पानी, बिजली की व्यवस्था कर दी है और पानी, बिजली की व्यवस्था कहीं पर भी सही नहीं है। ज्यादातर गरीब पब्लिक को और ही ज्यादा परेशानी है। जैसे कौवे गंद खाने वाले होते हैं वैसे ये भी गंद खाने के लिए बड़े-2 होटल तैयार करते हैं। फाइवस्टार होटल, नाम कितना बुलन्द; लेकिन उन होटलों में जितना व्यभिचारी का गंद चलता है वो किसी को पता ही नहीं। तो न इनके पास प्योरिटी रह सकती है और ना प्रॉस्पेरिटी रह सकती है। इनके राज्य में प्रजा सुखी नहीं रह सकती; क्योंकि अनलॉफुल राज्य है। यह भारत का सबसे नीचा गिरा हुआ धर्म है और ही तामसी स्टेज का धर्म है। यह अन्तिम

200 वर्षों के अन्दर दुनिया में पनपने वाला धर्म है। आखरीन नास्तिक धर्म की बढ़ोतरी होती है जो दुनिया का लास्ट अधर्म है।

आर्यसमाज धर्म की जो आधारमूर्त नारायण बनने वाली आत्मा होगी, जिसने सबसे जास्ती लिटरेचर छपाय के बाँटा होगा, लिटरेचर की सर्विस की होगी; क्योंकि लिटरेचर से प्रजा निकलती है; लेकिन राजाई के वारिसदार मुश्किल ही कोई निकलते। वारिसदार तो इंडिविजुअल सेवा करने से निकलते हैं।

<u>नास्तिक धर्मः-</u>

एक तरफ महर्षि दयानन्द ने आकर आर्यसमाज धर्म चलाया और बाद में दूसरी तरफ रशिया में लेनिन और स्टालिन ने आकर नास्तिकवाद का आरोपण कर दिया। जितने भी वहाँ के बड़े-2 जार राजाएँ थे उनका कत्लेआम करवाया। तो ये दोनों धर्म, आर्यसमाज और रशिया का कम्यूनिज्म (नास्तिकवाद) ये ऐसे धर्म हैं जो राजाई को पसन्द ही नहीं करते। ना ही राजाओं को पसन्द करते हैं और न उनकी प्रजा में रहना पसंद करते हैं। अंग्रेज गवर्मेन्ट के समय थोड़े से राजाएँ थे जिनको कम-से-कम पेन्शन व उपाधि देकर उनका राजा नाम तो कायम रखा था; लेकिन जब से यह नास्तिक वाद और कौरव गवर्मेन्ट आई तब से यह हाल हुआ कि राजाओं का नामो-निशान ही गुम कर दिया। इस प्रकार दसवाँ आखिरी अधर्म है नास्तिकवाद। इन्हें अपने कर्तापने का बड़ा अहंकार रहता है। जब गीता में भी बोला है -

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 3/27

सब कार्य सब प्रकार से अनादि निश्चित प्राणी स्वभाव अर्थात् प्रकृति के सात्विक, राजसी और तामसी गुणों द्वारा किए जा रहे हैं, जिस अहंकार से विमूढ़ बना पुरुष ऐसा मानता है कि केवल मैं ही करने वाला हूँ।

ये नास्तिक न आत्मा को मानते हैं, न परमात्मा को मानते हैं, न स्वर्ग को मानते हैं, न नर्क को मानते हैं। ये सिर्फ देह, देह के पंचतत्वों को ही सबकुछ मानते हैं। दैहिक पंचतत्वों के विश्लेषण में इनकी बुद्धि रम गई है। देह माने मिट्टी। तत्वों के अणु-2 का इन्होंने बुद्धि से विश्लेषण कर डाला और अणुबॉम्ब, (एटमबॉम्ब) बना दिया अर्थात् दुनिया के लिए खतरा पैदा कर दिया। अपने लिए भी ये आत्माएँ कन्स्ट्रक्शन करने वाली नहीं हैं, बल्कि डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माएँ ही हैं। परमात्मा के कार्य में ये जिगरी सहयोगी नहीं बनती हैं। लेकिन परमात्मा भी चतुर सुजान है। डिस्ट्रक्शन के स्थूल कार्य में ऐसी आत्माओं को ही निमित्त बनाता है। एक तरफ परमात्मा आता है तो देवी-देवता सनातन धर्म की आत्माओं में ज्ञान का बीजारोपण करता है और उसके लिए भारत में विशेष आत्माओं को निमित्त बनाता है और दूसरी तरफ नास्तिकवादी रूस में ऐटमिक एनर्जी का निर्माण शुरू होता है। यह

एटमिक इनर्जी की ईजाद भी इन्हीं लोगों की है। (अमेरिकन क्रिश्चियन्स ने तो इसको बाद में अपनाया) तो ये हुए अहंकारी रशियंस जिनका मुख्य गुणधर्म ही है कर्तापने का 'देह अहंकार' जो भारतवासी कौरवों से आता है।

जो नास्तिक होते हैं उनका तो नियम-कानून ही होता है- "यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्। ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्।" ऋण/उधार लेते रहो, घी पीते रहो। मर जाने के बाद कौन किसको चुकाता है! जब तक जियो सुख से जियो। ● "बाप की भी निंदा कराने वाले, लून-पानी होने वाले ठौर न पाएँ। वह आसुरी बन जाते हैं। उनको नास्तिक भी कहा जाए। आस्तिक होने से कब लड़ न सके। न लड़ना यहाँ ही सीखना है। जो फिर 21 जन्म आपस में प्रेम रहेगा।" (मु. 31.7.<u>68</u> पृ.1 अंत) ● "बाकी कोई से आँख लगाना, बाइसकोप देखना यह सब व्यर्थ टाइम गँवाना है। बाप कहते हैं- अशरीरी बन मुझे याद करो। अगर बाप का फरमान नहीं मानते तो गोया नास्तिक ठहरे।" (मु. 4.11.69 पृ.2 मध्य)

इन उपरिवर्णित सिद्धांतों के आधार पर इन धर्मों में बताई गई कोई भी आत्मा पहचानी जा सकती है।

● "रिज़ल्ट आऊट बापदादा मुख द्वारा नहीं करेंगे या कोई कागज व बोर्ड पर नम्बर नहीं लिखेंगे; लेकिन रिज़ल्ट आऊट कैसे होगी? आप स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं के प्रमाण अपने-2 निश्चित नंबर के योग्य समझेंगे और सिद्ध करेंगे। ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति फाइनल रिज़ल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे और चलन से दिखाई देंगे।" (अ.वाणी 27.5.74 पृ.56 अंत)

● "पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नम्बर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नम्बर नहीं देंगे; लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है।" (अ.वाणी 30.7.83 पृ.2 आदि)

<u>वृक्ष के 3 हिस्से</u>

जड़ों के भाग में ये तीन ग्रुप हैं- लेफ्ट साइड की जड़ें, राइट साइड की जड़ें और देवी-देवता सनातन धर्म की बीच की प्राय: लोप हुई जड़ जिस पर सृष्टि रूपी वृक्ष के मुखिया मात-पिता बैठे हुए दिखाए गए हैं। ये हुआ पहला हिस्सा।

लेफ्ट साइड में और राइट साइड में बाईप्लाट जड़ों पर जो ब्राह्मण बैठे हुए हैं उनमें राइट साइड की जो बाईप्लॉट जड़ें हैं, वो भारतीय धर्मों की जड़ें हैं। अर्थात् बौद्ध धर्म, संन्यास धर्म, सिक्ख धर्म और आर्यसमाज की आधारमूर्त जड़ें। ये वे जड़ें हैं जो ऐसा रस लेती हैं जिनसे भारतीय पवित्रता के धर्म का पोषण होता है। राइट साइड में नम्बरवार भारतीय धर्मों की जो डालियाँ दिखाई गई हैं उनको इन्हीं राइट साइड की जड़ों से रस मिलता है। महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द- ये सभी जितने भी राइट साइड के धर्म पिताएँ हैं वो पवित्रता (ब्रह्मचर्य) को विशेष महत्व देने वाले हैं; इसलिए ये राइटियस धर्म हुए। इनको इन राइट साइड की जड़ों से रस मिलता है और जड़ों को जन्म देने वाले कोई गुप्त बीज भी होते हैं, जो यज्ञ के आदि और अंत में भी बीज बनकर

इन जड़ों का बीजारोपण करने वाले होते हैं, जिनसे ये जड़ें निकलती हैं। तो यह हुआ राइट साइड का दूसरा हिस्सा।

लेफ्ट साइड की बाईप्लॉट जड़ों का तीसरा हिस्सा ऐसी जड़ें हैं जो संगमयुग में ऐसा फाउंडेशन लगाती हैं या ऐसा फाउंडेशन लगाने वाली ब्राह्मण आत्माएँ यज्ञ के अन्दर आती हैं जो दूसरे, लेफ्टिस्ट धर्मों से आई हुई हैं। लेफ्टिस्ट धर्मों में भारत से कन्वर्ट होकर अनेक जन्म रही हुई हैं। कोई इस्लाम धर्म में, कोई क्रिश्चियन धर्म में, कोई मुस्लिम धर्म में, कोई रूस के नास्तिकवाद में। तो वो आत्माएँ जब संगमयुग में ब्राह्मण धर्म में आती हैं, परमात्मा उनको खींचता है तो वो अपने गुणधर्म को सहज नहीं छोड़ पातीं। इस्लामी कामुक वृत्ति को नहीं छोड़ पाते, क्रिश्चियन धर्म वाले क्रोध वृत्ति को नहीं छोड़ पाते; मुस्लिम धर्म वाले लोभ वृत्ति को नहीं छोड़ पाते और नास्तिक धर्म वाले अपने कर्तापने के देह अहंकार की वृत्ति को नहीं छोड़ पाते।

पक्का स्वदेशी और स्वधर्मी बीच वाला तने का हिस्सा है जो नीचे मुख्य जड़भाग से लेकर ऊपर थुरभाग तक गया है। दूसरा हिस्सा है राइट साइड की भारतीय जड़ों और डालियों का जो स्वदेशी धर्म हैं; लेकिन विधर्मी है तीसरा हिस्सा है लेफ्ट साइड की जड़ों का और डालियों का जो पक्के विदेशी और विधर्मी भी हैं। वृक्ष के ये तीन मुख्य हिस्से हैं। विधर्मी का मतलब विपरीत धर्म वाले; क्योंकि देवी-देवता सनातन धर्म का थुर तो ऊपर जा रहा है; लेकिन ये जो राइट साइड के धर्म हैं इन्होंने देवी-देवता सनातन धर्म के विपरीत यानी विरोधी दिशा पकड़ ली; हैं तो भारतीय। तीसरा जो लेफ्ट साइड वाले हैं, वे विधर्मी के साथ-2 विदेशी भी हैं। राइट साइड वाली आत्माएँ विदेशी नहीं हैं और लेफ्ट साइड के ना स्वदेशी हैं और ना स्वधर्मी; विपरीत धर्म वाली और विपरीत देश वाली हैं । देवी-देवता धर्म को सबसे जास्ती इनसे नुकसान पहुँचा। जितना इन्होंने भारत को, भारत के देवी-देवता धर्म को नुकसान पहुँचाया उतना राइट साइड वालों ने नहीं पहुँचाया। ● "अधर्मी जो होते हैं वो अनराइटियस काम ही करते हैं।" (मु. 16.7.65 पृ.3 अंत)

● जड़ों से ही यह बात साबित हो जाती है कि ऊपर के जो विपरीत धर्मपिताएँ हैं, वो इन जड़ों से ही रस लेने वाली आत्माएँ हैं, जो नीचे ब्रह्मा की संतानें दिखाई गई हैं। परमपिता शिव संगमयुग में ज्ञान का रस तो दे ही रहा है; लेकिन उस रस को अपने-2 तरीके से, मनमत के आधार पर और अपने गुरुओं की मत के आधार पर ये बाईप्लॉट जड़ों पर बैठी हुई आत्माएँ उस ईश्वरीय रस को तोड़मोड़ कर अपनाने के लिए मजबूर हैं। चाहे वो राइट साइड की जड़ हों या लेफ्ट की हों। परमात्मा की बताई हुई धारणा को सीधे-2 नहीं अपनाएँगे, अपने धर्मपिताओं के थ्रू अपनाएँगे। जैसे वे गुरु इनको डायरैक्शन देंगे उस डायरैक्शन के आधार पर अपनाएँगे। श्रीमत को डायरैक्ट अपनाने वाले नहीं हैं। ● "जो जिनकी पूजा करते हैं उस धर्म के वह हैं न।" (मु. 4.5.74 पृ.3 आदि)

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥ 7/21

जो-2 व्यक्ति जिस-2 के साकार स्वरूप को श्रद्धापूर्वक पूजने वा याद करने के लिए इच्छा करता है, उस-2 व्यक्ति की उसी दृढ़ श्रद्धा को मैं निश्चित करता हूँ।

रावण-राज्य की शुरूआत

इस तरह यह बात क्लीयर हो जाती है कि कलियुगांत की दुनिया में जब से शिवबाबा आए और आकर ज्ञान यज्ञ की स्थापना की है, उसी समय से स्थापना करने वाली आत्माओं के साथ-2 नम्बरवार डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माओं का भी यज्ञ के अंदर प्रवेश होने लगा। इसलिए अ.वा. 3.2.74 पृ.13 के अंत में बाबा ने बोला था- ● "यज्ञ कुंड से स्थापना के साथ-2 विनाश-ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। तो विनाश ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले कौन? बाबा ने बताया- ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे।" माँ-बाप के बीच में अगर बच्चे दखलंदाज़ी करने लगें तो उन दखलंदाज़ी करने वाले बच्चों को विदेशी कहा जायेगा या स्वदेशी? निश्चित रूप से यज्ञ में ऐसे विदेशी बच्चे प्रवेश कर गए जिन्होंने माँ-बाप के बीच में फ्रिक्शन डलवा दिया। राम-सीता के बीच में फ्रिक्शन कौन डलवाता है? रावण। द्वैतवादी द्वापर युग से रावण आया तो भारतवासी आपस में लड़ गए। द्वापर में ऊपर से आने वाली विपरीत धर्म की आत्माओं, अब्राहीम आदि ने जिन आधारमूर्त जड़ों में प्रवेश किया उनकी दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बना दिया। बाबा ने कहा-"रावण जब से आते हैं तब से भारत में से लड़ाई शुरू होती है।" ✖ "रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर (भारत) में से लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। उसमें ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्राविस (ज़ोन) अलग कर देते हैं।''(मु. 8.8.70 पृ.3 मध्य) ● "बाप ने समझाया है कि दोनों का जन्म, इकठ्ठा है। परमपिता-परमात्मा जिसको राम भी कहते हैं और फिर जो (रावण) दुश्मन है जो फिर तुम्हारे से जीत पहन लेते हैं, राज्य छीन लेते हैं, वो रावण का भी जन्म यहीं है।" (मु. 6.1.<u>66</u> पृ.1 अंत)

सतयुगी सेकेण्ड नं. ना. के द्वारा द्वापुर से दृष्टि-वृत्ति का करप्शन

इन बाईप्लॉट जड़ों के लेफ्ट और राइट साइड में जो आधारमूर्त ब्राह्मण बैठे हुए दिखाए गए हैं ये सतयुगी I जन्म के बाद, नम्बरवार कम कलाओं वाले नारायण बनते हैं; क्योंकि ये पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ते हैं तो लास्ट वाले नारायण बनते हैं जिनका भारत में कोई गायन नहीं है। सतयुगी सेकेण्ड नारायण से लेकर आठवें नारायण तक की 7 पीढ़ियों का सिर्फ सप्त ऋषियों के रूप में द्वापुर से शास्त्रों में गायन है; लेकिन नारायण के रूप में इनके न मंदिर बनते हैं, न पूजा होती है। इन्हीं जीसिस आदि नारायण वाली आत्माओं में द्वापर युग में जो ऊपर आत्मलोक से आने वाले नं.वार धर्मपिताएँ हैं, वो टाइम-टू-टाइम प्रवेश करते हैं और उनमें प्रवेश करके दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बनाते हैं। जैसे- इब्राहीम की आत्मा ने सतयुग के सेकेण्ड नारायण में प्रवेश किया और उसकी दृष्टि-वृत्ति को

व्यभिचारी बना दिया। सिर्फ उन्हीं को नहीं, उन धर्मपिताओं के पीछे-2 और भी फालोअर्स की आत्माएँ परमधाम से आतीं हैं। इस्लाम धर्म में कन्वर्ट होने वाली जो आत्मा सतयुग की सेकेण्ड नारायण बनती है, उसकी प्रजा में भी नम्बरवार विधर्म में जाने वाली आत्माएँ ही प्रवेश करती हैं। दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बनाने वाले धर्मों को जिन-2 सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले आधारमूर्त विधर्मियों की जो विशेष 7 आत्माएँ और उनके फॉलोवर्स हुए उनमें व्यभिचारी दृष्टि-वृत्ति का करप्शन होता है।

ब्राह्मणों में पहले सतयुगी जन्म की जो देवी-देवता धर्म की पक्की आत्माएँ हैं, उन्होंने द्वापर के आदि में करप्शन स्वीकार नहीं किया और वो उन विधर्मी विदेशी आत्माओं से भिड़ गई और उनको खदेड़कर अरब आदि विदेशी देशों तक भगा दिया। अरब देश में जाकर वो एकदम स्वतंत्र हो गए और ही व्यभिचार करने लगे। ये इतने व्यभिचारी होते थे कि अपनी सगी बहनों से भी शादी कर लेते थे; क्योंकि इन्हें तो अपनी जनरेशन बढ़ानी थी। ● "झगड़ा होता ही है विकार पर।" (मु. 6.8.76 पृ.2 अंत) यज्ञ के अंदर भी किसी प्रकार के विघ्न आते हैं तो उसका मूल कारण अपवित्रता अर्थात् कामादिक विकार ही हैं। ऐसा बाबा ने बोला है। जो ब्राह्मणों की दुनिया में काम महाशत्रु बताया वो बाद वाली कुरियों के विशेष ब्राह्मणों की दुनिया में भी काम करता है। इसका प्रभाव किस ग्रुप की आत्माओं के द्वारा आता है? इस्लाम धर्म में कन्वर्ट होने वाली आत्माओं के द्वारा पहले-2 आता है। जो परवर्ती धर्म इनके सहयोगी बनते हैं वो सब उस व्यभिचारी वायब्रेशन को फैलाने के निमित्त बन जाते हैं और भारत के दुश्मन बन जाते हैं। भारत की पवित्र प्रवृत्ति को तोड़ देते हैं। राम और सीता को जुदा करने वाले कौन हुए? रावण का विशेष कार्य है राम को सीता से जुदाई देना। ज्ञान यज्ञ के अन्दर आदि से ही वो पांडवों का कुत्ता रावण घुस गया।

इन्हीं धर्मगुरुओं के द्वारा भारत का सबसे जास्ती पतन होता है। कहते हैं- स्वर्ग में कौन गया? पांडवों के साथ-2 कुत्ता भी गया। कामी कुत्ता। तो वही कुत्ता द्वापरयुग से फिर अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखाता है। कहते हैं, शंकरजी ने काम देव को भस्म कर दिया। तो वो काम देव सतयुग में तो अपना कार्य नहीं करता। मर्ज होके रहता है; "विनु वपु व्यापहि सवहि को, हुईहै काम अनंग।" (रामायण) लेकिन द्वापर युग से फिर कामांग रूप में इमर्ज हो जाता है। जब मम्मा-बाबा शरीर छोड़ देते हैं तो शूटिग पीरियड में यह सारी ज्ञान-यज्ञ की सत्ता को अपने सहयोगियों के साथ अपने हाथों में समेट करके बैठ जाता है; क्योंकि रावण अकेला नहीं होता। काम विकार के साथ क्रोधी भी सहयोगी बनते हैं, लोभी, मोही, अंहकारी भी सहयोगी बनेंगे। तो यज्ञ के अन्दर ब्रह्मा द्वारा मानसी शूटिग से ही होता है और इन देहधारी धर्म गुरुओं के द्वारा सबसे जास्ती पतन आरम्भ होता है। ● "शास्त्रों में तो पांडवों के लिए भी दिखाया है कि पहाड़ों (की ऊँची स्थिति) पर गये तो साथ में कुत्ता भी ले गये। फिर वहाँ ही गल मरे। (महाभारत के) कुत्ते की महिमा सुनकर यहाँ बहुत मनुष्य कुत्ता भी पालते हैं। उनसे इतना तो प्यार करते

हैं कि बात मत पूछो।... बाप को पता पड़ता है कि इसने खराब काम किया है तो कहते हैं ना कि तुम तो कामी कुत्ते हो। कुत्ते को लज्जा शर्म नहीं होती है।" (मु. 10.10.69 पृ.4 मध्यादि)

राइट साइड के धर्म भी इस कामी कुत्ते के संग के रंग में आने से भारत के विरोधी अर्थात् विधर्मी बन जाते हैं

ऐसे नहीं कि राइट साइड की भारतीय देशी जड़ें भारत की सहयोगी धर्मवाली हैं। नहीं, वो भी विपरीत आचरण करने लग पड़ती हैं। इसका कारण है कि जो भारतीय धर्म बौद्ध धर्म है वो इस्लाम धर्म के मुकाबले कमज़ोर है; क्योंकि बाद में आने वाला है। इसी प्रकार क्रिश्चियन धर्म के मुकाबले संन्यास धर्म आखरीन तो कमज़ोर ही है; क्योंकि बाद में आने वाला है। वृक्ष में संन्यास धर्म की जड़ फिर भी मोटी, पावरफुल दिखाई गयी है; क्योंकि इसका आधार है पवित्रता।

कलियुग के अंत में संसार में क्रिश्चियन्स का जब अन्तिम 250 वर्ष में बहुत फैलाव हो जाता है, तो ये संन्यासी विदेशों में जाकर इन विदेशियों के, क्रिश्चियन्स के अधीन हो जाते हैं। विदेशी संस्कृति को पूरा ही अपने जीवन में ढाल लेते हैं और बहुत ही व्यभिचारी बन जाते हैं। जितने ये सतोप्रधान पीरियड में भारतीय परम्परा को अपनाने वाले और थमाने वाले होते थे उतने ही तामसी बनने पर दूसरे धर्म वालों से कहीं ज़्यादा अपवित्र हो जाते हैं। सिर्फ एक रजनीश की बात थोड़े ही है, सभी संन्यासियों का यही हाल है। नहीं तो ये पहले जंगलों में रहते थे, शहरों में इनको घुसने की या मान-मर्तबा लेने की दरकार भी नहीं थी। हालाँकि ये विदेशी धर्म नहीं है, फिर भी विपरीत आचरण करने वाले आखरीन बन जाते हैं। शास्त्रों में दिखाया है- ये दानव, देवताओं के मुकाबले हमेशा पावरफुल रहे। अगर महादेव शंकर भगवान उनके सहयोगी न बने होते तो देवताएँ कभी दैत्यों से जीत नहीं सकते थे, हमेशा अधीन ही पड़े रहते। ये राइट साइड के जितने भी धर्म हैं वो बड़े आसानी से सुनी-सुनाई बातों द्वारा लेफ्ट साइड के विदेशी धर्मों के अधीन हो जाते हैं। एक सिक्ख धर्म (ही है) जो प्रवृत्ति मार्ग का भारतीय धर्म है, अंत तक प्रवृत्ति को मानने वाला है। 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी' ये गायन सिक्खों में आज भी है। और प्रैक्टिकल जीवन में मानवीय इतिहास में भी देखा जा रहा है राइट साइड के सिक्ख धर्म को छोड़कर बाक़ी जितने भी राइटियस धर्म हैं वो लेफ्टिस्ट धर्मों के बड़ी आसानी से अधीन हो जाते हैं।

बौद्धियों में भी कायरता वाली अहिंसा है। जब विदेशियों के आक्रमण हुये, इन्होंने फट से अपने हाथ उठा दिये। अपने शस्त्र छोड़ दिये। विदेशी आक्रमणकारी इनकी बीवी, बच्चों को उठाकर ले गये तो भी इन्होंने 'अहिंसा परमोधर्म' का, कायरता से भरापूरा नारा लगाया और अधीन हो गये। बीबी बाल बच्चे भी दास-दासी बन गये। तो भारत के दुश्मन हुए या दोस्त? ये भी दुश्मन हो गये। संन्यासियों की बात अभी बताई। ये आरम्भ में तो सतोप्रधान

होते हैं; लेकिन बाद में ये बड़ी तेज़ी से नीचे गिरते हैं और जितने ही भारतीय कुल की परम्पराओं को, त्याग और तपस्या को पहले अपनाने वाले होते थे, उतने ही तामसी बनने पर ये मठाधीश बनकर ज़्यादा संग्रह करने वाले बन जाते हैं। जितने गृहस्थियों के पास वैभव नहीं होते उससे कई गुना अधिक वैभव इनके पास इकट्ठे हो जाते हैं। भारत के कोई-2 ही ऐसे टाटा-बिड़ला जैसे गृहस्थी होंगे जिनके पास हवाई जहाज/हेलिकॉप्टर्स होंगे; लेकिन यहाँ के संन्यासी ऐसे भी हैं जो विदेशों में जाकर इतने धनवान बन जाते हैं कि उनके अपने व्यक्तिगत हवाई जहाज/ हेलिकॉप्टर्स भी हैं। ये इतने संग्रही बन जाते हैं। जितने ये तपस्वी थे, उतने भोगी बन जाते हैं। गृहस्थियों की भोग-वासना को तो फिर भी पकड़ा जा सकता है; लेकिन ये तो इतने चालाक होते हैं कि भोगी भी बनते हैं और पकड़ में भी नहीं आते। ये भी हैं भारत के दुश्मन, इसलिए विधर्मी हैं। आर्यसमाजी तो धर्म को ही नहीं मानते। जब धर्म को ही नहीं मानते अर्थात् किसी धारणा को ही नहीं मानते, एक धर्म से दूसरे, दूसरे से तीसरे धर्म में कन्वर्ट होते रहते हैं और अंत में धर्मनिरपेक्ष राज्य चल पड़ता है।

लेफ्ट और राइट साइड के धर्म भारतीय परम्पराओं के विपरीत क्यों?

इस प्रकार ये लेफ्ट साइड के और राइट साइड के बाईप्लॉट जितने भी धर्म हैं, वो कमज़ोर होने के कारण भारतीय परम्पराओं के विपरीत गति अपनाने लग पड़ते हैं।

कमज़ोर क्यों हुये? क्योंकि जब परमपिता-परमात्मा आकर ज्ञान-योग का बल देते हैं तब उस ज्ञान को ये अपनी विकारी मनमत के आधार पर मिक्स कर देते हैं। मानवीय गुरुओं की मत के आधार पर चल पड़ते हैं। इस्लाम का इन सबके ऊपर प्रभाव पड़ता है। इनकी जो कुप्रवृत्तियाँ हैं उनमें काम वासना प्रधान है। जिसके कारण बुद्धि विकारी बनती है तो उसमें से ज्ञान निकल जाता है। ज़रूर शूटिंग काल में यज्ञ के आदि से ही कोई ऐसी आत्माएँ यज्ञ के अंदर प्रवेश कर गईं जो कामी इस्लामी धर्म की बीज और आधारमूर्त/जड़ें थीं। पहले तो बीज ही होते हैं बाद में उन बीजों से आधारमूर्त जड़े भी निकलती हैं। इनके यज्ञ में प्रवेश करने के कारण ही मात-पिता में संघर्ष हुआ और दोनों जुदा हो गये। जब माँ-बाप से जुदा हो जाती है तो विदेशी, लेफ्टिस्ट बच्चे ब्रह्मा रूपी माँ के ऊपर हावी हो जाते हैं। अंजाम? माँ का हार्टफेल हो गया और यज्ञ की शासन सत्ता कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारियों के हाथ में आ गई।

जो मातृदेशी भारतीय राइटियस धर्म की आधारमूर्त और बीजरूप आत्माएँ थीं, वो इन धर्मपिताओं के मुकाबले कमज़ोर पड़ती हैं, तो ये भी अधीन हो जाती हैं। जैसे पति के मरने पर माता असहाय हो जाती है या पति के संन्यास ग्रहण कर लेने पर माँ बच्चों के अधीन हो जाती है, वैसे ही ब्रह्मा माता भी ब्राह्मण बच्चों की दुनिया में यज्ञपिता प्रजापिता के देह त्याग के बाद अधीन होकर रही।

ब्रह्म+मा माता बच्चों के अधीन

"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" दादा लेखराज ब्रह्मा ने सहन तो किया; परंतु जैसे खुशी-2 सहन करना चाहिए और खुशी-2 उसका अंजाम होना चाहिए वो नहीं हुआ। आखिर में दादा लेखराज ब्रह्मा माँ का हार्टफेल हुआ और दुख-दर्द लेकर शरीर छोड़ गये। इसका प्रमाण ता.18.1.69 पृ.8 के अंत में गुलज़ार बहन द्वारा पहले सन्देश में बापदादा ने गुलज़ार बहिन को सभी से एक प्रश्न पूछने के लिए बोला उसका उत्तर देते हुए बापदादा कह रहे हैं ● "बच्ची खेल तो सिर्फ 10/15 मिनट का ही था।... कुछ समय बाद कर्मभोग (दर्द) तो बिल्कुल निर्बल हो गया। बिल्कुल (हार्ट का) दर्द गुम हो गया।" और पहला बुलेटिन जो निकला था, उसमें भी बताया कि बाबा के दिल में दर्द हुआ। किसी ने दर्द दिया होगा, तब तो दर्द हुआ जैसे बिच्छु-टिण्डन जब पैदा होते हैं तो अपनी माँ का पेट फाड़ करके पैदा होते हैं। तो ऐसे ही इस धर्म की (अर्थात् विधर्मी) जो आधारमूर्त और बीजरूप आत्माएँ यज्ञ के अंदर घुसी हुई हैं, वो बिच्छू की तरह लम्बे डंक वाले हैं। जहाँ देखते हैं यह कोमल स्वभाव का है, हमारे प्रभाव में आ जायेगा तो उसको डंक जरूर मारेंगे और अपना काम बनायेंगे। स्वार्थ का पोषण करेंगे; लेकिन दूसरी आत्माओं को दुख ज़रूर देंगे। इसलिए बाबा ने बोला है कि विधर्मियों के प्रति शक्ति स्वरूप बनना है। ● "किस समय स्नेहमूर्त, किस समय शक्ति रूप बनना है, यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है।... स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है। बाकी सभी से शक्तिरूप से सामना करना है।" (अ.वा. 18.5.69 पृ.63 मध्य)

अगर शीतल ही बने रहे; शक्ति स्वरूप न बने और ईश्वरीय सिद्धान्तों में लूज़ बने रहे, सिद्धांतों में ढील देते रहे तो तुम्हारे ऊपर ही हावी हो जाएँगे। ये देवी-देवता सनातन धर्म की स्थापना में सहयोगी बनने वाली आत्माएँ नहीं हैं। ये विपरीत आचरण करने लग पड़ेंगे। इसलिए माँ भी अधीन हो जाती है; क्योंकि कारणे-अकारणे बाप का साया ब्रह्म+माँ के ऊपर तो है नहीं। देवी-देवता सनातन धर्म वाली जो सहनशील आत्माएँ हैं, उनके ऊपर बाप का हाथ रहता ही नहीं। बाप गुप्त हो जाता है और वो आसुरी बच्चे कोमल स्वभाव वाले कृष्ण की सोल को ही सर्वे सर्वा बना देते हैं कि कृष्ण उर्फ ब्रह्मा गीता का भगवान है; क्योंकि सहशील स्वभाव का है। यह हमको डंक मारने देता है। जो बुद्ध जैसा डंक मारने दे, (वह विदेशियों का) भगवान हो गया। जो सामना करे, उसको गुम कर दिया। जब ऐसा होता है और उसकी अति हो जाती है, तब उस गुप्त पार्ट बजाने वाले परमपिता-परमात्मा को संसार में प्रत्यक्ष होना ज़रूरी हो जाता है, "जब-जब होइ धर्म की ग्लानी, बाढ़ै अधम असुर अभिमानी, तब-तब धरि प्रभु मनुज शरीरा"। ब्रह्मा का शरीर छूट जाता है तो परमपिता-परमात्मा किसी और तन में कार्य तो करता है; लेकिन गुप्त रूप में कार्य करता है।

ब्रह्मा का पार्ट था माँ का। वो टेढ़ा पार्ट था ही नहीं। तो पहचानने का कोई प्रश्न ही नहीं था। 'टेढ़ जानि शंका सब काहू। वक्र चंद्रमा ग्रसै न राहू॥' टेढ़े चंद्रमा को राहू नहीं पकड़ पाता। जब चंद्रमा सीधा हो जाता है अर्थात् सम्पूर्ण हो जाता है तब राहू भी उसके ऊपर हमला बोल देता है। इसलिए तो गायन है- "टेढ़ी अंगुली किये बगैर घी भी नहीं निकलता"। जब तक विधर्मियों के साथ शक्ति स्वरूप नहीं बनेंगे तब तक ये सुधरने वाले नहीं हैं अर्थात् ब्रह्मा के 100 साल की आयु पूरी होने के बाद राम बाप ही विकराल रूप धारण करता है। यह क्षत्रिय धर्म की सशक्त आत्मा है। जन्म-जन्मांतर की राजा बनने वाली विशेष आत्मा है। जब प्रत्यक्षता में आती है तो ये चोर भागते हैं। सामना नहीं करते। जैसे कि प्रदर्शनी अंक में दिखाया गया है कि कैसे ज्ञान सूर्य के प्रगट होने पर पाँच विकार रूपी चोर भाग रहे हैं।

सिक्ख धर्म की विशेष आत्मा माता के रूप में फाउंडर

भारतीय धर्मों में सनातन धर्म के अलावा एक सिक्ख धर्म ही है जो प्रवृत्ति मार्ग का धर्म है। अंत तक प्रवृत्ति को मानने वाला 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी'- यह गायन सिक्खों में है और प्रैक्टिकल जीवन में भी देखा जा रहा है। तो राइट साइड के सिक्ख धर्म को छोड़कर बाकी सभी भारतीय धर्म विदेशियों के पूरा प्रभाव में आ जाते हैं और भारतीय सभ्यता और संस्कृति की तिलांजली दे बैठते हैं।

इस प्रकार एक ही धर्म ऐसा रह गया जो परमात्मा का पहला-2 सहयोगी बनता है वह है- सिक्ख धर्म। आदि सनातन धर्म के भी दो छेड़े हैं- देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म और क्षत्रिय धर्म की भी कुछ कम बुद्धि वाली किन्तु अटल भावना वाली आत्माएँ होती हैं, जो सिक्ख धर्म में कन्वर्ट हो जाती हैं। सिक्ख धर्म कलियुग का लास्ट आस्तिक धर्म है। तमोप्रधान युग में प्रत्यक्ष हुआ है। विदेशियों से, अत्याचारी असुरों से मुकाबला करने के लिए खास निमित्त बनता है।

बाबा ने बोला है- त्रिमूर्ति के चित्र में शंकर की जगह मम्मा को बिठाने से बात सहज हो जाती है; क्योंकि असुर संहारिणी रूप ही उन असुरों का सुधार करती हैं। जब वो शक्तियाँ शिव की ही बन जाती हैं, किसी मनुष्य की शक्ति बनकर नहीं रहतीं, तब उन असुरों का संहार करती हैं। सिक्ख धर्म की जो विशेष आत्मा है, जिसक़ो फाउंडर बनाया जाता है वो जगत-माता के रूप में फाउंडर बनती है। ब्रह्मा की जो विशेष आत्मा है, शरीर छोड़ने के बाद पहले-2 तो गुप्त रूप में पार्ट बजाती है; लेकिन प्रत्यक्षता तब होती है जब पूजनीय महाकाली चन्द्रभाला जगदम्बा का पार्ट प्रत्यक्ष रूप में बजाती है-'ब्रह्मा सो विष्णु'। यज्ञ के आदि में कोई एक माता और भी थी जो सभी ब्रह्मावत्सों को कन्ट्रोल करने वाली थी। ता.28.5.74 पृ.2 की मुरली के मध्य में बोला हुआ है- ● "मम्मा-बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे। डायरैक्शन देती थीं ऐसे-2 करो। टीचर हो बैठती थीं। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नं. माला में आवेंगी। वो भी गुम हो गये। यह सब समझना पड़े ना। हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है।" और मु. 25.7.

पृ.2 के अंत में बोला है. ● “10 वर्ष (साथ में) रहने वाले ध्यान में जाय मम्मा-बाबा को ड्रिल कराते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे।” यानी ऐसी बच्चियाँ भी थीं जिनमें बाबा का प्रवेश होता था। और बाप का प्रवेश तो रुद्रमाला के मणकों में ही होता है। बाबा कन्या के तन पर सवारी नहीं करते। इससे साबित होता है कि वो कन्या नहीं थीं, वो माताएँ थीं। तो उन माताओं के लिए अ.वा.21.1.69 पृ.24 आदि में बोला हुआ है ● “भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।”

कुखवंशावली और मुखवंशावली ब्राह्मण

सन् 1976 में राम बाप की आत्मा का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया और विदेशियों ने बाप को पहचाना और दिल्ली में प्रत्यक्ष भी किया। बीजरूप विदेशी ही बाप को प्रत्यक्ष करते हैं; किन्तु आसुरी स्वभाव व संस्कार के हैं तो रूपवती देवी के पीछे पुजारी बनकर फिदा होते हैं। ज्ञानामृत के पीछे फिदा नहीं होते हैं। जब अमृतरस बाँटा गया तो असुरों की नज़र लगी हुई थी मोहिनी रूप के ऊपर और अमृत पीना भूल गये। देवी के चम्बे में आ गये। जो पाना था वो पा नहीं सके। वो बातें कहाँ की हैं? पु.संगम में ब्राह्मणों की दुनिया की ही बात है।

बीजरूप में भी कोई तो हैं कुखवंशावली और कोई मुखवंशावली हैं। कोई तो ऐसे हैं, जो ब्रह्मा के मुख का ज्ञान सुनकर अपने जीवन को बदलने लग पड़ते हैं और कोई तो ऐसे भी हैं जो मुख से सुने हुये ज्ञान के प्रति आकर्षित नहीं होते हैं; लेकिन चिकने चुपड़े गोरे चिट्टे ब्रह्मा मुख के प्रति आकर्षित हो पड़ते हैं। देह के प्रति आकर्षित होते हैं। चाहे तो वो ब्रह्मा की चिकनी-चुपड़ी देह हो और चाहे ब्रह्माकुमारियों की चिकनी-चुपड़ी देह हो। (जो) देह-अभिमानी होते हैं, वो देह के प्रति आकर्षित ज़रूर होते हैं। ज्ञान के प्रति उनका उतना जिगरी लगाव होता ही नहीं। ऐसे जन्म-जन्मांतर के उनके अंदर संस्कार भरे पड़े हैं। तो ऐसी जो आसुरी आत्माएँ हैं वो परमात्मा के कार्य में सदाकाल सहयोगी कैसे बन सकती हैं! वो स्थापना का कार्य क्या करेंगी, जो दैवी संगठन के अंदर घुसकर जैसे आस्तीनों के साँप बन जाते हैं! यज्ञ पिता रुद्र किसे कहा जाता है? शंकर को। उसकी बाँहों में घुसे हुये सर्प दिखाये जाते हैं। आस्तीन के साँप अंदर ही घुसकर बैठते हैं और उनकी दृष्टि-वृत्ति भोलाभंडारी के बच्चों द्वारा परखी भी नहीं जा सकती। उनका लक्ष्य अच्छा नहीं होता। तो जैसा लक्ष्य वैसे ही उनके अंदर लक्षण आते हैं। वो ईश्वरीय यज्ञ के सहयोगी बनने के बजाय असहयोगी बन जाते हैं। परमपिता-परमात्मा बाप को प्रत्यक्ष करने के बजाय अपने को प्रत्यक्ष करने लग पड़ते हैं। अपने फोटो का दिखावा करने लग पड़ते हैं। परमपिता-परमात्मा बाप को गुप्त कर देते हैं।

फर्स्ट और II नं. ना. की पूजा होती है, बाद वाले 7 नारायणों की नहीं

देवी-देवता सनातन धर्म के बाद द्वापुर से अन्यान्य धर्मों की स्थापना हुई। जो लेफ्ट साइड की फर्स्ट जड़ है उस पर बैठा हुआ ब्रह्माकुमार और उसका बीज रूप बाप जन्म लेते-2 जब द्वापर के आदि तक पहुँचते हैं तो उस ब्रह्माकुमार में इब्राहीम की सोल प्रवेश करती है और उसकी दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बना देती है और उसके जितने भी फॉलोवर्स होते हैं उसके पीछे चल पड़ते हैं। उनके बाद जितने भी ब्राह्मण वत्स बाइप्लॉट जड़ों पर बैठे हैं, जो सब सतयुग में पीढ़ी दर पीढ़ी नं.वार नारायण बनते बनते रहते हैं। भले नारायण का पद इनको मिलता है; लेकिन ये कम कलाओं वाले नारायण बनते हैं। ये आत्माएँ उत्तरोत्तर कम जन्म लेने वाली हैं और कम कलाओं वाली हैं। इसलिए भारतवर्ष में अंतिम सात नारायणों की पूजा नहीं होती। इन अंतिम 7 नारायणों का ही सप्त ऋषियों के रूप में द्वापुर से गायन है। बिरला मंदिरों में भी पहले जन्मे दो प्रकार के नारायणों की मूर्तियाँ पूजी जाती हैं। उनकी मूर्तियाँ बनी हुई हैं, जिनको नर ना. कलातीत विष्णु का व सतयुगी 16 कला लक्ष्मी ना. का मंदिर कहते हैं। इन मंदिरों में एक तरफ विष्णु की मूर्ति रखी हुई है जिसको नर ना. कहा जाता है और दूसरी सतयुगी ल.ना. की मूर्ति भी रखी हुई है। यह नारायणों की दोनों मूर्तियाँ पूजनीय हैं, महिमावंत हैं। बाकी बाद वाले जितने भी नारायण हैं, वह महिमा वाले पूजनीय नहीं हैं। उनकी न पूजा होती है, न मूर्तियाँ बनती हैं, न मंदिर बनते हैं। ये गिरती कला वाले नारायण हैं। खुद भी गिरती कला में जाते हैं और दूसरों को भी ले जाते हैं। पु.संगमयुग में खुद भी परमात्मा बाप से पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ते और न अपने फॉलोवर्स को पढ़ाई पढ़ने देते हैं।

जो संगमयुग का नारायण है, वो तो ताजधारी होता ही नहीं। वह तो बेताज बादशाह है पु.संगम में जीवनभर उसको संघर्ष ही करना है। वो होना न होना दुनियावी दृष्टि से बराबर ही है। ज्ञान की दृ ष्टि से तो महत्त्व है। सतयुगी आठ नारायण में जो फर्स्ट नारायण है, वही सोलह कला सम्पूर्ण देवता है। उसमें तो परमपिता+परमात्मा शिव की साक्षात् प्रवेशता हुई। जो पहले नं. का बेताज बादशाह, संगमयुगी नारायण है; लेकिन वो पूरा सफल तब होता है जब उसको अपने प्रवृत्तिमार्ग का जोड़ा, सहयोगी के रूप में समान पुरुषार्थी मिल जाता है। यानी सौ वर्ष की आयु जब पूरी होती है तो वो ब्रह्मा की सहनशील आत्मा उस पहले नं. के संगमयुगी ना. में प्रवेश करके प्रवृत्तिमार्ग वाली बन जाती है। तो उसको सही निर्देशन मिलने लग जाता है कि हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। वह तो सतयुगी देवी-देवता सनातन धर्म का फर्स्ट नारायण पक्का है ही। बाकी सतयुगी सेकेण्ड ना. से आठवें नं. तक, सात विपरीत धर्मों के आधारमूर्त खंडित ना. हैं।

<u>धर्मस्थापना और राज्यस्थापना</u>

धर्म स्थापना के लिए 3 प्रकार के पार्टधारी आत्माओं की ज़रुरत होती है- एक परमधाम से आने वाली धर्मपिता की आत्मा, माने उस धर्म का सूक्ष्म बीज, दूसरी वो जिसमें परमधाम से आने वाली यह निराकारी आत्मा प्रवेश

करती है, माने आधारमूर्त जड़ और तीसरी आत्मा वो जो आधारमूर्त को सतयुगी जन्म देने के लिए निमित्त बनती है माने साकार बीज। इन तीन आत्माओं के द्वारा धर्म स्थापना होती है।

ऊपर परमधाम से आने वाले धर्मपिताओं ने जिन सिद्धार्थ-जीसिस जैसे आधारमूर्त आत्माओं का आधार लिया, वो उन-2 धर्मों की माताएँ हो गईं और उन आधारमूर्त माताओं को जो जन्म देने वाले बीज थे, वो पिता हो गए। जैसे बौद्ध धर्म में सिद्धार्थ, जो बाद में महात्मा बुद्ध के नाम से प्रख्यात हुआ। वास्तव में क्राइस्ट या बुद्ध की आत्माओं ने आत्मलोक से आकर सिद्धार्थ या जीसिस में प्रवेश किया था। तो सिद्धार्थ और जीसिस हुई बौद्ध और ईसाई धर्म की आधारमूर्त आत्माएँ माना माताएँ। ऊपर से आने वाला जो धर्मपिता है, वो हुआ पिता, सूक्ष्म बीज। जैसे ब्राह्मण धर्म का सूक्ष्म बीज है, परमपिता शिव ज्योतिबिन्दु और प्रजापिता आधारमूर्त परमब्रह्म भी है तो ऐसे ही द्वापरयुग के आदि से जो नं.वार धर्मपिताएँ आते हैं, वो हुए सूक्ष्म बीज और जिनमें प्रवेश करते हैं उनको कहेंगे उन-2 नं.वार धर्मों की जड़ जमाने वाले। ऊपर से आने वाले धर्मपिताओं वाली आत्माएँ, जिनका आधार लेती हैं। वो हो गईं उन-2 धर्मों की जड़ जमाने वाली आधारमूर्त माताएँ।

राज्यस्थापना के लिए 24 विशेष आत्माओं की ज़रुरत होती है- 108 की माला में से 12 सूर्यवंशी आत्माएँ और 12 उस स्थापित होने वाले धर्म की आत्माएँ। इन 24 आत्माओं के द्वारा राज्यस्थापना होती है।

द्वापरयुग से आने वाले दूसरे धर्मपिताएँ केवल धर्म स्थापना करते हैं, राज्य स्थापना इसलिए नहीं करते हैं; क्योंकि संगमयुग में वो सूक्ष्म बीज रूप धर्मपिताएँ राजयोग की पढ़ाई ही नहीं पढ़ते हैं, इसलिए केवल धर्म स्थापन करते हैं, राज्य स्थापन नहीं करते हैं। दूसरे-2 साकार बीज रूप उद्धारमूर्त धर्मपिताएँ वहाँ द्वापर से जाकर धर्म स्थापन करते हैं; क्योंकि संगमयुग में दूसरे-2 पूरे 84 जन्म लेने वाले साकार बीजरूप धर्मपिताएँ राज्य-स्थापना की भी पढ़ाई पढ़ते हैं। वो भी नं.वार अधूरी बातें उठाते हैं; इसलिए उनकी शक्ति भी नं.वार होती है।

● "बच्चे जानते हैं यह राजधानी स्थापन हो रही है और जो धर्म स्थापन करते हैं, उन्हों की पहले राजाई नहीं चलती है। राजाई तो तब हो जब 50-60 लाख हों, तब लश्कर बने। शुरू में तो (विधर्मी धर्मपितायें) आते ही हैं एक/दो। फिर (बाद में) वृद्धि को पाते हैं। तुम जानते हो क्राइस्ट भी कोई वेश में आवेंगे बेगर रूप में। पहला नम्बर (में आने) वाला (विधर्मी धर्मपिता) ज़रूर फिर लास्ट नम्बर में होगा।" (मु. 3.12.68 पृ.2 मध्य) ● "और कोई धर्म में शुरू से राजाई नहीं चलती है। वह तो (द्वापुर-कलि.में) धर्म स्थापन करते हैं। फिर जब लाखों की अन्दाज में हो तब राजाई कर सकें। यहाँ (पु.संगम में) तो बाप राजाई स्थापन कर रहे हैं।" (मु. 24.8.75 पृ.2 मध्यादि) ● "अनपढ़े पढ़े आगे भरी ढोवेंगे। नौकर-चाकर जाकर बनेंगे। जो ब्राह्मण नहीं बनते हैं तो वह प्रजा में पाई पैसे का पद पा लेंगे... और कोई धर्म स्थापन करने वाला राजाई स्थापन नहीं करते। बेहद का बाप ही है, जो भविष्य सतयुग के लिए राजधानी स्थापन करते हैं।" (मु. 6.11.72 पृ.3 मध्यांत) ● "उन (धर्मपिताओं को) तो गुरू भी

न कहना चाहिए। वह सद्गति नहीं देते। आते हैं, सिर्फ अपना धर्म स्थापन करने। वह भी जब तमोप्रधान बन जाते हैं तो फिर बाप को आना पड़ता है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने।" (मु. 24.1.70 पृ.3 मध्य) ● "धर्म स्थापन किया। बस। जो शिक्षा दी उसके फिर (कुरान-बाइबल आदि) शास्त्र बने। जो धर्म स्थापन करते हैं, उनको फिर पालना ज़रूर करनी है। वापिस कोई जाता नहीं। सभी इस समय कब्रदाखिल हैं। पहले नम्बर में लक्ष्मी -नारायण को देखो, वह भी अब कब्रदाखिल हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचते हैं, फिर यह (ब्रह्मा-सर.) जाकर राधे-कृष्ण बनेंगे। जब तक शिवबाबा न आये, तब तक कोई पावन बन न सके। बलिहारी उस एक की है। उनकी ही महिमा है।" (मु. 17.2.72 पृ.2 आदि) ● "और धर्म स्थापक और (सुप्रीम) बाप की धर्म स्थापना में रात-दिन का फर्क है।" (मु.18.11.70 पृ.3 मध्यांत)

पक्की दे.-दे. धर्म की साकार बीजरूप आत्माएँ कभी कन्वर्ट नहीं होतीं

कन्वर्शन उसे कहा जाता है कि कोई एक कुल में जन्म ले और फिर उस कुल की लाज न रखे और दूसरे कुल में कन्वर्ट हो जाए। दूसरे धर्म में कन्वर्ट हो जाए। मातृभूमि की भी लाज न रखे। बाकी कोई आत्मा दूसरे धर्म में जाकर (अगला) जन्म लेती है, उसको कन्वर्शन नहीं कहा जाता। एक ही जन्म में एक धर्म को छोड़ और दूसरे धर्म को अपना लेना उसे कन्वर्शन कहा जाता है। वो सिद्धार्थ आदि की पितर रूप विशेष बीजरूप आत्माएँ धर्म में इतनी पक्की होती हैं कि भल बच्चा कन्वर्ट हो जाता है, प्रपौत्र कन्वर्ट हो जाता है; लेकिन वो अपने धर्म को उसी जन्म में नहीं छोड़ते।

जैसे महात्मा बुद्ध की सूक्ष्म बीज रूप आत्मा सिद्धार्थ में प्रवेश करती हैं तो सिद्धार्थ कन्वर्ट हो जाता है। सनातन धर्म के सिद्धांतों को छोड़कर बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करने लग पड़ता है। उसका बाप शुद्धोधन (बौद्ध धर्म की साकार बीजरूप आत्मा) बच्चे को घर से बाहर निकाल देता है। देश निकाला दे देता है; परन्तु खुद कन्वर्ट नहीं होता। और उसका ग्रैंडफादर बिबिसार (प्रजापिता) वो भी कन्वर्ट नहीं होता। बच्चे को देश निकाला मिल जाता है; लेकिन खुद धर्म के ऊपर आरूढ़ रहते हैं। बच्चा देश-विदेश में जाकर नाम कमाता है। पूरे ही पूर्वी देशों को अपनी बातों से अवगत करता है। चीन में, जापान में, चारों ओर शोहरत होती है, बौद्ध धर्म स्थापन हो जाता है। एशिया की इतनी बड़ी जनरेशन उस सिद्धार्थ के पीछे जैसे कि पागल हो जाती है। नामाचार तो भारत में आता है ना! बिबिसार और शुद्धोधन के कान में उस नामाचार की बात तो पड़ती है ना! तो दिल बच्चे की तरफ खून के मोह में आकर आकर्षित नहीं होगा क्या? किसका खून है? बाप का खून है, दादे का खून है, जो देश-विदेश में जाकर इतनी शोहरत प्राप्त कर रहा है! तो बच्चे की तरफ दिल भागेगी या नहीं भागेगी? भागती है। बाद में तो सारा जीवन उस बच्चे की तरफ दिल भागती है; लेकिन अपने धर्म को उसी जीवन में नहीं छोड़ते;

क्योंकि सनातन धर्म का नियम है- “धरत परिये पर धर्म न छोड़िय।” जो गीता में लिखा है- “स्वधर्मे निधनम् श्रेयः परधर्मो भयावहः”। अब अंतिम सारा जीवन बुद्धि उस बच्चे की तरफ जाती रही, तो “अन्त मते सो गते” तो ज़रूर होगी।

संकल्पों में जितना जास्ती तीव्रता होती है, उतना जल्दी वो संकल्प सिद्ध हो जाते हैं और संकल्पों में जितना धीमापन होता है, उतना देर में सिद्ध होते हैं। तो वो अंत मते सो गते 300-400 वर्षों के बाद, जब बौद्ध धर्म का पूर्वीय धर्म खण्डों में बहुत फैलाव हो जाता है तो बाबा और बाप दोनों ही अपने बच्चे की राज्य स्थापना में सहयोगी होते हैं, बौद्ध धर्म में राजाई की स्थापना के लिए; क्योंकि बाप ही राजाई देता है। ग्रैण्ड फादर की राजाई ज़रूर मिलती है। और वो आत्माएँ शरीर छोड़ने के बाद-उन मोह के संस्कारों के अनुसार, जिन संस्कारों ने इतनी खींच की, अंत मते सो गति बनाई- बौद्ध धर्म में जाकर जन्म लेती हैं और बौद्ध धर्म में राज्य की स्थापना करने के निमित्त बनती हैं। इसलिए बोला कि पहले राम-कृष्ण के स्वर्ग में तो तुम आदि सनातन देवी-देवता धर्म में ही आते हो। बाद में नारकीय मोह के कारण, बच्चों की आत्माओं के प्रति भारतवासियों में जितना मोह होता है, उतना दूसरे धर्म वालों में मोह नहीं होता। यह भारत मोहमयी मातृ-संस्कारों वाली आत्माओं का मातृप्रधान देश है। मातृप्रधान देश होने के कारण माताओं की भासना इस देश में ज़्यादा आती है; क्योंकि हर धर्म वालों का ओरीजिन भारत-माताओं से ही होता है। कन्वर्ट होने वालों के लिए गीता में एक श्लोक आया है-

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥ 9/24

क्योंकि त्याग रूप मैं ही सभी देशी-विदेशी धर्म (ज्ञान-) यज्ञों का उपभोग करने वाला और स्वामी हूँ। तो भी वे (गीता शास्त्र के प्रतिकूल) विधिहीन हिंसक सेवा करने वाले मुझ चैतन्य ज्योतिर्लिंग अव्यक्त शिव-शंकर को वास्तविक रूप से नहीं पहचान पाते, इसलिए (द्वैतवादी द्वापुर से) सत्य सनातन धर्म से (कनवर्ट होकर हिन्दू-इस्लामी आदि धर्मों में) भ्रष्ट हो जाते हैं।

ऊँच-ते-ऊँच आदि मानव आदम/अर्जुन में ऊँच-ते-ऊँच अल्लाह अव्वलदीन की प्रवेशता, फिर नं.वार धर्मपितायें

परमधाम से इब्राहीम के साथ-2 उसकी फॉलोवर्स आत्माएँ भी उतरती हैं, वो भी किसी-न-किसी सिद्धार्थ-जीसिस जैसे के शरीर में प्रवेश करती हैं। बाबा ने बोला हुआ है- ● “ऊँच-ते-ऊँच बाप को ज़रूर ऊँच-ते-ऊँच में ही प्रवेश करना चाहिए।” (मु. 11.2.69 पृ.2 मध्य) तो जितना ऊँचा धर्मपिता उतने ऊँचे आधार रूप सृष्टि-वृक्ष की जड़ में उसको प्रवेश करना पड़ेगा। तो यह नियम बन जाता है कि सबसे ऊँचा धर्मपिता शिव परमपिता तो ऊँच-ते-ऊँच

प्रजापिता (आदम) में प्रवेश करता है। उसके बाद जो भी नं.वार धर्मपिताएँ ऊपर से आने वाले हैं, वो ज़रूर अपने ही नं. के कम कला वाले देवता में प्रवेश करेंगे। सतयुग में 8 गद्दियाँ हैं। संगम को मिलाकर नौ गद्दियाँ हैं। तो राम-कृष्ण वाली आत्माओं में प्रवृत्तिमार्गीय परमपिता शिव का प्रवेश होता है। परमपिता शिव जिस आदम/अर्जुन के तन में मुकर्रर प्रवेश करता है, उसको कोई भी प्रभावित नहीं कर सकता। वो किसी के प्रभाव में बंधने वाला नहीं है। इसलिए बोला है राम बाप है एक, बाकी सब हैं सीताएँ-माना अधीन होने वाली आत्मा रूपी सीताएँ। इब्राहीम नं. दो का धर्मपिता, सतयुग के दो नम्बर की नारायणी आत्मा में प्रवेश करता है। महात्मा बुद्ध सतयुग की थर्ड नारायणी आत्मा में प्रवेश करता है। क्राइस्ट फोर्थ ना. में प्रवेश करता है। इसी तरह जो जिस नं. के धर्म का धर्मपिता है, उसी नं. के नारायण में प्रवेश करता है।

नास्तिक धर्म की रुसी आधारमूर्त आत्मा नारायण का पद प्राप्त नहीं कर पाती

लेकिन दसवें नं. का धर्मपिता नास्तिक धर्म का है। न वो बाप को मानता है, न परमात्मा को, न आत्मा को, न रचयिता को, न उसकी स्वर्गीय देवों की रचना को मानता है। उसके लिए तो दैहिक मूतपलीती नरक का सुख ही बड़ी-ते-बड़ी प्राप्ति है। उनका लक्ष्य ही कामेन्द्रिय का दैहिक सुख पाने का होता है। पुनर्जन्म को नहीं मानती, इसी जन्म में सब कुछ प्राप्त करना वाली आत्माएँ हैं। ऐसी आत्माएँ जो न स्वर्गीय सृष्टि के रचयिता को मानतीं, न उसकी रचना देवों को मानतीं, तो उन्हें बाप से कोई राजाई का वर्सा नहीं मिलता। दुनिया का नास्तिक धर्म ही ऐसा अहंकारी धर्म है जो राजाई का वर्सा नहीं ले पाता। आर्यसमाजी जो अर्धनास्तिक हैं, साकार देवी-देवताओं को भले ही न मानें; लेकिन निराकार भगवान बाप को तो मानते हैं। तो उनको भी नाममात्र की अल्पकाल की राजाई मिल जाती है। परमपिता की दृष्टि में सब विकार माफ हैं। कामी-इस्लामी, क्रोधी-क्रिश्चियन, लोभी-मुस्लिम, मोही-महर्षि भी माफ; लेकिन विनाशी देह का अहंकारी कभी माफ नहीं होते। अहंकारी को परमपिता से प्राप्ति ही नहीं होती।

लास्ट धर्म नास्तिक का धर्मपिता लेनिन है। लेनिन जिस जड़ में प्रवेश करता है, वो आधारमूर्त ब्राह्मण है। झाड़ में वो सबसे छोटी और सबसे टेढ़ी लेफ्टिस्ट जड़ दिखाई गई है। यूँ तो यह (आत्मा) परमपिता का पार्ट बजाने वाले के सबसे नज़दीक बैठी हुई दिखाई देती है; लेकिन स्थूल में करीब होना ही बुद्धि के करीब होना है, यह कोई ज़रूरी नहीं है। कोई हर समय कंधे पर सवार हो करके रहे; लेकिन कोई ज़रूरी नहीं है कि परमपिता अंदर से उसको पसन्द करते हैं; क्योंकि बाप के अंदर के प्यार और बाहर के प्यार की बड़ी भारी युक्ति होती है। ● "अन्दर के प्यार की और बाहर के प्यार की बाबा पास बहुत युक्ति है।" (मु.29.3.68 पृ.4 अंत) वो दुनियावी तरीके से पावरफुल है; लेकिन अहंकारी है। उन बुद्धि के अहंकारियों को बाप पसंद नहीं करता। बुद्धिमानों की बुद्धि तो परमपिता-परमात्मा स्वयं ही है तो किसी के दिमाग को क्या पसंद करेगा?

इन नास्तिकों ने एशिया के जार राजाओं को कत्लेआम करवा दिया था। उन्हें राजाई पसंद ही नहीं थी। वो अपने आगे किसी की राजाई नहीं देख सकते। परमपिता राजाओं को पसंद करता है। जो दुनिया के बड़े-2 राजायें हैं परमपिता उनको नं.वार राजयोग की पढ़ाई से राजाई का सपोर्ट देता है। नास्तिक विरोध करते हैं, वो अपनी आँखों से किसी की राजाई नहीं देख सकते, इतने अहंकारी हैं।

हमारे ब्राह्मणों की दुनिया में कोई ऐसे दिखावटी ब्राह्मण भी होंगे जो ज्ञान-यज्ञ के अंदर घुस करके अच्छा-खासे महाकामी-व्यभिचारी बनने वाले होंगे। जैसे कम्युनिस्टों में माँ, माँ नहीं, बहन, बहन नहीं। वहाँ तो राष्ट्र के लिए ही सारी सम्पत्ति अर्पण हो जाती है। बच्चे भी अर्पण हो जाते हैं। बच्चा पैदा हुआ, हॉस्टल में डाल दिया। माँ स्वस्थ हुई तो अपने काम में चली गई। बच्चा शिशु केंद्र में पल रहा है। फिर बड़ा हुआ कालेज में, हॉस्टल में डाल दिया। और बड़ा हुआ ट्रेनिग सेण्टर में और उसके बाद डायरैक्ट चला जाता है, गवर्मेंट की प्रॉपर्टी नौकर-चाकर बन जाता है। तो उस बच्चे को यह नहीं मालूम कि मेरी माँ कौन है, बहन कौन है। वो बच्चा बड़ा हो गया। होटलों में खाना खा रहा है, कारखानों में काम कर रहा है। होटल में जब रह रहा है तो जो भी साथ में संगिनी आ जाये , उसके साथ रात बितायेगा। जो उस दिन उसकी पत्नी हो गई वो हो सकता है उसकी बहन या माँ ही क्यों न हो। उसको क्या पता? तो जानवरों की जिदगी हो गई ना। ये खून खराबा हुआ ना। तो यह दुनिया का सबसे जास्ती भ्रष्ट अधर्म है।

जो अहंकारी होते हैं, उनको 1-2 जन्मों के क्षणभंगुर सुख सिवा कुछ प्राप्ति नहीं होती है। सतयुग में उनकी आधारमूर्त जा करके 8 वे नं. नारायण की फोर्थ क्लास नं.वार प्रजा बनेंगे। इन नास्तिकों को तो ना. बनने की पदवी भी प्राप्त नहीं होती। क्योंकि ये डिस्ट्रक्शन करते हैं। स्वर्ग-स्थापना में सहयोगी नहीं बनते। विनाश के निमित्त बनते तो विनाश करने वालों को कोई महिमावान प्राप्ति नहीं होती। इनका गुणधर्म है देह के अहंकारी और साथ में अति के व्यभिचारी।

सद्गति भी तीन प्रकार की होती है।

हरेक मुनष्यात्मा को परमपिता-परमात्मा से कम-से-कम एक जन्म की सद्गति की प्राप्ति अवश्य होती है। सर्व का सद्गतिदाता एक ही बाप है। गति दु:खों से मुक्ति देने वाला और जीवन रहते सद्गति देने वाला। ज्ञान से होती है सद्गति। ज्ञान से मुक्ति भी होती है। ज्ञान से सद्गति भी होती है। एक होता है बेसिक ज्ञान और एक होता है एडवांस ज्ञान। बेसिक नॉलेज से सिर्फ गति होती है, आत्मा ऐसी गतिवान हो जाती है और वो बेसिक ज्ञान इस मनुष्य सृष्टि की सर्व मनुष्य आत्माएँ लेती हैं और क्या पाती हैं? गति पाती हैं, शांतिधाम जाने के लिए गतिशील हो जाती हैं; परन्तु सद्गति किनकी होती है? जो प्रैक्टिकल जीवन में थोड़ा भी एडवांस ज्ञान धारण करती हैं।

सच्ची गति भी तीन प्रकार की है- एक तो शरीर में रहते-2 सद्गति और दूसरी है- साकार शरीर छूट गया, फिर दूसरों में प्रवेश करके एडवांस नॉलेज लिया उन आत्माओं की भी सद्गति होती है; परन्तु ऐसी भी आत्माएँ हैं जो विनाशकाल में शरीर तो छोड़ेंगी, अकाले मौत होगी, प्रवेश भी करेंगी; परन्तु उनकी ना अव्वल नंबर की सद्गति होगी ना दूसरे नंबर की सद्गति होगी। कैसी सद्गति होगी? थर्ड क्लास सद्गति होगी।

अव्वल नं. की सद्गति:- एक सद्गति है इसी जन्म में, इसी शरीर से हम सुख भोगें, दुख ना भोगें। दुनिया में कुछ भी होता रहे कितना भी भयंकर विनाश सामने खड़ा हो या भयंकर विनाश की लीला आती रहे आँखो के/नज़रों के सामने; परन्तु अपनी खुशी ना जाने पाए। उनकी होती है फर्स्टक्लास सद्गति, कितने होंगे? साढ़े चार लाख, दिन के आत्मा रूपी धरती के सितारे।

दूसरे नं. की सद्गति:- दूसरे होंगे वो जो इन साकारी आँखों से, इस शरीर से रहते-2 न तो विनाश देख पाएँगे और न नई दुनिया का नज़ारा देख पाएँगे, साकार शरीर छोड़ देंगे। अपनी आँखों से, अपने शरीर से नहीं देखेंगे; लेकिन दूसरों के शरीर में प्रवेश होकर देखेंगे। वो कौन-सी सद्गति हुई? दूसरे नं. की। उसमें भी कैटेगरीज हैं- कोई होंगे 16 कला सम्पूर्ण और कोई होंगे कम-से-कम 8 कला सम्पूर्ण। वो अपनी आँखों से इसी शरीर से सद्गति नहीं भोगेंगे; लेकिन जब शरीर का अगला जन्म लेंगे, तो 1 या अनेक जन्मों की सद्गति भोगेंगे।

थर्ड क्लास सद्गति:- तीसरे वो हैं जो इस शरीर के रहते-2 सद्गति का अनुभव कर ही नहीं सकेंगे; लेकिन ये शरीर छोड़ने के बाद सूक्ष्म शरीर धारण करने के बाद भी दूसरों में प्रवेश करके पार्ट भी बजाएँगे; परन्तु हाहाकार का ही अनुभव करेंगे। जिनमें प्रवेश करेंगे वो आत्माएँ भी अपने शरीर से ऐसे सुख का अनुभव नहीं कर सकेंगी माना दु:ख के वायब्रेशन में शरीर छोड़ने वाले नाममात्र के ब्राह्मण होंगे। तो अंत मते सो गते। दुख के वायब्रेशन में कोई शरीर छोड़ेगा तो दुखी होकर मरा तो नया जन्म वो स्वर्ग में नहीं मिलेगा। जो 21 जन्मों का स्वर्ग गाया द्वापुर-कलि के नर्क में मिलेगा। अनेक धर्मों के द्वैत वादी युग में जन्म मिलेगा। वो हैं थर्ड क्लास सद्गति। माना सिर्फ एक जन्म के लिए सद्गति मिलेगी। बाकी जन्मों में सद्गति नहीं मिलेगी। पहला एक शारीरिक जन्म ऐसा होगा जिसमें वो सुखी रहेंगे। बाद के बाकी जन्मों में पूरे सुखी नहीं रहेंगे।

● “बाबा ने समझाया है धर्म स्थापन करने अर्थ ऊपर (आत्मलोक) से जो आत्माएँ आती हैं वो ज़रूर सतोप्रधान, श्रेष्ठाचारी होंगी। भल माया का राज्य है; परन्तु पहले आने वाले ज़रूर सतोप्रधान होंगे, तब तो उनकी महिमा होती है। फिर सतो-रजो-तमो में आते हैं।” (मु. 9.8.<u>64</u> पृ.2 मध्य) ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ जो कि पवित्र आत्माएँ होती हैं, इसलिए गर्भ से जन्म नहीं ले सकतीं; क्योंकि बाबा ने मु. 22.8.69 पृ.1 अंत में कहा है- ● “सतोप्रधान आत्मा को सज़ा अथवा दुख कैसे मिल सकता है? ” ● “हाँ धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम (बाला) होता है। पवित्र आत्मा आकर प्रवेश करेगी। जो (पहले से मौजूद) है वह धर्म स्थापन

नहीं करेगी। जो आत्मा प्रवेश करेगी वह स्थापना करेगी। सितम आदि पहली-2 (जीसिस जैसी) आत्मा सहन करती है।" (मु. 11.12.77 पृ.2 आदि, 9.12.87 पृ.2 आदि) पहला जन्म उनको गर्भ से नहीं मिलेगा। पहले जन्म में वो किसी में प्रवेश करके सुख भोगती है, दुःख नहीं भोग सकती। इसलिए बाबा ने कहा कि 500-700 करोड़ मनुष्य आत्माओं में से प्रत्येक मनुष्य आत्मा को परमपिता शिव बाप आकर सद्गति देते हैं। -"जो भी 500 करोड़ आत्माएँ हैं, वह सभी को सद्गति देने आया हूँ। ड्रामा अनुसार सभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने-2 सेक्शन में चले जाते हैं।" (मु. 4.4.68 पृ.4 मध्यादि)

एक जन्म की सद्गति तो सबको देते हैं। बाकी फिर जिस तन में प्रवेश किया उसके संग का रंग सबको तेजी से लगता है; जो बहुत पतित हो जाते हैं; उन्हीं देवात्माओं में ऊपर से आने वाली सोल प्रवेश करती है। जैसे इब्राहीम जिसमें आये उसने ब्राह्मण जीवन में दृष्टि-वृत्ति को सबसे जास्ती करप्ट किया। बाबा ने कभी भी नहीं कहा कि-जाति-2 की दृष्टि-वृत्ति का लेन-देन, यह योग है; लेकिन जो व्यभिचारी स्वभाव के होंगे, उनकी भ्रष्ट कर्मेंद्रियों का व्यभिचार बंद किया जायेगा तो सूक्ष्म दृष्टि का व्यभिचार ज़रूर शुरू कर देंगे। वे व्यभिचार के बिगर रह नहीं सकते। जितना सूक्ष्म व्यभिचार बढ़ेगा, उतना उस आत्मा के वायब्रेशन खराब होते जाएँगे और तेजी से पतन होता जायेगा।

अहिल्या पत्थरबुद्धि बन गई।

शास्त्रों में गायन है- गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या पत्थरबुद्धि बन गई। गौतम अर्थात् सबसे जास्ती इन्द्रियों का सुख जिसने भोगा। इब्राहीम की सोल द्वापर में जड़ों पर बैठे उस ब्रह्मा वत्स में प्रवेश करती है, जो सेकेंड ना. बनता है। वही सबसे जास्ती भ्रष्ट इन्द्रियों का सुख भोगता है। उसकी पत्नी (अहिल्या) सहयोगिनी बनती है। दूसरे नं. की नारायण वाली आत्मा द्वापर में हो गई गौतम। इन अंतिम 7 नारायणों का ही सप्त ऋषियों के रूप में गायन है। उनमें गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या पत्थरबुद्धि इसलिए बन गई; क्योंकि विकारियों को यज्ञ में ले आई। ● "शास्त्रों (में) फिर लिख दिया है श्राप दिया तो पत्थर बन गया।" (मु. 21.3.68 पृ.4 आदि, 22.3.74 पृ.4 आदि)

अवश्य ही उसका विकारियों से कनेक्शन हो गया। नहीं तो यज्ञ में बाप के सामने विकारियों को लाने का क्या मतलब? बाप तो कहते हैं- पवित्र बनकर भूँ-2 करो और उन कीड़ों को भ्रमरी बनाकर ले आओ। वो तो जिससे खुद का लगाव लग गया, उसी को उठाकर ले आई। तो पत्थर बुद्धि बन गई। मुरली में बोला है- ● "कोई वेश्या है, भल जन्म अच्छे घर में ले फिर भी संस्कार अनुसार वह वेश्या तरफ ही चली जावेगी।... बड़े-2 आदमियों की गुप्त रहती है। ज्ञान में आने से भी तो संस्कार बदलते नहीं तो समझते हैं कि यह शायद वैश्या होगी।" (मु.14.5.73 पृ.3 मध्य) इसके लिए गीता में आया है-

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।

प्रकृति यान्ति भूतानि निग्रहः कि करिष्यति ॥ 3/33

ज्ञानी मनुष्य भी अपने अनादि निश्चित स्वभाव के अनुसार आचरण करता है, प्राणी अपने स्वभाव की ओर जाते हैं। इस विषय में तू रोकथाम या बलप्रयोग क्या करेगा!

देवी-देवता सनातन धर्म के जो पक्के हैं, वो तो ऊर्ध्वगामी तने में सबसे जास्ती सुधरे हुए होकर रहे। कल्प वृक्ष में जन्म-जन्मांतर तक राइट साइड के इनसे कम सुधरे हुए हैं और जो लेफ्ट साइड के विदेशी हैं, वो तो जन्म-जन्मांतर तक उनसे भी कम सुधरे हुए हैं। लेफ्टिस्ट धर्मों वाली आत्माएँ जन्म-जन्मांतर तक पश्चिम के दूरदराज लेफ्टिस्ट धर्मों में कन्वर्ट होकर रही हैं। वो तो सबसे जास्ती बिगड़ गईं। जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थुर भाग के पक्के हैं, वो पहले सुधरेंगे; क्योंकि राइटियस हैं। फिर लेफ्ट साइड के तो ऐसे हैं जिनकी दृष्टि-वृत्ति, स्वभाव-संस्कार ज्यादा बिगड़ा हुआ है। ये सिर्फ ज्ञान सुनने-सुनाने से मानने वाले नहीं। इनके साथ सख्ती से व्यवहार किया जायेगा तब सुधरेंगे; क्योंकि ब्राह्मण बनने के बाद भी ये आत्माएँ लम्पट, वेश्याएँ, गणिकाएँ बन जाती हैं।

<u>गणिकाएँ, वेश्याएँ, कुब्जाएँ</u>

गणिका माना गीत तो भगवान के गाती हैं और संग करती हैं दूसरे भड़ुओं का। ये गणिकाएँ भगवान के गुण गाएँगी, बहुत अच्छे-2 भजन, महिमा गाएँगी। तो ये सारे चरित्र हैं संगमयुगी शूटिग के? इन गणिकाओं, भीलनियों, अहिल्याओं या कुब्जाओं, जिनका बैकबोन बापदादा टूट गया, बापदादा उनमें प्रवेश करके सेवा भी नहीं कर सकता।

दिनांक 31.1.74 पृ.3 की मुरली के अंत में बाबा ने बोला है- ● “वेश्याएँ भी पुरुषार्थ कर माला का दाना भी बन सकती हैं।” गीता में बताया है-

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ 9/32

क्योंकि हे पृथ्वीपति! जो नीच कुलों में जन्मे हुए भी हों अथवा स्त्रियाँ वैश्य, शूद्र हों, वे भी मेरा आश्रय लेकर विष्णु रूप परम गति को पाते हैं।

उन दुनियावी वेश्याओं की तो बात ही नहीं। वो कोई विजयमाला का दाना नहीं बनेंगी। बीजों और जड़ों के अंदर ही कोई ऐसी आत्माएँ हैं, जो वेश्या बनकर रहती हैं और भारत का पतन करने के लिए निमित्त बनती हैं। तो उन्हीं को माला का दाना बनना है। सुधरेंगी तभी तो माला का दाना बनेंगी। तो कलियुग-अंत तक सनातन धर्म की जितनी भी 8-10 करोड़ आत्माएँ हैं, उनमें सबसे जास्ती पतित आत्माएँ स्लामधर्म की आधारमूर्त या बीजरूप आत्माएँ हैं। उनमें से ऊपर से आने वाली नं.वार सोल्स उन कमज़ोर आत्माओं पर अधिकार जमा लेती हैं। मज़बूत

को नहीं पकड़ती। जैसे बिच्छू डंक कहाँ मारता है? जहाँ नरम देखेगा, वहीं डंक मारेगा। कठोर वस्तु में, पत्थर में डंक नहीं मारेगा। कठोर बीज है बाप और आधार जड़ है कोमल रचना। इसीलिए कठोर पुरुष रूप अंग कोमल स्त्री रूप अंग को कण्ट्रोल करता है।

बीजरूप आत्माएँ रुद्रमाला के रुद्राक्ष रूप मणके हैं। कोई लेफ्ट साइड के मणके, कोई राइट साइड के मणके और कोई देवी-देवता सनातन धर्म के भी पक्के बीज हैं। ऐसे नहीं कि रुद्रमाला में सारे ही विधर्मी हैं या सारे ही विदेशी हैं। नहीं, पक्के स्वदेशी भी हैं। यानी दुनिया के हर धर्म के बीज रुद्रमाला में समाये हुये हैं। यह तीसरी दुनिया है। ये जो बीजरूप आत्माएँ हैं, ये बड़ी सशक्त और जटिल स्वभाव-संस्कारों वाली आत्माएँ हैं। ये बीज रूप पितरगण उन आधारमूर्त जड़ों से भी कहीं ज़्यादा पावरफुल हैं। उन नारायणों से भी ज़्यादा पावरफुल हैं, जो सतयुग में जाकर कलाबद्ध नारायण बनते हैं। इनके ऊपर जो देह-अभिमान का छिलका चढ़ा हुआ होता है, वो सिवाय परमात्मा बाप के धर्मराज बने बगैर उतर ही नहीं सकता। मूसल रूप बाप होता है, धान रूप बच्चे और ओखली रूपा माता होती है उस मूसल और ओखली के बीच में कूट-2 कर पीट-2 कर उन छोटे-2 धान रूप बच्चों से देहअभिमान का छिलका उतरता रहता है। एक तरफ ओखली, दूसरी तरफ मूसल फिर अच्छी तरह कूटने-पीटने के बाद पवित्र आत्मा रूपी चावल मस्तक के ऊपर विजय का टीका लगाने योग्य बन जाते हैं।

यहाँ तो अहिंसक युद्ध है। परमपिता की यह टैक्निक है। बहुत रमतू रमजबाज है। अरे! कृष्ण की ओखली भूल गये? ओखली से कृष्ण को बाँध दिया था। फिर यशोदा ने क्या किया था? जब कृष्ण बहुत शैतानी करने लगे तो ओखली से बाँध दिया। जैसे माँ-बाप देखते हैं कि बच्चा बहुत शैतान है तो उसकी शादी कर देते हैं। ऐसे ही यशोदा मैया ने चैतन्य ओखली से बाँध दिया। अब जितनी भी शैतानी करो। तो समझ लेना है कि ओखली में सिर दिया तो मूसलों से डरना क्या? खूब रात-2 भर जागो और शिवरात्रि जागरण मनाओ तो सिर अर्थात् उनकी खोपड़ी (बुद्धि) भच्चा होकर जैसे आलू मीस दिया जाता है, वैसे होकर पिस जाती है और सारे पाप धुल जाते हैं। देह-अभिमान का छिलका सारा ही उतर जाता है। गायन है मुट्ठी भर चावल सुदामा ने दिए। और कुछ था ही नहीं उनके पास। तो 108 आत्माएँ एक मुट्ठी में और 108 दूसरी मुट्ठी में अर्थात् रुद्रमाला और विजयमाला का संगठन बनाकर शिवबाबा के यज्ञ में अर्पण कर दिया। झाड़ के चित्र में यह माला दिखाई गई है जो उद्धारमूर्त बीजों और आधारमूर्त जड़ों के संगठन रूप माला की यादगार है।

<u>यादव, कौरव, पांडव</u>

पाण्डव कहा जाता है- पण्डा (पांडु) के पुत्रों को। जैसे जिन के फॉलोवर जैन। पण्डा है ऊँचे-ते-ऊँचा शिवबाबा। शिवबाबा को जो एक्युरेट फॉलो करते हैं अर्थात् जैसे-2 बाबा ने मुरली में बोला है वैसे-2 ही अपने जीवन में चलते हैं, न उसमें अपनी मनमत मिक्स करते हैं, न परमत मिक्स होने देते हैं, ऐसे पण्डा के पुत्र पाण्डव बहुत थोड़े हैं।

नहीं तो क्या होता है? कुछ-न-कुछ दूसरों की बातों में आ जाते हैं। सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं। दूसरे मनुष्य गुरुओं से प्रभावित हो जाते हैं। तो फिर वो या तो भारतवासी कौरवों की लिस्ट में चले जाते हैं या तो विदेशी यादवों की। पाण्डव वो हैं जो परमात्मा की मत को जानते भी हैं, मानते भी हैं और चलते भी हैं। कौरव वो हैं, जो परमात्मा की मत को जानते तो हैं कि मुरली में ऐसे-2 बोला है; लेकिन जानते हुए भी मानते नहीं और जब मुरली की बात को मानते ही नहीं हैं, तो चलने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता है। गांधारी क्या करती थी? जानबूझ करके आँखों पर पट्टी बांधी हुई थी। धृतराष्ट्र तो थे ही अंधे।

शास्त्रों में कहते हैं कि कृष्ण का राज्य यादवों के ऊपर था। महाभारत में यादवों का मुखिया किसको दिखाया गया है? कृष्ण को। दुनिया के हिसाब से अभी यादव कौन हैं? जिन्होंने ऐटमिक एनर्जी तैयार की हुई है, मिसाइल्स तैयार किए हुए हैं। महाभारत में दिखाए गए हैं कि यादवों के पेट से मूसल निकले और उन मूसलों से उन्होंने अपने कुल का भी संहार किया और सारी दुनिया का भी संहार कर दिया। प्रैक्टिकल में आज की दुनिया में वो मिसाइल्स रूस और अमेरिका रूपी यादवों ने तैयार किए हुए हैं। ● "यूरोपवासी यादव, भारतवासी कौरव और पाण्डव। वह सभी एक तरफ हैं, इस तरफ दो भाई-2 हैं।... कौरव और पाण्डव एक ही घर के थे।" (मु. 22.10.71 पृ.2 मध्यादि) ● "यादव हैं मूसल इन्वेंट करने वाले और कौरव-पाण्डव भाई-2 थे। वह आसुरी भाई, यह दैवी भाई। यह भी आसुरी थे। उन्हों को बाप ने ऊँच बनाकर दैवी भाई बनाया है।" (मु. 2.11.78 पृ.1 अंत) ● "समझाना चाहिए तीन सेनाएँ तो बरोबर खड़ी हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि तो खलास हुये थे। कौरवों और यादवों की है विनाश काले विपरीत बुद्धि। बाकी जिनकी प्रीत थी भगवान के साथ वह स्वर्ग के मालिक बन गये।" (मु. 27.7.73 पृ.3 अंत)

● "पाण्डव उनको कहा जाता है जो बाप को जानते हैं, बाप से प्रीत बुद्धि हैं। कौरव उनको कहा जाता है, जो बाप से विपरीत बुद्धि हैं।" (मु. 25.12.<u>68</u> पृ.2 मध्य) पांडव, पाण्डु के बच्चे थे और कौरव, कुरू के बच्चे थे। 'हमने किया'... 'हमने किया'..., तो अहंकारियों के बच्चे हो गए। पांडव बहुत थोड़े थे, उंगुलियों पर गिने जाने योग्य। कौरवों और यादवों की संख्या बहुत भारी थी।

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥ 1/10

भीष्म से रक्षित वह हमारी सेना अपार है, जबकि भीम द्वारा रक्षित इन पाण्डुवों की सेना सीमित है।

पाण्डव सम्प्रदाय

पाण्डवों का गायन है! सेवा करने में बहुत मज़बूत रहे हैं; इसलिए वह मज़बूत शरीर दिखाते हैं; लेकिन हैं मज़बूत दिल वाले, मज़बूत मन वाले। वह मन वा दिल कैसे दिखाएँ? इसलिए शरीर (बड़ा-2) दिखा दिया है। (अ.वा. 21.10.87 पृ.99 अंत, 100 आदि)

वृक्ष में जगतमाता और जगतपिता का पार्ट बजाने वाली दो आत्माओं सहित, दाईं ओर की जड़ों पर बैठे हुए ब्रह्मावत्स पांडव सम्प्रदाय के आधारमूर्त हैं।

युधिष्ठिर (देवता धर्म)- धर्मयुद्ध में आदि से अंत तक स्थिर रहने वाले, ब्रह्मा- जो पांडवों में सबसे प्रधान हैं और धर्मराज कहे जाते हैं। युधि+स्थिर अर्थात् युद्ध में स्थिर रहने वाला। आदि से लेकर अंत तक ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म देह के साथ भी माया के युद्ध में स्थिर रहे थे। जैसे कहा गया 'देहं वा पातयामि, कार्यं वा साधयामि।' ब्रह्मा की तरह देह भले चली जाए; लेकिन कार्य फिर भी पूरा करके छोड़ेंगे। इसी प्रकार पाँचों ही पांडवों के नाम अर्थ सहित हैं।

इनमें देवात्माओं की शूटिंग के हिसाब से जगतमाता ब्रह्मा की आत्मा (कृष्ण) भी युधिष्ठिर है; क्योंकि वे शीतल स्वभाव के थे। बाबा कहते हैं- ● "(ज्ञान) चन्द्रमा का गुण है शीतल (ज्ञान) प्रकाश देना।"(अ.वा. 15.9.69 पृ.105 अंत) ● "युधिष्ठिर को युद्ध के मैदान में स्थिर रहना है।" ● "ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है।" (अ.वा. 30.6.74 पृ.83 मध्यादि) ● "(धर्म) युद्ध सिखाने वाले का नाम युधिष्ठिर रख दिया है।"(मु. 26.7.71 पृ.3 आदि) ● "मैंने तुमको इस युद्ध के मैदान में खड़ा किया है, 5 विकारों से लड़ने लिए।" (मु. 21.9.<u>68</u> पृ.3 अंत) ● "यह है युधिष्ठिर की औलाद; क्योंकि युद्ध के मैदान में आकर खड़ा करते हैं। अंधे (देहधारियों के भगत) जब आकर सुजाक बने तब युधिष्ठिर के बच्चे बने।"(मु. 12.1.74 पृ.2 मध्य)

<u>भीम-क्षत्रिय</u> (पुरुषार्थी शंकर):- यज्ञ के आदि में 'प्रजापिता' और अंत में 'जगतपिता' का साकार पार्ट बजाने वाली शंकर की आत्मा राम बाप भीम भी हैं; क्योंकि भीम अर्थात् भयंकर। यह आत्मा भी यज्ञ के आदि में मायावी युद्ध में साकार शरीर से स्थिर न रह सकी अतः युधिष्ठिर नहीं कही जा सकती। बापदादा के आदेशानुसार-● "शंकर समान ज्वाला-रूप बनकर"(अ.वा. 3.2.74 पृ.13 अंत) युगल आत्मा महाकाली रूपी सीता सहित 'ज्वाला देवी'(अ.वा.15.9.74 पृ.135 अंत) का भयंकर पार्ट बजाने वाले ही महाभारत प्रसिद्ध (भीमकर्मावृकोदरः) भीम है। भीम का बाघ के समान विशालकाय बुद्धि रूपी पेट की यादगार पाण्डवों के बड़े-2 बनाये जाने वाले चित्रों के बीच आज भी सारे भारत में प्रसिद्ध है। भेड़िये के समान सर्वाधिक बुद्धियोग रूपी खुराक लेने वाले भीम के लिए काली रूप धारण करने वाली द्रौपदी भी विशेष स्नेहवश आधी खुराक सदा सुरक्षित रखती थी; क्योंकि सर्वाधिक कर्तव्यनिष्ठ अकेला भीम ही द्रौपदी की सुरक्षा के लिए 100 कीचकों (और) कौरवों का (तथा राक्षसों का भी) वध करता है।'' (मु. 7.5.73 पृ.2 मध्य) बाबा भी कहते हैं-● "आधा में जाम आधा में रैयत।"(मु.21.3.<u>68</u> पृ.4

मध्य) ● "लोगों को परखना और शक्तियों की रखवाली करना पाण्डवों का मुख्य कर्तव्य है।"(अ.वा. 19.6.69 पृ.75 अंत) ● "पाण्डवों के चित्र कितने बड़े-बड़े बनाये हैं। इसका मतलब वह बड़े ही विशाल बुद्धि थे। बुद्धि बड़ी थी। उन्होंने फिर शरीर (और पेट) को बड़ा दिखा दिया है।"(मु. 12.2.74 पृ.2 अंत) संगमयुगी शूटिंग में भी भक्तों ने बड़े शरीर वालों को मुख्य पांडव समझ रखा है। किंतु बाबा कहते हैं-● "शरीर भल कैसा भी हो आत्मा प्रबल होनी चाहिए।"(अ.वा. 5.12.89 पृ.61 मध्यांत) निर्बल आत्मा निर्भीक नहीं हो सकती। योगबल वाले निडर होंगे। ● "किसी से घबराएँगे नहीं; परंतु उनके सामने आने वाले घबराएँ।" (अ.वा.13.3.71 पृ.47 अंत)

इसीलिए भीम की तरह 'भील' शब्द भी इसी आत्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ है भय लाने वाला तो भला भय उपजाने वाले से कौन नहीं घबराएगा। बाबा ने कहा है-● "भील बाहर रहने वाला अर्जुन से भी तीखा गया।"(मु. 4.1.74 पृ.2 आदि) ● "भील लोग खाते क्या हैं? दो ठिक्कर और काम कितना करते हैं।" ● "(ज्ञान) बाण चलाने में भील (राम) अर्जुन से तीखा गया।" ● "शेर सभी से तीखा होता है। (काँटों के) जंगल में शेर अकेला रहता है। (देहाभिमानी) हाथी झुंड में रहते हैं, नहीं तो कोई भी मार दे। शक्तियों की भी शेर पर सवारी होती है।" (मु. 4.3.73 पृ.3 मध्य) ● "बाप भी है गुप्त। नॉलेज भी गुप्त। तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्त।"(मु. 13.9.68 पृ.2 अंत) ● "पांडव थे गुप्त।"(मु. 20.5.73 पृ.3 अंत) "छुपा रुस्तम बाद में खुले।" ऐसा यह भील रूप में पार्ट बजाने वाला भीम (शंकर) शास्त्र प्रसिद्ध ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र-5 वर्षीय सनतकुमार है। जिसने प्रजोत्पत्ति के कार्य से (संगमयुगी) दुनिया से संन्यास ले लिया था। यही कारण था कि लौकिक बाप की तरह ब्रह्मा भी उससे रुष्ट हो गये थे; परंतु योगीश्वर सनत्कुमार जैसी ज्ञानी तू आत्मा ईश्वरीय विधान से परिचित थी कि- ● "पारलौकिक बाप के सिवाय ब्रह्मा से भी वर्सा नहीं मिलता।" सनातन भारतीय परम्परानुसार बाप के वर्से के अधिकारी एक मात्र धुरंधर पुत्र से शिवबाबा बातें किया करते हैं- ● "तुम्हारी जैसी विशाल बुद्धि और किसी की हो न सके।" (मु. 12.2.74 पृ.3 अदि, मु. 10.3.69 पृ.3 आदि) ध्यान रहे कि महाभारत युद्ध में सबसे पहला कदम बढ़ाकर ललकार करने वाला पाण्डवों का सेनापति भीम था। (बलं भीमाभिरक्षितम्-गीता1/10)

अर्जुन-(बौद्ध धर्म):- अर्जुन (अर्ज+उनन्, ईश्वरीय ज्ञान = 'अहिंसा परमो धर्मः' द्वारा सद्भाग्य का अर्जन करने वाले-अर्जुन):-

महात्मा बुद्ध की आधारमूर्त आत्मा। बुद्धिमान 'नर-अर्जुन' (गीता) भी वृक्ष में शुभ सूचक दाईं ओर की जड़ पर बैठाया गया है। 'नष्टो मोहा' का तीखा पुरुषार्थ करने वाला अर्जुन। ईश्वरीय ज्ञान रतन हैं, उनको अच्छी तरह से बुद्धि में धारण करने वाला श्रेष्ठ पुरुषार्थी। जिसको मानवीय इतिहास के साथ-2 भगवान भी बहुत सपोर्ट करते हैं, खूब साथ देते हैं। मनुष्यों के बीच में बहुत बुद्धिमान है न।

ईश्वरीय ज्ञान को बुद्धिगत समझ के आधार पर हर कर्म करके पुण्य अर्जन करने वाली आत्मा अर्जुन है। जो बुद्धियोग के सिवाय किसी जानवरों जैसे हिंसक मानवीय व्यक्ति विशेष के आधार पर न चलकर अपनी ही तरह की एक अनूठी विचारधारा का परिचय देती है। यही कारण है कि इसका आधार लेने वाले महात्मा बुद्ध-जो आत्मा-परमात्मा का अस्तित्व स्वीकार करने में सदा मौन रहते थे अर्थात् 'मौनं स्वीकृति लक्षणम'- ऐसे को भी भक्तिमार्ग में भगवान का अवतार मानना पड़ा। ज्ञान सूर्य (ईशान/शंकर) राम के संगमयुगी व्यक्तित्व द्वारा डायरैक्ट अलौकिक जन्म लेने के कारण बौद्ध धर्म की बीजरूप आत्मा भी भारतीय ज्ञानी-तू आत्माओं में सूर्य की तरह श्रेष्ठ है। यही कारण है कि बाबा के कथनानुसार- ● "जापान (पूर्वी देश) में वह (बौद्धी) लोग अपन को सूर्यवंशी कहलाते हैं।"(मु. 28.1.75 पृ.1 अंत, 29.1.70 पृ.1 अंत) जापान भी, बुद्धिवादी बौद्धी खंड है जो पूर्व दिशा में हैं। (ज्ञान) सूर्य का उदय भी पहले पूर्व दिशा में ही होता है। बाबा ने कहा है- ● "(साक्षात्) ज्ञान सूर्य के उदय होने पर सब कुछ स्पष्ट हो जावेगा।"(अ.वा. 22.1.70 पृ.170 आदि) अर्थात् ज्ञानचन्द्रमा (ब्रह्मा) के अस्त होने पर (सन् 76 में) ज्ञानसूर्य-(राम बाप) का उदय निश्चित है जिसके ज्ञानप्रकाश का विस्तार भक्तिमार्ग में सबसे पहले जैसे बौद्ध धर्म की इन्हीं बुद्धिमान आधारमूर्त आत्माओं में आरम्भ होता है। अतः बौद्धी लोग अपन को सूर्यवंशी मानते हैं। चित्र में भी ज्ञाननिष्ठ स्वदेशी धर्मों में सर्वप्रथम बौद्ध धर्म की डाल दिखाई गई है। उस समय राम बाप ने ही भारत में प्रचलित नरमेध यज्ञ जैसी हिंसक और अंधश्रद्धायुक्त क्रियाओं का उच्छेदन भी इन्हीं आधारमूर्त आत्माओं में प्रवेश करके कराया था; किंतु मूल रूप में क्षत्रिय धर्म से आई हुई 'जैन धर्म' में विख़्यात हुई आत्माओं के सिवाय प्राय: लोप हुए धर्म के भारतवासियों ने उन्हें देश निकाला दे दिया। पनपने नहीं दिया।

<u>**नकुल (संन्यास धर्म)-**</u> (नास्ति कुलं यस्य)-जो न पांडव कुल के हैं, न कुरू (कौरव) कुल के रहे। कभी इधर और कभी उधर, (इन्होंने पश्चिम दिशा पर विजय पाई थी और रूप (+बसंत) की भांति अत्यन्त सुंदर भी थे)

संन्यास धर्म के शंकराचार्य की आधारमूर्त आत्मा नकुल अर्थात् नेवला के स्वभाव वाली है जो अज्ञान रूपी विष उगलने वाले व्यभिचारी स्वभाव के सर्पों या धर्मगुरुओं का सर्वथा खंडन कर डालती है; परंतु तमोप्रधान होने पर यही त्यागी और तपस्वीमूर्त आत्माएँ रामबाप की तरह सर्वाधिक तामसी बनकर महल-माड़ियों का संग्रह करके विदेशों और विधर्मियों में घुसकर उनकी सहयोगी भी बन जाती हैं। अतः न सदाकाल पांडवीय (ईश्वरीय) कुल की, न आसुरी (कुल) की रहने से 'न+कुल' कही गई हैं। बाबा ने भी कहा है- ● "न कुल का होगा तो समझेगा नहीं। हाँ, अंत में कहेंगे यह तो ठीक कहते थे।"(मु. 25.4.73 पृ.4 आदि) न भारत की पक्की, न विदेश की पक्की। जब तमोप्रधान बनती है तो भारतवासियों का पल्ला छोड़ देती है और विदेशियों का पल्ला पकड़ लेती है। वृष्णिवंशी विदेशी यादवों के चक्कर काटने लगती है। संन्यासी जब सतोप्रधान होते हैं तो पक्के भारतवासी त्यागी-तपस्वी देखने में आते हैं, नेवला साँप जैसी विषैली आत्माओं का खण्डन कर देते हैं। ये संन्यासी जब निकलते तो जितने भी

विदेशी, विषय-विकार उगलने वालों का खण्डन कर देते। तब भारत की विजय हो जाती है; क्योंकि बहुत पॉवरफुल भारतवासियों की कैटेगरी वाली जो दाईं ओर मोटी जड़ दिखाई है, वह भी यही आदि शंकराचारी है।

<u>सहदेव-(सिक्ख धर्म):-</u> (सह दीव्यति, क्रीड़ति वा)-जो परमात्मा के साथ ही खेलते हैं।

गुरुनानक की आधारमूर्त आत्मा सदाकाल दैवीय कुल की सहयोगी रही है। यही कारण है कि सिक्खों ने सदैव भारतीयों को सहयोग देकर मुसलमानों-क्रिश्चियन्स से टक्कर ली है। अतः ये आधारमूर्त आत्माएँ नं.वार सहदेव के नाम से प्रसिद्ध हुईं। यही कारण है कि ब्रह्मा बाबा ने सर्वाधिक प्रशंसा सिक्ख धर्म की की है; क्योंकि यह प्रवृत्तिमार्गीय देवता धर्म से मिलता-जुलता है। जिसका मूल प्रतिबिब पंजाबी खून की संगमयुगी आधारमूर्त आत्माओं में देखने को मिलेगा। बाबा ने कहा है- ● "सिक्खों की ही डिनायस्टी प्रवृत्ति मार्ग की होती है। और सब हैं निवृत्ति मार्ग वाले।... स्थापना कर फिर बादशाही ली है।"(मु. 9.10.73 पृ.4 मध्य) ● "प्रवृत्तिमार्ग दूसरे नं. में गुरुनानक का चला है। पंजाब में महाराजा-महारानी भी हुए हैं।"(मु.रात्रि 9.8.73 पृ.1 अंत) सिक्खों ने सदैव देवता कुल की आत्माओं को सपोर्ट किया है। दूसरे धर्म की आत्माओं को सहयोग नहीं दिया। जितना देवआत्माओं ने भी भारत को सहयोग नहीं दिया, उतना सिक्ख सहयोग देते हैं। स्वतंत्रता संग्राम में सिक्खों ने ज्यादा बलिदान दिया। दूसरे धर्मों से सदैव टक्कर ली है। ये सीखने और सिखाने वाले हैं; इसलिए सिक्खों का नाम बाला है।

<u>रावण कौन?</u>

"रावण='रावयते लोकान् इति रावण:।' ● "रावण का कोई चित्र थोड़े ही होता है। रावण का अर्थ ही है ये 5 विकार।" (मु. 29.12.<u>63</u> पृ.2 अंत) ● "मनुष्यों से पूछो- आखिर रावण है कौन? कब से इनका जन्म हुआ? कब से जलाते हो? कहेंगे अनादि है।" (मु. 13.4.84 पृ.2 अंत) ● "कोई भी विद्वान, शंकराचार्य आदि से पूछो रावण कौन है? कह देंगे यह तो कल्पना है। जानते ही नहीं तो और क्या रिस्पॉण्ड देंगे!"(मु. 20.2.70 पृ.2 आदि) चरित्र करने वाले के बगैर भक्तिमार्ग में कभी चित्र नहीं बनते। गणेश का चित्र है तो ज़रूर बुद्धि रूपी पेट से लंबोदर का वो चरित्र करने वाला भी कोई होगा। बालपन में देहाभिमानी हाथी जैसा चरित्र करने वाला भी। हनुमान का चित्र है तो देहअभिमान की पूँछ हिलाने का और लंका में आग लगाने का एक्ट करने वाला कोई स्वभाव-संस्कार वाला मनुष्य होगा ज़रूर। तो भक्तिमार्ग में जितने भी चित्र हैं, वो चरित्र की यादगार हैं। वो चरित्र किस समय किए गए? सतयुग-त्रेता में? सतयुग-त्रेता में नहीं, संगमी शूटिंग में, इस समय ब्राह्मणों की दुनिया में ही वो रावण के 10 सिर अपना-2 चरित्र कर रहे हैं। चरित्र नहीं करेंगे तो वो प्रत्यक्ष कैसे होंगे? कोई कामी-इस्लामी का चरित्र करता है, कोई क्रोधी का चरित्र करता है, कोई लोभी का चरित्र करता है। 100 परसेंट जो कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी होते हैं उन्हीं का संगठित मुखों वाला चित्र रावण के प्रतीक में रखा गया है।

शास्त्रों में नाम काम के आधार पर हैं, तो रूप भी उनके चरित्र के आधार पर बनाए गए हैं। रावण कोई एक थोड़े ही होता है। दस सिर संगठन में मिलते हैं तब उसका नाम पड़ता है रावण। कितने सिर वाला? 10 सिर वाला। 5 सिर दिखाए जाते हैं पुरुष मुख और 5 सिर जड़त्वमई प्रकृति माता के स्त्री मुख; लेकिन यह भक्तिमार्ग में स्त्री मुख दिखाए जाते हैं या सिर्फ ज्ञान में हमको पता चला है? सिर्फ ज्ञान में हमको पता चला है कि स्त्री मुख है पाँच; लेकिन भक्तिमार्ग में दसों सिर पुरुष मुख दिखाए जाते हैं। यह क्या चक्कर हुआ? चित्र है तो चरित्र करने वाला कोई होना चाहिए ना? तो रावण के चित्र जो भक्तिमार्ग में दिए गए हैं, वो राँग नहीं हैं। असलियत तो हमें बाबा ने बताई; लेकिन राइट चित्र भक्तिमार्ग का इसलिए है; क्योंकि उसमें जो 5 पुरुष मुख हैं वो बाप जैसी बीजरूप आत्माएँ हैं- कामी इस्लामी का बीज, क्रोधी क्रिश्चियन्स का बीज, लोभी मुस्लिम का बीज, अंहकारी रशियन्स का बीज और मोही महर्षि दयानंद आर्यसमाजी का बीज। तो वो हुए पुरुष मुख; क्योंकि बीज कहा जाता है बाप को अर्थात् पुरुष मुख।

बीज होता है पिता और 5 मुख जो स्त्री के बताए हैं, वो भी वास्तव में संगठित स्त्री चोले ही हैं, वो भी माताओं जैसी आधारमूर्त आत्माएँ यज्ञ के अन्दर ही हैं, जो 5 धर्मों के आधार भी बनते हैं, जिनमें ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ द्वापुर में प्रवेश करते हैं। उनका आधार लेते हैं, जैसे कि पिता घर-गृहस्थ चलाने के लिए माता का आधार लेता है। जैसे प्रजापिता ने ब्राह्मण सृष्टि को चलाने के लिए किसका आधार लिया? ब्रह्मा (माता) का आधार लिया और ब्रह्मा के द्वारा ब्राह्मण सृष्टि रची गई। ऐसे नहीं कहते कि ब्राह्मण प्रजापिता की औलाद। ब्राह्मण किसकी औलाद? ब्रह्मा की औलाद। जैसे- विष्णु के फालोवर वैष्णव, शिव के फालोवर शैव। तो ऐसे ही ब्रह्मा के फालोवर ब्राह्मण। तो ऊपर से आने वाले धर्मपिताओं ने जिन आधारमूर्त आत्माओं का आधार लिया, वो उन-2 धर्मों की माताएँ हो गईं और उन माताओं को जो जन्म देने वाले बीज थे, वो पिता हो गए। जैसे बौद्ध धर्म में सिद्धार्थ, जो महात्मा बुद्ध के नाम से प्रख्यात हुआ। वास्तव में बुद्ध की आत्मा ने सिद्धार्थ में प्रवेश किया था। तो सिद्धार्थ हुई बौद्ध धर्म की आधारमूर्त आत्मा माना माता। ऊपर से आने वाला जो धर्मपिता है, वो हुआ पिता, सूक्ष्म बीज। जैसे ब्राह्मण धर्म का सूक्ष्म बीज है- शिव ज्योतिबिन्दु और प्रजापिता है साकार बीज, स्थूल बीज, तो ऐसे ही द्वापरयुग के आदि से जो धर्मपिताएँ आते हैं, वो हुए सूक्ष्म बीज और जिनमें प्रवेश करते हैं उनको शारीरिक जन्म देने वाले होते हैं स्थूल बीज। ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ जिनका आधार लेते हैं, वो उन-2 धर्मों की माताएँ हो गईं।

तो भले वह आधारमूर्त ब्राह्मणों की दुनिया में इस समय पुरुष संस्कारी चोले में हैं; लेकिन वो पार्ट कैसा बजाती हैं? द्वापरयुग से माता का पार्ट बजाती हैं; क्योंकि उनमें ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ प्रवेश करके अपना धर्म स्थापन करते हैं। तो ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में भी वो आत्माएँ आधारमूर्त हैं। आधार माना माता,

जिसका सृष्टि रचने के लिए आधार लिया जाए। तो बाबा ने हमको बताया कि वो स्त्री हैं; लेकिन वास्तव में स्वभाव-संस्कार से स्त्री हैं या भले चोले से स्त्री नहीं भी हैं। जैसे ब्रह्मा के द्वारा ब्राह्मण धर्म की स्थापना का सारा कार्य हुआ, तो आधार कौन हुआ? ब्रह्मा माता का पार्ट हुआ ना। उसी तरह जो धर्मपिताएँ आते हैं, वो अपने धर्म के आधार में प्रवेश करके सारा कार्य करते हैं।... इब्राहिम कोई फीमेल था क्या? क्राइस्ट, बुद्ध, गुरु नानक ये कोई फीमेल चोले थे क्या? नहीं। मेल थे। उनके आधार भी मेल चोले हैं; लेकिन उन्होंने जो कार्य किया है, माता का कार्य किया। इसलिए भक्तिमार्ग में रावण के दसों सिरों को पुरुष चोले में दिखाया है, स्त्री चोले में नहीं दिखाया। तो वो दस चोले कोई तो होंगे या नहीं होंगे? दस चोले कोई होंगे तो उनके चेहरे भक्तिमार्ग में दिखाए जाते हैं ।

तो 5 विकार पुरुष के और 5 उसकी सहयोगिनी शक्तियाँ। कौन सहयोगिनी? जड़ों के रूप में। जब वैरायटी धर्मों का झाड़ है तो जड़ें भी कैसी होंगी? वैराइटी धर्मों की जड़ें होंगी। जड़ें माने आधार। तो आधारमूर्त आत्माओं में भी 10 धर्मों की 10 जड़ें हैं और उन 10 जड़ों में 5 जड़ें ऐसी हैं जो रावण की स्त्री का पार्ट बजाती हैं। मंद उदर वाली हैं। उनका बुद्धि रूपी पेट इतना तीक्ष्ण नहीं है; क्योंकि मातृदेशी भारतीय हैं और दूसरे धर्म के धर्मपिताएँ उनमें प्रवेश कर जाते हैं और उनकी बुद्धि को कैप्चर कर लेते हैं। अपने तरीके से चलाते हैं। वो हो गई उन-2 भारतीय दूसरे धर्मों की माताएँ। वो हो गई जड़ रूप आधारमूर्त आत्माएँ। जो सतयुग में नारायण तो बनेंगी; लेकिन कम कला वाली नारायण बनेंगी; क्योंकि मंदबुद्धि होने के कारण, अनेक जन्म-जन्मांतर दूसरे धर्मों का संग लगा रहने से वो आत्माएँ पावरफुल नहीं रह पातीं। श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना चाहती हैं; लेकिन फिर भी कर नहीं सकतीं और पढ़ाई अधूरी रह जाती। पूरा राजयोग नहीं सीख पातीं। उनमें सुप्रीम टीचर से कुछ-न-कुछ दूरबाज़-खुशबाज़ के संस्कार रह जाते हैं। यानी संन्यासियों का जो संस्कार है कि दूर रहो और पवित्र रहो, यह कमज़ोरी उनके अन्दर रह जाती है। यह कमज़ोरी द्वापरयुग से इमर्ज हो जाती है। वो हुए मंदोदरी के 5 स्त्री मुख। जन्म-जन्मांतर 63 जन्मों में दूसरे-2 धर्मों का ऐसा संग मिला है कि बुद्धि कमज़ोर हो गई। पत्थरबुद्धि हो गई, अहिल्या बुद्धि। 5 मुख पुरुष के, और 5 मुख स्त्री के- ये दस सिर वाला रावण दिखाते हैं। जिसके 5 हैं प्रमुख विदेशी धर्म और 5 हैं उनके भारतीय सहयोगी धर्म। सहयोगिनी को ही स्त्री कहा जाता है।

मंदोदरी को 10 शीश नहीं दिखाते, रावण को ही दिखाते हैं चूँकि मंदोदरी का बुद्धि रूपी पेट मंद है, अंत: रावण को बुद्धि से सहयोग देने वाली नहीं बनती, इसलिए उसका भक्तिमार्ग में शीश नहीं दिखाते। शीश किसका दिखाया जाए? जो शीश से कुछ कार्य करे। अपनी अक्ल से कुछ कार्य करके दिखाए; लेकिन मंदोदरी में तो अपनी उतनी अक्ल है ही नहीं, तो सहयोग कहाँ से करेगी; इसीलिए सिर्फ भुजाओं से सहयोग देती है। रावण के चित्र में वामांग की ओर पाँच स्त्रियों के संगठित सिर होते हैं तो उनका नाम दिया- मंद+उदरी। पेट भी बुद्धि का मिसाल है। जैसे बुद्धि में सब बातें समा जाती हैं, वैसे ही इस पेट (के लिए) कहते हैं ना- तुम्हारे पेट में बात नहीं

पचती, बाहर निकल जाती है। स्त्रियाँ प्राय: ऐसी ही होती हैं जिनके पेट में कोई बात पचती नहीं है। उनको कितना भी समझाओ कि यह बात किसी को बताना नहीं, वो यदाकदा इधर से उधर कर ही देंगी। तो यह हुई माया की मंदबुद्धि माना मंदोदरी। अब जैसे काम वैसे नाम। रावण होगा तो रावण के साथ उसकी मंदोदरी भी होगी। अवसर पाते ही कभी इधर की बात करेगी तो कभी उधर की बात। रावण से राम की भी बात करती जाती है - राम बड़े अच्छे हैं, वो ही भगवान हैं और फिर रहेगी किसके साथ? रहेगी रावण के ही साथ। यह नहीं कि फिर राम की तरफ हो जाए, फैसला कर ले। तो दोनों तरफ ढपली बजाएगी।

रावण के सिर पर गधा क्यों दिखाया गया है?

रावण तो 5 विकारों का पुतला कहा जाता है। वो नं.वन दुश्मन है या उससे भी बड़ा कोई और नं.वन दुश्मन है? 5 विकारों का बाप कौन है? रावण का जब चित्र बनाते हैं तो ऊपर गधे का शीश बनाते हैं और नीचे 10 सिर दिखाए जाते हैं- 5 पुरुष मुख, 5 स्त्री मुख। तो जो गधे का सिर है वो क्या है? देह-अभिमान। जैसे गधे में देह-अभिमान होता है, उसको कितना भी नहलाओ-धुलाओ; लेकिन जहाँ देहरूपी धूल, मिट्टी देखेगा, वहाँ फट से लोट जाएगा। तो देह-अभिमान की धूल में लोट जाने वाला है। तो यह देह-अभिमान है 5 विकारों का बाप। अगर यह देह-अभिमान न आए तो 5 विकार पैदा ही न हों।

आत्मा-अभिमानी माना निराकारी और देहअभिमानी माना साकारी। चतुर्मुखी ब्रह्मा के तन में जो आदि से लेकर अंत तक पार्ट चला (18 जनवरी 1969 तक), उसको साकारी शरीर का पार्ट कहेंगे या निराकारी स्टेज धारण करने वाला पार्ट कहेंगे? अ.वा. में आता है 'साकार बाप'। तो साकार का मतलब साकारी स्टेज में रहने वाला। ब्रह्मा का एक भी ऐसा धर्मपिताओं की तरह फोटो नहीं होगा जिसमें उनकी बुद्ध, क्राइस्ट या गुरू नानक जैसी निराकारी स्टेज हो।

लेफ्टिस्ट धर्मों के बीज और जड़े ही रावण सम्प्रदाय:-

रावण का चित्र भी चरित्र के आधार पर है, जो ज्ञान से क्लीयर होने लग पड़ता है। 5 विकार मनुष्यों में ही समाये हुए होते हैं। चित्र सम्पूर्ण का बनता है, अपूर्ण का नहीं बनता। तो सम्पूर्ण, 100 परसेंट नं.वन विकारी भी ज़रूर कोई होंगे। 100 परसेंट जो विकारी होते हैं, वो ही सबसे जास्ती पतित बनते हैं।

अब रावण कौन हुआ? विकृति फैलाने वाले, विकृति माना जो विपरीत कर्मी हों। देवताओं का कर्म है श्रेष्ठ ज्ञानेन्द्रियों से श्रेष्ठ आचरण करना और आसुरी कर्म है भ्रष्ट कर्मेन्द्रियों से भ्रष्ट आचरण करना। इसलिए मुरली में बोला-● "आज से 2500 वर्ष हुए जब से रावण का जन्म हुआ।" तो आज से 2500 वर्ष पहले कौन-सी आत्मा आई? इब्राहीम; लेकिन इब्राहीम तो परमधाम माना सतधाम से आने वाली सात्विक आत्मा है। जो परमधाम से

आत्मा आएगी, उसमें कोई पाप बचा हुआ होगा क्या? हाँ, किन्तु वो जिसका आधार लेती है उसमें तामसी या राजसी गुण समाय जाते हैं। सत्वप्रधान आत्मा पहले जन्म में गर्भजेल का दुःख तो भोग नहीं सकती, इसलिए उसको प्रवेश करना पड़े। बाप ने समझाया था- नई आत्मा को कर्म भोग नहीं हो सकता। क्राइस्ट की आत्मा ने कोई विकर्म थोड़े ही किया जो सज़ा मिले। वह तो सतोप्रधान आत्मा आती है। जिसमें आकर प्रवेश करती है। उन जीसिस को क्रॉस पर चढ़ाते हैं, क्राइस्ट को नहीं। वह तो जाकर दूसरा जन्म ले बड़ा पद पाती है।" अंत: जिसमें प्रवेश करती है, वो देवी-देवता धर्म की आत्मा होती है। वो देवी-देवता धर्म की आत्मा, जिसने धर्मपिता की सुनाई गई बातों से अपनी बहुत मनमत फैलाई और दूसरों को ईश्वरीय रास्ते से विपरीत (विमुख) कर दिया वो ही आत्मा द्वापर या कलियुग में भारतीय देवी-देवताओं की ग्लानी करते रहने से संगमयुग में बहुत कमज़ोर बन जाती है और सतयुग-त्रेता के जन्म पूरे करने के बाद नं.वार जास्ती कमज़ोर बन जाती है। उसी में इब्राहीम आदि की सोल प्रवेश करती है और उसकी दृष्टि-वृत्ति को करप्ट कर देती है। सो यहाँ की शूटिंग से शुरुवात होती है द्वैतवादी द्वापर-कलि युग की। रावण जबसे आते हैं तो आपस में लड़-झगड़कर अपना-2 प्राविंस धर्मखंड अलग-2 कर लेते हैं। 2500 वर्ष पहले तो भारत में एक ही धर्म था, एक ही राज्य था, जब इब्राहीम ने प्रवेश किया तो द्वैत होने से आपस में झगड़ा शुरू हुआ, जो पक्की देवी-देवता सनातन धर्म की आत्माएँ थीं वो दृष्टि आदि ज्ञानेन्द्रियों के व्यभिचार को सहन नहीं कर सकीं; क्योंकि इब्राहीम की सोल को यह पता ही नहीं होता कि स्वर्ग में कौन-सी श्रेष्ठ इन्द्रियों का श्रेष्ठाचार होता था। वो तो स्वर्ग में जाती ही नहीं, तो जिसमें प्रवेश करती है उस आत्मा को वशीभूत कर लेती है, अपने तरीके से चलाती है और वो देवता धर्म की आत्मा कनवर्ट होकर इस्लाम धर्म की आधारमूर्त माता बन जाती है; इस प्रकार ऊपर से आने वाली आत्मा को रावण नहीं कहेंगे। जिसमें प्रवेश किया वो ही संगमयुग में रावण का पार्ट बजाता है ।

आधारमूर्त जड़ को भी आदि शूटिंगकाल में जन्म देने वाला कोई साकारी बीजरूप बाप होता है। वो बीज होते ही हैं सारी दुनिया के चुने हुए बीज जिनसे बनती है रुद्रमाला। उस रुद्रमाला में भी लेफ्टिस्ट और राइटियस, 54 राइटियस और 54 लेफ्टिस्ट, दो प्रकार के मणके होते हैं। जो लेफ्ट साइड के इस्लाम धर्म के बीज हैं उनका जो मुखिया है वो उस जड़ को भी जन्म देने वाला होता है। यज्ञ के आदि ॐ मण्डली में ही ये बीजरूप आत्माएँ पहले-2 फाउंडेशन डालने वाली बनीं जो बाद में सन् 1942 से चली गईं। मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद फिर दुबारा जन्म लेकर यज्ञ में निश्चयबुद्धि होकर आती हैं और लास्ट सो फास्ट जाती हैं। जो आधारमूर्त आत्माएँ जड़ें हैं, उनसे भी वो पावरफुल होती हैं, ज्ञानयोग की गहराइयों में जाने योग्य होती हैं। इब्राहीम जिसमें प्रवेश करता है, उसके शरीर को जन्म देने वाला जो बीज है वो हुआ इस्लाम धर्म का मुखिया। इसी तरीके से हर धर्म के और भी बीज हैं।

लेफ्टिस्ट धर्मों के बीज रावण सम्प्रदाय साबित होते हैं, जैसे कामी-इस्लामी, क्रोधी-क्रिश्चियन, लोभी-मुस्लिम और मोही महर्षि दयानंद का आर्यसमाजी। जो ज्ञान की गहराइयों को समझने वाली बीजरूप आत्माएँ हैं, वो ही वास्तव में बुद्धिवादी विदेशी, लेफ्टिस्ट धर्मों की बीजरूप हैं, वो ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, इन 5 विकारों के असली बीज पुरुष रूप संस्कारों वाले रावण दुर्योधन-दुशासन हैं और आधारमूर्त आत्माएँ जिनको झाड़ के चित्र में जड़ों पर बैठा हुआ दिखाया गया है वो हैं मंदोदरी। माया रावण का रूप। अब रावण का यादगार पुतला बनाकर खास भारत में जलाते हैं। जो राइटियस सूर्यवंशी राम सम्प्रदाय वाले होंगे, वो ही बुद्धि से पहचानकर ज्ञान के आधार पर उनका चित्र तैयार करते हैं कि ये रावण की बीजरूप आत्माएँ हैं और ये आधारमूर्त आत्माएँ हैं और उनको संसार में प्रख्यात करते हैं। अपने आपको पहचाना, बाप को पहचाना और माया-रावण के रूप को न पहचाना तो कभी भी सफलता नहीं मिल सकती।

जितने भी कनवर्टिड विदेशी धर्म हैं, वो सब हैं भारत के दुश्मन। वे विदेश के दूसरे धर्म में जरुर पनपेंगे। विदेश में जो इतने विस्तार को पाए हुए धर्म हैं, उन्होंने भारतवासियों को हमेशा कन्वर्ट किया है। पहले-पहले तो भारत का शुद्ध सनातन धर्म ही था, कोई दूसरा धर्म था ही नहीं। जब से ये कनवर्टिड हुए विदेशी आए इन्होंने भारतवासियों को तेजी से दूसरे-2 धर्म में कन्वर्ट करने का काम जारी रखा। हमारे सनातनी परिवार को तहस-नहस करते रहे। कोई किसी के परिवार को तहस-नहस करे तो दुश्मन हुआ या दोस्त हुआ? दुश्मन हुआ। तो यह पुराना दुश्मन है। यही अनेक मतों वाला 10 सिर का रावण है। कभी क्राइस्ट के रूप में आया, कभी इब्राहीम के रूप में आया इन्द्रियों का व्यभिचार फैलाने वाला है। भारतवर्ष में भारतवासी लोग विदेशियों से प्रभावित होकर अभी भी व्यभिचारी बनते जाते हैं। ● “रावण के 10 सिर वाली आत्माएँ हर छोटी-सी परिस्थिति में भी कभी सहयोगी नहीं बनेंगी। क्यों, क्या, कैसे के सिर द्वारा अपना उल्टा अभिमान प्रत्यक्ष करती रहेंगी।... बार-2 कहेंगे यह बात तो ठीक है; लेकिन यह क्यों, वह क्यों? इसको कहा जाता है कि एक बात के 10 शीश लगाने वाली शक्ति। सहयोगी कभी नहीं बनेंगे, सदा हर बात में अपोज़िशन करेंगे। तो अपोज़िशन करने वाले रावण सम्प्रदाय हो गए ना।” (अ.वा. 3.4.82 पृ.339 मध्य)

<u>सतयुगी सेकेंड नं. ना. इस्लाम धर्म का आधार है</u>

यज्ञ के अंदर मम्मा ने जैसे ही शरीर छोड़ा तो ‘यथा राजा तथा प्रजा’ भी बदली हो गई। कंट्रोलर कौन बना मम्मा की जगह? मम्मा तो थी ज्ञान की देवी और पवित्रता की भी देवी; लेकिन मम्मा का स्थान जो लेगी, वो उतनी पवित्र नहीं हो सकती; क्योंकि उसको तो ‘जगदम्बा-सरस्वती’ का टाइटिल दिया गया। किसने? शिवबाबा ने ओमराधे को ब्रह्मा के मुख से जगदम्बा सरस्वती टाइटिल दिया है। तो क्या झूठ हो जाएगा ? नहीं। जैसा श्रेष्ठ पार्ट सरस्वती ने यज्ञ के अंदर शासन करने का बजाया, ऐसी कंट्रोलिग पावर और किसी की नहीं हो सकती थी। सो वो हुआ।

बाबा तो रहा ही; लेकिन बाबा के साथ सहयोगिनी शक्ति के रूप में, सन् 1965 से ही कंट्रोलर के रूप में कौन बैठ गया? इस्लाम धर्म की आधारमूर्त आत्मा ही कहेंगे।

● सतयुग में जो कृष्ण है वह कौन-सी सोल होगी? संगमयुग में उनका क्या पार्ट है? दादा लेखराज सतयुग में ब्रह्मा कृष्ण के रूप में बड़े होकर पहला नारायण बन करके राज्य करेंगे। उनका वारिसदार कौन बनेगा? ... उनका जो वारिसदार बनेगा वह शूटिंग पीरियड में भी तो वारिसदार होना चाहिए! शूटिंग पीरियड, जिसे रिहर्सल का काल कहो, रिकॉर्डिंग का काल कहो, इस संगमयुग में आत्मा में संस्कार भरे जाते हैं ब्रह्मा बाबा के जीवित रहते-2 बाबा ने भाइयों में कौन-सा ऐसा भाई था-जिसको यज्ञ का सारा कारोबार सबसे जास्ती विश्वासपूर्वक सौंप के रखा? विश्वकिशोर भाऊ। अव्यक्त वाणी में भी ये बात आई है ● "जैसे साकार बाप को सदा निश्चय और नशा रहा कि मैं भविष्य में विश्व-महाराजन बना कि बना। ऐसे विश्वकिशोर को भी यह नशा रहा कि मैं पहले विश्व महाराजन का पहला प्रिन्स हूँ। यह नशा वर्तमान और भविष्य का अटल रहा। तो समानता हो गई ना। जो साथ में रहे उन्होंने ऐसा देखा ना।" (अ.वा. 18.1.86 पृ.166 अंत) और दीदी-दादियों में कौन-सी ऐसा ही निश्चयात्मक बुद्धि रही? मुरली में कुमारिका नाम बोला है • "सितारों में जास्ती खातिरी होती है कुमारका की।"(मु.रात्रि 25.9.64, 19.8.73 पृ.4 आदि) इस तरह बाबा ने बच्चों में विश्वकिशोर भाऊ को और बच्चियों में कुमारका दादी को विशेष स्थान दिया। तो उन दोनों के दिल के अंदर अंत समय तक यह भाव पक्का बन गया कि हम ही मम्मा-बाबा के वारिसदार बनेंगे? फिर दूसरी मुरली में बोल दिया ● "भ्रष्टाचारी भ्रष्टाचारियों का ही मान रखते हैं। ...बाप कहते हैं- जिनका बहुत मान है वह बड़े-ते-बड़ा भ्रष्टाचारी समझो।" (मु.8.4.72 पृ.2 मध्यादि)

मतलब इस दुनिया का मान-मर्तबा हम ब्राह्मणों को नहीं लेना चाहिए। अगर हमें कोई दे भी तो भी हम मान-मर्तबा नहीं लेंगे। जैसे मान-मर्तबा कोई हमको दे- मुख्य प्रशासिका, सह प्रशासक, मुख्य प्रशासक। तो यहाँ ब्राह्मण शासन करने के लिए बैठे हैं क्या? या सेवा करने के लिए बैठे हैं? ब्राह्मण तो सेवाधारी बताए हैं; लेकिन कोई-2 की बुद्धि नहीं चलती कि जहाँ सेवा करना है, वहाँ हम राजाई बनाके क्यों बैठेंगे? बाबा कहते हैं- मुरलियों में कि यहाँ जितनी राजाई भोग लोगे उतनी वहाँ राजाई कम हो जाएगी/कट हो जावेगी। जन्म-जन्मान्तर दास-दासी बनना पड़ेगा। सतयुग के सेकेण्ड जन्म में तो कुमारका और विश्वकिशोर दोंनो ही महाराजा-रानी बनेंगे; किन्तु हीरे समान संगमयुगी विश्व में उनका उतना पद-मान-मर्तबा नहीं रहेगा। फाइनल रिजल्ट में जो संगमयुगी स्वर्ग होगा, उसमें उनको दास-दासी के रूप में काम करना पड़ेगा।

• "यह पढ़ाई है। इसमें जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। यह कोई साधु-संत आदि नहीं, जिसकी गद्दी चली आई है। यह तो शिवबाबा की गद्दी है। ऐसे नहीं कि यह जावेगा तो दूसरा कोई गद्दी पर बैठेगा। " (मु. 20.5.70 पृ.3 मध्यांत)। जैसे हिस्ट्री में इस्लामियों ने राजाई के लिए छीना झपटी की। यहाँ पर भी बापदादा ने

तो कह दिया– ● "बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं। (मनमोहिनी) दीदी तो हैं, साथ में कुमारका मददगार है।" (अ.वा.21.1.69 पृ.21अंत, 22 आदि)। (माना यज्ञ की देख-रेख करने के लिए बाबा ने किसको निमित्त बनाया? मनमोहिनी दीदी को; लेकिन निमित्त बनके कौन बैठ गया? कुमारका दादी। तो छीना झपटी की ना।)

रावण सम्प्रदाय के द्वारा ढेर-के-ढेर चित्र बनाए गए

● "शुरू में थोड़े ही इतने चित्रों आदि के छपाई का काम था। यह क्रिश्चियन लोग जब आए हैं तब से यह शुरू हुए हैं।" (मु. 27.8.68 पृ.2 अंत) X ● "पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए न। फिर किस्म-2 के चित्र बैठ बनाए हैं।" (मु.18.8.73 पृ.2 मध्यांत, 8.8.93 पृ02 अंत) मुरली - X ● "चित्र आदि जो भी बनाये हैं बेसमझी के।" (मु.13.3.71 पृ.2 मध्य) X ● "आसुरी मत पर अनेक ढेर-के-ढेर चित्र बने हैं।" (मु. 5.5.68 पृ.1 मध्य) यहाँ भी माया का थोड़ा इशारा मिला और उन भक्तिमार्गीय रावण-राज्य के गुरुओं ने ढेर-के-ढेर छोटे-2 प्रदर्शनी के चित्र खास मायावी नगरी बम्बई में तैयार कर दिये। जैसे 2500 वर्ष की मायावी दुनिया में क्राइस्ट के आने के समय, आज से 2000 साल पहले आसुरी मत पर महाराष्ट्र साइड में अजन्ता-एलोरा, एलीफैन्टा, कन्हेरी आदि की गुफाओं में ढेर के ढेर सैंकड़ों, हज़ारों चित्र तैयार किये गये थे।

ऐसे ही यज्ञ के अंदर शूटिंग काल में भी द्वापरयुग के आदि में ही सरस्वती माँ के देहांत-बाद ढेर-के-ढेर चित्र 300-400 (3/4) वर्ष तक ये चित्र बनते रहते हैं। वो ही आत्मा निमित्त बनती है, जो प्रदर्शन करने वाली है, जिनके अंदर प्रदर्शन करने का माद्दा है। वरना भारतीय परम्परा ज्ञान और योग को प्रदर्शन करने वाली नहीं है। ज्ञान-योग को प्रदर्शित करने की, दिखावा करने की या ऐसी कोई भी परम्परा तो विदेशियों से आई, जबकि क्राइस्ट ने जन्म लेने वाला था। जिसकी आधारमूर्त आत्मा जीसिस श्रीमत के बरखिलाफ वो चित्र भी तैयार करती है इसलिए बाबा ने मुरली में बोला है- ● "प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है।... फिर (कभी भविष्य में) बाबा भी पास करेंगे।" (मु. 13.6.72 पृ.2 अंत) बाद में फिर (ब्रह्मा बाबा ने) शरीर छोड़ दिया। पास करना धरा रह गया। मतलब बाबा ने कहा है कि पास करेंगे। तो कोई-न-कोई रूप में शिव बाबा तो पास करेंगे ही। जो चित्र ठीक नहीं होंगे उनको कैंसिल कर देंगे। जो ठीक होंगे उनको पास कर देंगे; लेकिन ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवनकाल में पास नहीं कर पाया। शरीर छोड़ गये और राय बाबा ने दी ही नहीं थी। माने छोटे-2 ढेर-के-ढेर चित्र तैयार करने की बाबा की श्रीमत थी ही नहीं। तो ज़रूर मनमत है। या कोई माया की मत है। माया को बाबा बेटी कहते हैं। तो कोई माया बेटी की मत पर ये ढेर-के-ढेर चित्र बनाये गये। ब्रह्मा बाबा का तो माँ का पार्ट था। बाबा तो शुगर कोटेड वाणी बोलते थे। बाबा ने कहा- ये तो रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। तो बच्चे ने

समझ लिया, आहा! बाबा हमको बहुत ऊँची स्टेज पे बैठाय रहे हैं। ये नहीं पता था कि हम श्रीमत का उल्लंघन कर रहे हैं। इस तरह वो ढेर-के-ढेर चित्र रावण सम्प्रदाय के द्वारा तैयार कर लिए गये।

झाड़ में ब्रह्मा को ऊपर खड़ा हुआ दिखाया है।

सीढ़ी के चित्र में लास्ट कलियुग के ऊपर ब्रह्मा को खड़ा हुआ दिखाया है। माना ब्रह्मा की सोल अंतिम जन्म में फिर भी खड़ी है। माना फुल बेगर नहीं बनती है। न ज्यादा सत्त्वप्रधान बनती है, न ज्यादा तमोप्रधान बनती है। इसलिए पुरुषार्थ में खड़ा हुआ दिखाया है।

दाईं ओर ऊपर, पीपल के पत्ते पर कृष्ण

कहते हैं ना- 'पीपल पात सरस मन डोला'। पीपल का पत्ता कैसा होता है? बहुत हिलता-डुलता है। काहे से? मायावी झोंको से। मायावी झोंके भी उसे ही बहुत लगते हैं, तो वो पत्ता जोर से हिलता-डुलता है; लेकिन कृष्ण की सोल उसमें विराजमान है और निराकारी बाप उस पीपल के पत्ते रूपी नवैया का खिवैया है, इसलिए वो नवैया संसार रूपी विषय सागर के बीच में होते हुए जरुर डोलेगी; लेकिन डूब नहीं सकती। वो भाग्यशाली बच्चा कृष्ण पीपल के पत्ते में दिखाया गया है, इसलिए कि पीपल के पत्ते की नवैया के रूप में कोई पार्ट बजाने वाली आत्मा है जो दिल्ली रूपी दिल का पार्ट बजाती है। नई सृष्टि के आदि में भी वो इंद्रप्रस्थ नाम की दिल्ली होती है और अन्त में भी वो दिल्ली ही होती है। दिल्ली परिस्तान और दिल्ली कब्रिस्तान। तो पीपल का पत्ता कौन-सी आत्मा हुई? कृष्ण पीपल के पत्ते में अण्डे के अन्दर दिखाया गया। अण्डा रूपी बीज प्रजापिता हुआ, जिस बीज से वो बच्चा पैदा होता है। मानो उस बीज के अन्दर ही समाया हुआ है। वो अण्डा जिसका नवैया का आधार लेता है वह बहुत हल्की है। और क्या विशेषता होती है उसमें? उसकी डंडी बहुत लम्बी होती है। माना मूल तने से अलग हो जाती है। बच्चे पूछते हैं- हमको माँ क्यों नहीं मिलती? प्रकृति माता की गोद में रहकर आधा कल्प स्वर्ग में प्यार भी हमने लिया है और फिर प्रकृति की गोद में पलकर भी उसमें आधा कल्प पोल्यूशन पैदा करके, दुख अर्जन करने वाले भी हम बच्चे ही हैं। इस समय चैतन्य में प्रकृति माता भी है, प्रकृतिपति भी है। ● "आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो। उसको लंबा-2 झाड़ू दिया है, सफा करो। ... गोल्डन एज में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी।" (अ.वा. 13.2.99 पृ.55 मध्य, 56 मध्य) अ.वा. में ऐसे इशारा भी दिया हुआ है, प्रकृति क्या करेगी? प्रकृति अपने दोनों हाथों में झाड़ू लेकर खड़ी हुई है। किसलिए? कहते हैं- जब दीपावली में लक्ष्मी का आवाहन करते हैं, तो पहले घर की सफाई होती है। घर के अन्दर से कचड़ा विशेष रूप से साफ किया जाता है। तो यह ब्राह्मण परिवार भी एक घर है, उसमें जो बीज रूप एडवांस पार्टी/प्लैनिग पार्टी है, वो

भी एक परिवार है, इस सृष्टि रूपी नवीनतम वृक्ष का पहला-2 परिवार जिसमें से अष्टदेवों को छोड़कर नं.वार सारे कनवर्टिड ब्राह्मणों का कचड़ा साफ कर दिया जाता है।

बाईं ओर ऊपर कमल फूल

झाड़ के चित्र में नीचे की स्थिति में जगदम्बा के बायीं तरफ जहाँ जगत्पिता को बैठा हुआ दिखाया है, उसी झाड़ में सबसे ऊपर कमल फूल भी दिखाया है। इसका अर्थ है- किंग फ्लावर जगतपिता शंकर के पार्ट का सूचक है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान पवित्र जीवन बिताने का सूचक है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान पवित्र जीवन बिताने की यादगार है ही कमल फूल। जगतपिता शंकर की मनसा में भी जगदम्बा के साथ गृहस्थी है। उनके गृहस्थी में बच्चों के रूप में असुर भी हैं तो देवात्माएँ भी हैं। सबके संग के रंग में आते हुए भी कमल समान न्यारा और प्यारा पार्ट बिताने की यादगार कमल का फूल शंकर के पार्ट का सूचक है।

वो कमल-फूल शंकर वाली आत्मा के लिए ही लागू होता है; क्योंकि बाबा ने मुरली में बोला है कि ऐसी कोई बात नहीं जो तेरे ऊपर लागू न होती हो और सिर्फ कमलफूल जगतपिता (महाकाल) के लिए ही नहीं, नम्बरवार सभी रूद्र माला की आत्माओं के लिए लागू होता है।

● "कमल के फूल को बाल-बच्चे बहुत होते हैं और मिसाल भी उनका ही दिया जाता है। (आदम) बाप को भी बाल-बच्चे तो (5-7 अरब) बहुत हैं। कमल का फूल खुद पानी के ऊपर रहता है। बाकी बाल-बच्चे नीचे रहते हैं। यह मिसाल अच्छा है।" (मु. 28.12.83 पृ.2 आदि) ● "इस मायावी वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कमल फूल बहुत बाल-बच्चों वाला होता है। फिर भी पानी से ऊपर (उपराम) रहता है। वह गृहस्थ है। बहुत चीज़ें पैदा करती है। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए भी है। विकारों से न्यारा होकर रहो।" (मु. 31.1.70 पृ.2 अंत) ● "कमल पुष्प निवृत्ति मार्ग वाला नहीं है। पूरी ही प्रवृत्ति की निशानी है।" (अ.वा. 9.04.73.अ.वा. पृ.21 आदि)

योगबल से विश्व की बादशाही विश्वनाथ शंकर को मिलती है

● " (हिंसक) लड़ाई से कभी सृष्टि की बादशाही मिल न सके। यह वण्डर है ना। इस समय सब आपस में लड़कर खलास हो जाते हैं। मक्खन भा+रत को मिलता है। दिलाने वाली है (पार्वती) वन्देमातरम्। मैज़ॉरिटी माताओं की है।" (मु. 31.12.88 पृ 3 अंत)

दो बिल्ले, आपस में लड़े। मक्खन बीच में तीसरा खा गया

● "रशिया और अमेरिका (अहंकारी और क्रोधी रूपी) दो भाई हैं। इन दोनों के ही कॉम्पीटीशन है बॉम्ब्स आदि बनाने की।... कहानी भी दिखाते हैं दो बिल्ले आपस में लड़े, मक्खन बीच में तीसरा खा गया।" (मु. 22.10.68

पृ.2 आदि, 23.10.74 पृ.2 आदि) ● "योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश।" (मु. 11.2.68 पृ.2 मध्यांत) ● "इनमें रशिया का इनके साथ गिट-2 (खिट-2) है; क्योंकि फ्रांस, इग्लैण्ड और अमेरिका ये फिर भी आपस में मिल जाएँगे। रशिया अलग है।" (मु.रात्रि 6.9.65 पृ.1 आदि) ● "इस समय (पु.संगम में) बाहुबल भी है, योगबल भी है।... यह तो दो क्रिश्चियन आपस में मिलें तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है; परंतु लॉ नहीं है।" (मु. 13.11.72 पृ.2 अंत)

सब आत्माएँ परमधाम वापिस जा रही हैं

बाबा ने तो अंजाम किया हुआ है कि बच्चे, मैं तुम बच्चों को साथ लेकर जाऊँगा। नयनों पर बिठाकर ले जाऊँगा। तो क्या इन स्थूल नैनों के ऊपर बिठाकर ले जाएगा? नैनों पर बिठाकर ले जाने का मतलब क्या हुआ? तीखी दृष्टि की पावर से बच्चों को खींच करके परमधाम ले जाएगा। इसलिए मुरली में बोला कि अन्त में बाबा तुम बच्चों को इतनी तीखी दृष्टि देंगे कि तुम बच्चे अपने देह का भान भूल जावेंगे। तो यह हुआ नैनों पर बिठाकर ले जाना। ● "बाप कहते हैं- अभी मैं तुम बच्चों के पास आया हूँ। नयनों पर बिठाय ले जाता हूँ। यह नयन नहीं, (शंकर का) तीसरा नेत्र।... तुम जानते हो इस समय बाप आये हैं- करोड़ों को साथ ले जावेंगे। शंकर की बारात नहीं, शिव के बच्चों की बरात है। वह पतियों का पति भी है।" (मु. 14.9.67 पृ.2 मध्यांत) यही कारण है कि कल्पवृक्ष के ऊपर शासन कर्ता शंकर को बैठा हुआ दिखाया है।

बाप आते ही हैं सबको वापस ले जाने के लिए। (वैल्यूलैस) मच्छरों सदृश्य सबको ले जाते हैं। सबको कैसी स्टेज में ले जाएँगे? मच्छरों सदृश्य का मतलब, जो अपनी मान-मर्तबे की वैल्यू को मिट्टी में मिला दे। जिनको कोई आस ही न रह जाए कि हम इस पुरानी दुनिया का कोई मान-मर्तबा लें। जब आत्माओं का सुप्रीम बाप आया, उसी को सर्वव्यापी बताय ठिक्कर, भित्तर, मिट्टी-2 में ठोक दिया जब परमात्मा की ही इतनी ग्लानि कर दी, तो हमको क्या मान-मर्तबा लेना। जैसे मच्छरों की कोई वैल्यू नहीं होती है। ढेर-के-ढेर मच्छर उड़ते हैं और ढेर-के-ढेर रोज़ मरते हैं। उनकी कोई वैल्यू नहीं। ऐसे ही आत्मा, आत्मिक स्थिति में जब टिक जाती है, तो वो देह की जो अपनी-2 वैल्यू समझते हैं, वो वैल्यू खत्म हो जाती है। आत्मा की वैल्यू कब होती है? जब I जन्म की नई देह धारण करते हैं तब आत्मा की वैल्यू होती है। अगर देह नहीं, तो कोई वैल्यू नहीं। ये देह-अहंकार है पहले नंबर की बीमारी जो कोई मर्तबा नहीं बनने देता।

माला:-

माला के गुरियों (मणकों) में तुम जो नाम जाप करते हो, हर गुरिये के साथ राम... राम..., वो हर आत्मा रूपी गुरिया है, जो 1 राम बाप के संगठन के सूत्र में परमपिता+परमात्मा आकर बाँधता है। हर धर्म में माला घुमाई

जाती है। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्धी हर धर्म के लोग संगठन की यादगार माला घुमाते हैं। नास्तिक धर्म को छोड़कर कोई ऐसा धर्म नहीं है, जिसमें माला न घुमाई जाती हो। माला, उस सुप्रीम सोल बाप के द्वारा बनवाए हुए मानवीय श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ संगठन की यादगार है। जो हर धर्म में वो माला घुमाई जाती है। माला के जो मणके हैं, हर धर्म की चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के प्रतीक हैं। उन श्रेष्ठ आत्माओं को परमात्मा बाप आकर अभी इस सृष्टि में एकत्रित कर रहे हैं। सारी मनुष्य सृष्टि से यह चुनाव किया जा रहा है। वो माला के मणके तुम बिंदु रूप आत्मा रूपी बच्चों की यादगार है। जिन श्रेष्ठ आत्मा रूपी बच्चों ने नई दुनिया की स्थापना के कार्य में और पुरानी परम्पराओं के विनाश के कार्य में, इस दुनिया के अन्दर सबसे जास्ती सहयोग परमात्मा को दिया है। ● "त्रेता के अंत तक 16,108 की बड़ी माला बनती है।" (मु. 23.5.70 पृ.2 मध्यांत)

माला में दो धागे होते हैं- एक प्रीत का धागा होता है, एक ज्ञान का धागा होता है। ब्रह्मा ने आत्माओं को कौन-से धागे में पिरोया? प्यार के धागे में पिरोया और त्रिनेत्री, जिसको तीसरा नेत्र होता है, उसके पास कौन-सा धागा होता है? ज्ञान का धागा। तो वो ज्ञान के धागे में पिरोता है। दोनों धागे अगर अलग-2 हैं तो माला नहीं बनेगी। दोनों का आपस में मिलकर बैलेंस हो जाए। तो जो पञ्च परमेश्वर के संगठन की यादगार विष्णु देवता है, उसमें दोनों का बैलेंस हो जाता है। शंकर के ज्ञानयुक्त स्ट्रिक्ट पार्ट का और ब्रह्मा के प्यार वाले पार्ट का भी बैलेंस। तो दोनों से काम चलता है। ● "माला तैयार होना अर्थात् खेल खत्म।" (अ.वा.18.1.79 पृ.230 अंत)

चंद्रवंशी और सूर्यवंशी, दोनों के मेल की माला बनती है। चाहे वो माला 8 की हो, चाहे वो माला 108 की हो, चाहे वो माला 1,008 की हो और चाहे 16,108 की हो और चाहे 5-7 अरब की हो; होंगे दोनों देव और दानव या आधे सूर्यवंशी रूद्रगण / बीज पितरगण और आधे विजयमाला के चंद्रवंशी। ● "त्रेता अंत तक इतने प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हैं। कुछ तो निशानी है ना। आठ की भी निशानी है, 108 की भी निशानी है।... फिर वृद्धि होती जाती है। वह सब बनते यहाँ हैं। चान्स अभी बहुत अच्छा है; परन्तु मेहनत बहुत है।" (मु. 25.5.71 पृ.2 मध्यांत)

शिवबाबा जो माला बनवा रहे हैं, यह सारी माला के मणके रूपी रचना, यह किसकी रची हुई है, यह माला के मणके रचने वाला कौन? क्रियेट करने वाला तो एक ही बाप जगत्पिता शंकर/आदम है। वो है सूर्यवंशी-चंद्रवंशियों की माला। 550 करोड़ मनुष्यों की माला भी है। वो 550 करोड़ जो मनुष्य हैं, वो स्वयं पुरुषार्थ नहीं करते। पुरुषार्थहीन हो करके रहने वाली आत्माएँ भी उसमें मिक्स हैं। पढ़ाई पूरी नहीं पढ़ते हैं। वो सज़ाएँ खाकर वापस जाने वाली आत्माओं की माला है। इसलिए वो भी रुद्रमाला में एड किए जाते हैं; क्योंकि अंत में सज़ाएँ खाकर भी हर मनुष्य आत्मा अपनी देह के भान को छोड़ ज्योतिबिन्दु आत्मा, स्टार आत्मा समझने के लिए बाध्य हो जावेंगी; लेकिन जो देरी करने से जितनी सज़ाएँ खाते हैं, उनका जन्म-जन्मांतर का सुख का पार्ट उतना ही कम

हो जाता है। अन्त में सब अपने रचयिता को जान जाते (हैं)। इस सारी सृष्टि में कोई भी मनुष्य आत्मा ऐसी नहीं रहती जो उस क्रियेटर बाप को न पहचाने।

माला में पाण्डवों को नहीं दिखाया है; क्योंकि पाण्डवों की सेना है शक्तियों की सुरक्षा के लिए। इसलिए पाण्डव सेना शब्द बाद में, शिव की शक्ति आगे है। उनमें भी पहले शिव है। जो शक्तियों की सुरक्षा करेंगे वो ही पाण्डव सेना में आवेंगे। शिव-शक्तियों की सुरक्षा नहीं करेंगे, रक्षण की जगह भक्षण करने की व्यर्थ कोशिश करेंगे, तो गेट आऊट। मोस्टली जो पुरुषों ने रक्षा नहीं की इसलिए माला में से गेट आऊट हो गए। जो रक्षण करेंगे, वही पाण्डव सेना में भरती हो जावेंगे।

रुद्रमाला और विजयमाला

ब्रह्मा और सरस्वती की सोल शरीर छोड़ने के बाद, जिन ब्राह्मण बच्चों में प्रवेश करके सम्पन्न पार्ट बजाती हैं, वो ब्राह्मण बच्चे ही दो भागों में/दो ग्रुप्स में अपना कार्य वहन करते हैं। एक रुद्रमाला और दूसरी विजयमाला। रुद्रमाला का विशेष ग्रुप वो होता है, जिसमें ज्यादातर ब्राह्मण आत्माएँ घर-गृहस्थ की मूतपलीती कीचड़ से निकलने वाली होती हैं। वो पावरफुल आत्माएँ हैं; क्योंकि इस कलियुगी दुनियाँ वाली घर-गृहस्थ की कीचड़ में रहकर जो पवित्रता का पुरुषार्थ करे और पास होकर दिखाए और उनके मुकाबले आश्रम के पवित्र वातावरण में रहकर पवित्रता का पुरुषार्थ करे और पास होकर दिखाए, तो दोनों के बीच में प्रबल पुरुषार्थी कौन हुए? ज़रूर घर-गृहस्थ की कीचड़ में रहकर जो विकारों के ऊपर जीत पाने का विशेष प्रयास करते हैं और नं.वार सफल भी होते हैं, वो हैं पावरफुल आत्माएँ। भयंकर परिस्थितियाँ हों, भयंकर वातावरण हो और उस वातावरण के बीच भी अपने को संभाल कर रख सके, जैसे कमल का फूल। कीचड़ में पैदा होने वाला कमल का फूल कैसे भी वातावरण में तोड़कर भी रख दिया जाए, तो भी कई दिन तक ज्यों-का-त्यों रखा रहता है। और गुलाब का फूल? गुलाब का फूल खुशबू तो बहुत देता है; लेकिन अगर उसे तोड़कर ऐसे-वैसे वातावरण में रखा जाता है, तो उसका मुरझाना बहुत जल्दी हो जाता है। तो पावरफुल कौन-सा हुआ? कमल का फूल।

रुद्र शिवबाबा को कहा जाता है। शिव की माला और विष्णु की माला, दोनों में बहुत अंतर है। विजयमाला के मणके दैहिक सुख तो बहुत भोगते हैं; क्योंकि पवित्र आत्माओं की माला है; लेकिन गायन उतना नहीं होता, जितना रुद्रमाला के मणकों का होता है। पूजनीय तो है विजयमाला; लेकिन गायन रुद्रमाला का ज्यादा है। रुद्रमाला भी जब विजयमाला में पिरोई जाती है, तो विजयमाला बन जाती है। इसलिए विष्णु से वो प्राप्ति नहीं है, जो शिव के पार्ट से प्राप्ति है। विष्णु की जो माला है, उसे रुण्ड माला कहा जाता है। शरीर के दो हिस्से हैं, एक मुंड और एक रुण्ड। रुण्ड माना नीचे का हिस्सा-धड़ और मुंड, सिर जिसमें आत्मा रहती है। तो आत्मा मुंड में जहाँ रहती है, वो जैसे कंट्रोल करने का स्थान है। भृकुटी में आत्मा स्वयं भी राजा है। बाप क्या कहते हैं? मेरे राजा

बच्चे, यह नहीं कहते कि मेरी रानी बच्ची। क्यों नहीं कहते? क्योंकि बाप अधिकारी बनाने के लिए आता है। अधीन बनाने वाली रानियों को शिक्षा नहीं देता; लेकिन जन्म-जन्मांतर के जो शारीरिक सुख भोगने के संस्कार हैं, वो B.K वाली रानियाँ ज्यादा भोगती हैं या राजाएँ ज्यादा सुख भोगते हैं? रानियाँ ज्यादा सुख भोगती हैं और राजाएँ 63 जन्मों में तो कितना खून पसीना बहाते रहते हैं। तो शारीरिक सुख भोगेंगे या दुःखी होंगे? मनसा में विजय का सुख फिर रानी को कंट्रोल करते हैं तो नशा भी चढ़ता है; लेकिन शिव की राजयोगियों की माला है, अधिकारियों की माला है, राजाओं की माला है। शिव राजा बनाने के लिए आता है। जो जैसा होगा वो वैसी ही पढ़ाई भी पढ़ाएगा।

रुद्रमाला पहले बनती है; लेकिन विजयमाला में बाद में पिरोई जाती हैं। इसलिए बोला कि तुम बच्चों को विजयमाला का आह्वान करना चाहिए, तो उनके संग के रंग से विकारों पर तुम्हारी भी जीत हो जावेगी।

तो रुद्रमाला का तैयार होने का समय सन् 2027 तक अभी समाप्त होने जा रहा है। रुद्रमाला में जो भी पुरुषार्थी हैं, वो आ चुके हैं। जो थोड़े बहुत रह गए हैं, वो भी आ जाएँगे; क्योंकि एडवांस पार्टी में सिर्फ रुद्रमाला के मणके ही नहीं हैं, विजयमाला के भी हैं। विजयमाला, जो अन्त में आएगी और विकारों पर विजय पहनाय देगी। किनको? रुद्रमाला के मणकों को विजयमाला विजय का हार पहनाएगी। वो विजय पहनाने के निमित्त बनेगी; क्योंकि उनमें जन्म-जन्मांतर के प्योरिटी के संस्कार हैं और राजाओं में जन्म-जन्मांतर के इम्प्योरिटी के संस्कार हैं। इसलिए 63 जन्म खून पसीना बहाकर इतनी मेहनत करने के बावजूद भी वो पुरुषार्थी जीवन में समान पुरुषार्थी फीमेल के बिना पूरा सफल नहीं हो सकते। क्योंकि दुनिया के जितने भी कार्य हैं, वो सारे कार्य <u>पवित्रता</u> से सफल होते हैं।

सुप्रीम सोल बाप का वर्सा है- राजाई। जो असल सूर्यवंशी रुद्रमाला के मणके निराकार शिव बाप के बच्चे हैं, वो राजाई तो पाते हैं; किन्तु असल चंद्रवंशी जो विजयमाला के बच्चे हैं उनके सहयोग बिना राजाई पाने वाले नहीं हैं। वो जन्म-जन्मांतर की भारत की रानियाँ हैं, जिन्होंने पवित्रता के लिए जौहर किए थे। राजाएँ लड़ाई पर जाते थे, विदेशी सेना आक्रमण करती थी, जब देखती थीं कि अब हार होने वाली है, सारा रनिवास और सारी राजाई विदेशियों के कब्ज़े में आने वाली है, तो रानियाँ जौहर कर लेती थीं। उन विदेशियों को अपनी तन मन की पवित्रता की पूंजी टच भी नहीं होने देती थीं। तो यह जन्म-जन्मांतर की प्योरिटी के संस्कार जिन आत्माओं में भरे, उन पवित्र आत्माओं को अपने प्रैक्टिकल जीवन में पहले ज्ञान लेने की दरकार है या जो भारत के राजाएँ जन्म - जन्मांतर अपवित्र बनते रहे, अनेकानेक रानियाँ रखते रहे, उन अपवित्र आत्माओं को पहले ज्ञान लेने की दरकार है? (जरूर कहेंगे अपवित्र आत्माओं को।) जो रुद्रमाला की अपवित्र आत्माएँ हैं, जो बाप के डायरेक्ट बच्चे तो कहे जाते हैं, वो नं.वार जन्म-जन्मांतर के राजाएँ हैं, उनको पहले ज्ञान मिलता है। ज्ञान की गहराइयाँ एडवांस में

मिल जाती है; क्योंकि बहुत मैले कपड़े हैं गंद ज्यादा भरी हुई है, तो ज्ञान-जल भी उसके लिए ज्यादा चाहिए। टाइम भी उसके लिए ज्यादा चाहिए। साफ ही नहीं होता है, कितनी रगड़ करो फिर भी सुधरते नहीं हैं। तो आखरीन में उनको सुधरने के लिए इन कन्याओं - माताओं को ही गुरू बनाना पड़े।

यह भी ज़रूर है कि प्योरिटी की अकेली पावर से कुछ नहीं हो सकता। प्योरिटी के साथ क्या चाहिए? एडवांस ज्ञान भी चाहिए। इसलिए अंधे और लंगड़े की कहानी बना दी है। विषय-वैतरणी नदी कैसे पार की? लंगड़े ने क्या किया? अंधे ने क्या किया? एक-दूसरे का सहयोग ले लिया। तो ये रुद्रमाला के भारत के राजाएँ जन्म-जन्मांतर के लंगड़े हैं, जिनमें अनेक रानियाँ रखने के कारण अपवित्रता की लंगड़ाहट बनी रही। और भारत की रानियों ने क्या किया? उन्होंने जन्म-जन्मांतर प्योरिटी का पालन किया। जौहर किए, विदेशी और विधर्मी राजाओं के हाथ नहीं आई। ऐसी पवित्रता का पालन किया। तो वो है विकारों पर विजयी विजयमाला, जिसका नाम वैजयंती माला है। अन्त में जिन्होंने विकारों पर जीत पा ली। तो इसका मतलब रुद्रमाला के मणकों ने अन्त में विकारों पर जीत नहीं पाई। अगर पाई होती तो विजयमाला में रुद्रमाला के मणकों को बाद में एड नहीं किया जाए। बाबा ने बोला- पहले रुद्रमाला बनती तो है; लेकिन वो रुद्रमाला विकारी होने से पूजी नहीं जाती। वैजयंती माला पूजी जाती है और वैजयंती माला कम्प्लीट बनती ही तब है, जब उसमें रुद्रमाला के मणके एड कर दिए जाएँ; क्योंकि वो है कुकड़ ज्ञानियों की माला। इसीलिए विष्णु माला के युगल मणकों का ही गायन और पूजन है। रुद्रमाला के सिंगल मणकों का पूजन नहीं है, सिर्फ गायन है।

माला (में) लेफ्ट साइड के विदेशी मणके भी हैं, तो राइट साइड के स्वदेशी भी हैं। राइट साइड के असली विजयमाला के दाने हैं और जो लेफ्ट साइड के हैं, वो बाद में पिरोए गए हैं। जो विष्णुमाला है उसमें तो सब राइटियस ही राइटियस होंगे। उसमें लेफ्टिस्ट (उलट) काम करने वाले नहीं होते; लेकिन सिंगल मणकों की माला इनकम्पलीट है फिर भी, जब तक रुद्रमाला के मणके उसमें एड न किए जाएँ; क्योंकि रुद्रमाला में हैं सब दुर्योधन-दुशासनी पुरुष स्वभाव के और यहाँ बनना है विष्णु का प्रवृत्तिमार्ग। तो प्रवृत्तिमार्ग की माला तब ही बनेगी, जब उसमें पुरुष भी हों और स्त्रियाँ भी हों, स्त्री संस्कार की भी आत्माएँ हों। विजयमाला है रानियाँ बनने वालों की माला और रुद्रमाला है राजाओं की माला। ज्यादा पतित कौन बने? राजाएँ। तो उनको लेफ्ट में डालना चाहिए या राइट में? वो ही लेफ्ट में डाले जाते हैं। 500 करोड़ की रुद्रमाला बन जाती है। विष्णुमाला में सब नहीं आवेंगे, जो लायक बनेंगे वो ही आवेंगे। जब तक विष्णुमाला के मणके न बने, तब तक स्वर्ग की राजाई मिल नहीं सकती।

108 श्रेष्ठ आत्माओं की माला

मैं तो ऊँच-ते-ऊँच हूँ, ज़रूर ऊँच-ते-ऊँच में प्रवेश करूँगा। तो मैं आता हूँ, तो इस सृष्टि का जो हीरो पार्टधारी आत्मा है उस हीरो पार्टधारी राम की आत्मा में मुकर्रर रूप से प्रवेश करता हूँ। और भी बच्चों में प्रवेश करता हूँ,

जिनकी यादगार है रुद्राक्ष की माला। रुद्राक्ष के जो मणके होते हैं, उनमें मुख बने हुए होते हैं। यह यादगार है उनका मुख लेने की। कोई में एक मुख, कोई में चार मुख, कोई में दो मुख, किसी में चौदह मुख इसका मतलब है, उन आत्माओं में उतनी आत्माओं ने प्रवेश किया है और आखरीन मैं प्रवेश करके उनको आत्मिक स्वरूप में स्थित कराता हूँ। तो रुद्राक्ष के जो मणके हैं, वो असल रुद्राक्ष की माला 108 मणकों की होती है। माना सृष्टि में 108 श्रेष्ठ आत्माएँ ऐसी हैं जो हर धर्म से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माएँ आखरीन परमात्मा बाप के गले का हार बनती हैं और ऊँच पद पाती हैं। परमात्मा बाप ने जो श्रेष्ठ आत्माओं का संगठन बनाया, उसकी यादगार है रुद्रमाला। हर धर्म में माला सिमरी जाती है। हर धर्म में माला फेरी जाती है। मुसलमान भी माला फेरते हैं, क्रिश्चियन्स भी माला फेरते हैं, बौद्धी भी माला फेरते हैं और हिन्दुओं में तो माला का सिमरण किया ही जाता है। सिमरण करना माना स्मरण करना, याद करना। उन 108 आत्माओं को इतना क्यों याद किया जाता है? ज़रूर उन्होंने परमात्मा के कार्य में, सृष्टि रचना के कार्य में, तामसी सृष्टि के विनाश के कार्य में और नई सृष्टि की पालना के कार्य में भी विशेष सहयोग दिया होगा। तो उन 108 आत्माओं की हर धर्म (में) माला के रूप में यादगार चली आ रही है। निराकारी बाप के वो निराकारी बच्चे रुद्रमाला में मुख के रूप में दिखाए जाते हैं। मुख का मतलब है, उनका मुख ही पवित्र है। बाकी शरीर तो पतित दुनियाँ में पवित्र नहीं हो सकता, जब तक वो रुद्रमाला के मणके विजयमाला में एड नहीं किए जाएँ। जब एड हो जाते हैं तो शरीर भी पवित्र हो जाते हैं।

एक मुख का विरला मणका सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि कोई ऐसी भी मुकर्रर रथ वाली आत्मा है, जिसमें एक सुप्रीम बाप ही प्रवेश करते हैं, कोई दूसरा प्रवेश करके शासित नहीं कर सकता। वो प्रवेश करने वाली शिवबाप की आत्मा उस मुकर्रर रथ के द्वारा इस सारी सृष्टि को दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से पावन बनाने के लिए मुकर्रर हैं।

जो रुद्राक्ष की (108 मणकों की) माला बनती है, उसमें 12-12 के 9 ग्रुप्स हैं माना 9 धर्मों से चुनी हुई 9 प्रकार की आत्माएँ, जो 12-12 के ग्रुप वाली हैं। 12 राशियाँ मानी जाती हैं, ज़रूर उनमें कोई ग्रुप सबसे ऊँचा होगा, इसलिए जगतपिता का वो ग्रुप माला में सबसे ऊपर दाईं ओर का ही है और जगतमाता का ग्रुप बाईं ओर का है। जगतमाता और जगतपिता, दोनों ही रुद्रमाला के सबसे ऊपर वाले पहले दो मणके हैं। दोनों ही श्रेष्ठ हैं। एक पिता के रूप में पार्ट बजाने वाला और एक माता के रूप में पार्ट बजाने वाला; लेकिन है रुद्रमाला। राजाओं की माला है। राजाई के संस्कार हैं। अधीन रहने वाली रानियों के संस्कार उनमें नहीं हैं। उनमें जगतपिता का पहला ग्रुप, उसका जो मुखिया होता है, उसमें सिर्फ बापदादा का ही प्रवेश होता है। माना मुकर्रर रूप से शिव और टेम्परेरी ब्रह्मा की सोल ही उसमें प्रवेश करके कार्य कर सकती हैं रुद्रमाला होती है उसमें सिर्फ मुख दिखाए जाते हैं, धड़ नहीं दिखाए जाते अर्थात् यह शरीर नहीं दिखाया जाता माना लास्ट सम्पन्न स्टेज में उनमें देहभान नहीं रहेगा।

जैसे परमपिता+परमात्मा शिव रूहानी स्टेज वाला है, ऐसे वो बच्चे भी नं.वार रूहानी स्टेज वाले हैं। तो ऐसे रूहानी बच्चे आपस में भाई-2 हैं, वो नं.वार राजाई का वर्सा लेने के हकदार हैं। विजयमाला के बच्चे जो स्त्री स्वभावी हैं; राजाई का वर्सा लेने के हकदार नहीं हैं। वो रानियों का वर्सा ले सकते हैं, राजाई का वर्सा नहीं ले सकते; किन्तु रुद्रमाला के जो मणके हैं वे देह अहंकारी स्थिति वाले हैं, इसीलिए उन्हें कन्याओं-माता के स्वभावी आत्माओं के सामने अपनी देह का अहंकार नाश करने लिए माता गुरु मान नमन तो करना ही पड़े।

एडवांस पार्टी में 3 तरह की आत्माएँ

एक तो, वह जो उमंग-उत्साह भरने वाली आत्माएँ हैं। ब्रह्मा-सरस्वती की सोल भी सेवार्थ बच्चों में प्रवेश करती हैं। सेवा के क्षेत्र में उमंग-उत्साह बढ़ाती, नहीं तो महातामसी बने रूद्रगणों की आत्मा कोई सर्विस नहीं कर सकती। तो वो हुई इन्सपिरेटिग पार्टी। फिर जिन ब्राह्मणों के साकार शरीर में प्रवेश करती हैं जो एडवांस पार्टी में विशेष पार्ट बजाने वाले प्लानिग बुद्धि हैं, वो आत्माएँ ही प्लानिग पार्टी हैं। कैसे-2 स्वर्ग आएगा, कैसे-2 क्या-2 करना पड़ेगा, सारी प्लानिग, सारा नक्शा ही उनकी बुद्धि में ज्ञान के आधार (पर) नं.वार क्लीयर होता रहता है। तीसरी पार्टी है-प्रैक्टिकल पार्टी-विजयमाला। प्लानिग पार्टी रुद्रमाला, उनका मुख रुद्राक्ष रूप में दिखाया जाता है। उन्होंने बुद्धि लगाकर, वाचा की शक्ति से परमात्मा के कार्य में श्रीमत के अनुसार मुख रूपी शंख से सहयोग दिया। तो रुद्रमाला मुख की यादगार बन गई। यह हुई मुंडमाला। जिन्होंने अपना सिर या दिमाग नहीं लगाया। जैसे प्रैक्टिकल मकान बनाने वाले मजदूर होते हैं, वो अपनी शरीर की शक्ति लगाते हैं। ऐसी विजयमाला की जो शक्तियाँ निकलती हैं, वो ईश्वरीय कार्य में अपनी अक्ल नहीं भिड़ाती। क्या करती हैं? आखरीन फाइनली सरेण्डर होने के बाद उनका एक काम है कि जैसे साकारी सो निराकारी बाबा चलाएगा वैसे हम चलेंगे, हम अपनी अक्ल/बुद्धि नहीं लड़ाएँगे। तो उनका यादगार क्या हो गया? रुण्ड माला। माना यह धड़ से सहयोग दिया। सिर से ईश्वरीय कार्य में अपनी बुद्धि नहीं चलाई; किन्तु विष्णु की भुजाओं के रूप में एक की सहयोगी बनी।

अष्ट देवों में दाईं ओर का दूसरे नं. वाला मणका कौन?

जितने भी धर्मवंश हैं, उन धर्मवंशों में सबसे जास्ती प्यूरिटी कौन-से धर्मवंश में है? सूर्यवंश में। सूर्यवंशियों में भी अष्टदेव नंबरवार हैं उनमें भी जो पहला देवता है महादेव शंकर उसकी तो अड़भंगी चाल है। जो मुरली में बोला है कि शंकर का पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम बच्चे भी समझ नहीं सकते। बाप के अंदर के प्यार और बाहर के प्यार की बड़ी भारी युक्ति है। तो बाहर से प्रैक्टिकल जीवन में तो दिखाया गया है विष पीते हैं। तो जिसका प्रैक्टिकल पुरुषार्थी जीवन का काम ही है विष पीना उसे विषयी-विकारी लोग तो निर्विकारी नहीं मानेंगे। पहला नंबर है वो तो सूर्य के समान पार्ट बजाने वाला है। जो भी कचड़ा होता है, गंद फैली हुई होती है, दुर्गंध फैली हुई होती है, मल-

मूत्र होता है सूर्य उसको सुखा देता है, सोख लेता है, समाप्त कर देता है। जैसे भारतीय भक्तिमार्ग की यादगार जीवन में जो साधुओं में एक प्रकार के अघोरी साधु होते हैं। मल-मूत्र खा लेते हैं। लोग उनको कहते हैं ये तो सातवीं भूमिका पर पहुँचे हुए हैं। परन्तु वो तो अंधश्रद्धायुक्त भक्तिमार्ग की बात हो गई; लेकिन है वास्तव में ज्ञानसूर्य की बात कि विषय-विकारों को पीता है; लेकिन उसमें योगबल होने से विषय विकारों का कोई असर नहीं होता है। तो जो पहला नंबर मणका है उसकी तो निराली बात छोड़नी ही पड़े। बाकी जो दायी ओर दूसरा नंबर मणका है, वह दुनिया में जितने भी गरम मिज़ाज की आत्माएँ हैं उनका बीज कहा जाएगा या ठंडे मिज़ाज की आत्माओं का बीज कहा जाएगा? अष्टदेवों में पहला देव है ज्ञानसूर्य वो तो सबका बीज हो गया। क्योंकि रुद्रमाला का दूसरा मणका है ना। बीज कहाँ होंगे? रुद्रमाला में चन्द्रवंशियों का ठंडे-से-ठंडा बीज कौन-सा है? ज़रूर कहेंगे कि जो 8देवों में से दूसरा दाईं ओर का मणका है वो चन्द्रवंशियों का भी बीज है बीज बाप है जो शीतल स्वभाव-संस्कार वाला होगा वो ही प्योरीटी में आगे जाएगा जिसका नाम रखा गया है पूर्वी भारतीय परम्परा में जगन्नाथ की बहन सुभद्रा ऐसे तो सर्वसम्बन्धी युगल अनुसुईया भी दिखाई गई है। यथार्थ में रुद्रमाला के मणके कोई युगल होते नहीं हैं। स्त्री-पुरुष के रूप में भाई-बहन कह सकते हैं। बाकी युगल की तो बात ही नहीं। एक परमपुरुष शिव के बच्चे हैं। तो जो दूसरा मणका है वो चन्द्रवंशियों का बीज है। चन्द्रवंशियों में, ठंडे स्वभाव-संस्कार वालों में जितनी प्योरिटी होती है, इन्द्रियों में जितनी शीतलता होती है उन सबका बीज है। बीज बाप को कहा जाता है। इसीलिए बताया चाहे उसे काशी नगरी कहो, चाहे अनुसुईया कहो, वो प्योरिटी का बाप है; परंतु अकेला बाप पारिवारिक संगठन निर्माण करता है क्या? नहीं। दो चाहिए ही चाहिए।

तो कन्याओं-माताओं के बीच में काम के आधार पर योगिनी जिसका नाम दिया वह योग में अगर तीखी होगी तब ही तो प्यूरिटी में तीखी होगी। नहीं तो रुद्रमाला का मणका है। रुद्रमाला के मणके स्वभाव-संस्कार हैं तो स्वभाव-संस्कार से पुरुष; लेकिन फिर भी उनके बीच में भी अगर सबसे कोई ठंडे स्वभाव वाली ब्राह्मणी है तो वो एक है, जिसका नाम अनुसुईया दिया गया है। और जो अनुसुईया नाम दिया गया है वह नाम काम के आधार पर ही दिया हुआ है। अनुसुईया कहते हैं जिसमें ईर्ष्या-द्वेष न हो। जितनी अपवित्र आत्मा होगी उतना दूसरों के प्रति ईर्ष्या द्वेष भरा हुआ होगा और जितना पवित्र आत्मा होगी कोई के प्रति ईर्ष्या-द्वेष नहीं हो सकता।

ता. 31.10.2006 की अव्यक्त वाणी के पृ.3 के आदि में अव्यक्त बापदादा ने कहा है ● "सिर्फ 2 नंबर आउट हुए हैं, बाप और माँ। अभी कोई भी भाई-बहन का तीसरा नंबर आउट नहीं हुआ है।" 25.11.95 पृ.40 मध्य की अ.वाणी में तो बापदादा ने बता दिया था कि "कोई सीट फिक्स नहीं हुई है। सिवाय ब्रह्मा बाप और जगदम्बा के और सब सीट खाली हैं।" फिर अलग से 2006 की वाणी में बापदादा ने क्यों बोला कि सिर्फ 2 नंबर आउट हुए हैं, बाप और माँ? ज़रूर वो कोई रुद्रमाला का दूसरा मणका स्त्री चोला है, काशी नगरी के रूप में माना

जाता है, वो स्त्री चोला ही रूद्रमाला की यूनिटी बनाने में फाउंडर है। प्योरिटी के आधार पर ही रुद्रमाला की यूनिटी भी तैयार होती है। जो रूद्रमाला की फाउंडेशन वाली यूनिटी बनाने में न लक्ष्मी सफल होती है, न जगदम्बा सफल होती है। रुद्रमाला का वह मणका ही सफल होता है; लेकिन वो यूनिटी प्रत्यक्ष दिखाई भी पड़ती है, भले इन+डोर वाले पर्दे के अन्दर रहती है। इसलिए दुनिया में उसी समय से देखा होगा कि जितनी भी बिल्डिगें बनती हैं, उनको चारों तरफ से पर्दा लगाकर सुरक्षित कर देते हैं (जिससे) कोई की आँख न लगे। जैसे फाउंडेशन ज़मीन के अन्दर खोदकर डाला जाता है। बाहर से दिखाई नहीं पड़ता।

फुटकर प्वॉइण्ट्स

● "जो जिस धर्म के हैं, वह अपने धर्म स्थापक को याद करते हैं।" (मु. 20.4.71 पृ.1 मध्य)

● "वास्तव में भारत का प्राचीन धर्म तो है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। हिन्दू तो धर्म ही नहीं। सबसे ऊँच है देवी-देवता धर्म। अब कायदा कहता है सबसे ऊँच-ते-ऊँच धर्म वाले को (विश्व की बादशाही की) गद्दी पर बिठाना चाहिए।" (मु. 24.12.78 पृ.1 मध्य)

● "अब देवता धर्म की स्थापना कर रहे हो। तुम ही बता सकते हो- भारत का जो मुख्य धर्म है जो सब धर्मों का माई बाप है- उनके हेड को इस कॉनफ्रेन्स में मुख्य बनाना चाहिए। गद्दी नशीन उनको करना चाहिए। बाकी तो सब हैं उनके नीचे।" (मु. 24.12.78 पृ.1 मध्य)

बाबा कल्प वृक्ष में जैनियों का उल्लेख नहीं करते हैं; जैन धर्म कहा जाता है जित् शब्द के आधार पर। जित् माना जीतना। जीतने वाले को कहा जाता है जिन और जिनको जिन्होंने फॉलो किया वो कहे जाते हैं जैन। जैसे ब्रह्मा को फॉलो करने वाले ब्राह्मण, एक मात्रा बढ़ गई। शिव को फॉलो करने वाले शैव, एक मात्रा बढ़ गई। विष्णु को फॉलो करने वाले वैष्णव, एक मात्रा बढ़ गई। ऐसे ही जिन को फॉलो करने वाले जैन कहे जाते हैं और जैन का मतलब ही होता है जिन्होंने इन्द्रियों को जीत लिया उसको फॉलो करने वाले। जैन धर्म कोई दूसरा धर्म है ही नहीं। देवी-देवता सनातन धर्म का ही दूसरा नाम है जैन। देवताओं ने जीत लिया या वास्तव में जैनियों ने जीता? जैनियों ने तो नाम रख लिया है जैन। वास्तव में नं.वार देवताएँ जो थे, वही असली जिन थे। इसलिए झाड़ के चित्र में अलग से जैन धर्म नहीं दिखाया गया। अलग से जैन धर्म दिखाने की दरकार भी नहीं है।

प्रवृत्ति च निवृत्ति च कार्याकार्ये भयाभये।

बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥ 18/30

हे पृथ्वीपति! जो बुद्धि कर्मों में लगने और उनसे उपराम होने की क्रिया को, करने योग्य और न करने योग्य को, भय और निर्भयता को तथा दुःखों के बंधन और उनसे मुक्ति को भी जानती है- वह सत्वगुणी बुद्धि है।

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ 18/31

हे पृथ्वीपति! जिस बुद्धि से मनुष्य गुणों की धारणा रूप धर्म और उससे विपरीत अधर्म को और करने योग्य कर्तव्य या अकर्तव्य को भी गलत ढंग से जान पाती है, वह (द्वैतवादी द्वापर की) राजसी बुद्धि है।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ 18/32

हे पृथ्वीपति अर्जुन! तमोगुण से ढकी हुई जो बुद्धि अधर्म को धर्म तथा सब अर्थों को उल्टा ही मानती है, वह कलियुगी तमोगुणी बुद्धि है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ 4/7

हे भरतवंशी! जब-2 (कलियुग के अन्त में) सत् धर्म की हानि और (इस्लामी-बौद्धी-क्रिश्चियनादि) अधर्म की वृद्धि होती है, तब ही मैं स्वयं जन्म लेता हूँ। [जैन और वैदिक सृष्टि प्रक्रिया के अनुसार, पापी कलियुग-अंत में ही धर्म की सम्पूर्ण ग्लानि होती है।]

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे ॥ 4/8

मैं साधु-सन्तों की रक्षा के लिए, दुराचारियों के विनाश के लिए और सत् धर्म की संपूर्ण स्थापना के लिए दो युगों (कलियुग और सतयुग) के संधिकाल में जन्म लेता हूँ।

● "बाप कहते हैं मैं आकर धर्म की स्थापना अधर्मों का विनाश करता हूँ। अधर्मियों को धर्म में ले आता हूँ। बाकी जो बचते हैं वह विनाश हो जावेंगे।" (मु. 6.9.<u>68</u> पृ.3 अंत) ● "यह भारत भगवान की जन्मभूमि है। जैसे इब्राहीम, बौद्ध आदि की (पूर्वी एशिया-अरब आदि) अपनी-2 जन्मभूमि है।" (मु. 16.9.73 पृ.3 अंत) ● "धर्म शास्त्र उनको कहा जाता जब धर्म स्थापक ने जो समझाया उनका शास्त्र बनाया। धर्म स्थापन करने वाले के नाम पर शास्त्र बना।" (मु. 24.6.<u>65</u> पृ.2 आदि) ● "संन्यासियों का कोई शास्त्र है नहीं। धर्म का शास्त्र एक होता है। देवी देवता धर्म का शास्त्र गीता है। (सदाशिव ज्योति सुप्रीम) बाप ने जिस नॉलेज से धर्म स्थापन किया, उसको धर्म का शास्त्र कहा जाता है।" (मु. 16.7.73 पृ.3 मध्य)

'सर्वधर्मांन परीत्यज।' सब देह के धर्मों को त्याग दो। जो भी देह के धर्म हैं मैं मुसलमान हूँ, मैं हिंदू हूँ, मैं ये हूँ। ये सब भूलकर अपने को (ज्योतिबिंदु) आत्मा निश्चय कर बाप (ज्योतिबिंदु शिव) को याद करो।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ 18/66

(मठ-पंथ सम्प्रदायादि दैहिक दिखावे वाले हिन्दू-मुस्लिमादि) सब धर्मों को परित्याग करके एक मुझ (निराकार स्टेज वाले) शिव-शंकर की शरण में जा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा। तू शोक मत कर। [जैसे सभी धर्मपिताओं के चेहरे निराकारी-रूहानी स्थिति वाले हैं, वैसे शिव-शंकर महादेव 100% निराकार है]

ॐ शांति

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025